नया चीन

लेखक- श्री हुकमराज मेहता
भूमिका लेखक- श्री मातादीन भगेरिया,
सम्पादक, "नवभारत टाइम्स" दैनिक
(दिल्ली, कलकत्ता बम्बई)

प्रकाशक
राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर (राजस्थान)

मूल्य अढ़ाई रुपया

समर्पण

अपने मित्र

श्री जनुभाई, श्री अमृतलाल वैद्य और शंकरजी

को

जिनके जीवन के प्रति अलग २

दृष्टिकोण है

पर जो

नये चीन के प्रभाव से बच नहीं सकते।

भूमिका

मेरी भूमिका 'नया चीन' की क्रान्ति-कहानी का पायन्दाज बन सके तो धन्य भाग। हिमालय गिरिमाला के उस-पार जो आश्चर्य दुनियां की चार ताकतों में से एक बन गया है, उसे देखूँ कि उस महा निर्माण के शिल्प-कौशल को देखूँ ? गाँव के खेतों की मामूली मिट्टी कुशल कुम्हार के कलाकार हाथों से क्रान्ति के तेजस्वी चाक पर चढ़कर किस तरह फौलाद के कड़े बर्त्तनों में बदल जाती है, इस कहानी की तस्वीर मानव-इतिहास की दृष्टि से साधारण चीज नहीं। भारत की पौराणिक गाथाओं के पृष्ठ ऋषि दधीचि की हड्डियों से बने हुये इन्द्र के एक वज्र की चमक से भरे पड़े हैं। किन्तु सनयात सेन और माओ जे तुंग के चीन में लाखों जवानों की हड्डियों से लाखों हथियार बने होंगे, जो एटम बमों को पराजित करने का हौसला रखते हैं। माओ के चीन ने एक बार फिर आदमी नाम के कुदरत के सब से आला परीक्षण को ताकत की सबसे ऊँची कुर्सी पर ला-बिठाया है। १८ वीं और १९ वीं सदी ने विज्ञान के भड़कीले और खौफनाक चित्रों की कतार खड़ी करके दुनियां की आबादी के बहुमत को भौंचक्का कर दिया। बम, कीटाणु बम तरह तरह

के उड़ते किले, समुद्री जहाजों के जंगी बेड़े, टैंक, मशीनगन और भिन्न भिन्न प्रकार के हथियार तथा उनको ढ़ोने वाली सवारियों के मौत फैलाने वाले सर्कसों की धूम मच गई। इस अन्धेरे की काली किले बन्दी का धूआंधार प्रचार किया गया। प्रोपेगेंडा में अरबों रुपया खर्च करके एक अरब से ज्यादे जन-संख्या वाले इन्सानों के घने जंगल एशिया को रात-दिन समझाया गया कि "हमारे मौत कातने वाले चर्खों को देख कर डरे रहो-गुलाम बने रहो, वर्ना विज्ञान की घानी में पेल दिये जाओगे। हमारे लिये चक्की पीसते रहने को अपनी खुश किस्मत समझे जाओ।" एशिया की २ अरब से ज्यादे मस्त आंखो ने इस सपने के माया लोक को सच्चा समझ लिया।

दो महायुद्ध हुये। लेकिन आज के संसार की तानाशाही ने इन दोनों महायुद्धों के दिल की कली में छिपी सत्य की उस चमकीली चिन्गारी को पूरी तरह नहीं देखा जो कहना चाहती है कि दोनों लड़ाइयों में जीत आदमी की हुई है और विज्ञान का भूत हारा है और दूसरी बार तो इतनी बुरी तरह हारा है कि ताज्जुब हो। युरोप का नाजी जर्मनी युरोप की निगाह से विज्ञान के सबसे ज्यादे खतरनाक हथियारों से पूरी तरह लैस था। एशिया का जापान एशिया में वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रों से सर्वाधिक सुसज्जित था। लेकिन आज कहां है वे हिटलर, तोजो और मुसोलिनी? कहां गई वह वैज्ञानिक मोर्चाबन्दी जो तीन लोक में साम्राज्य स्थापित करने की महत्वकांक्षा रखती? कहां ढह गये वे सुवर्ण-स्वप्नों के गगन-चुम्बी दुर्ग? दंभ और और अभिमान की वे वैज्ञानिक प्राचीरें धूल में क्यों मिल गई? और सब कारणों के अलावा सबसे बड़ी वजह यह है कि दुनियां की आबादी का बहुमत इस तानाशाही के खिलाफ था—

इसलिये हिटलर-तोजो के प्रचंड हथियारों को इन्सानी समुद्र की उत्ताल तरंगों ने झटका देकर बहादिया।

जब दूसरे महायुद्ध में विश्व का बहुमत विजय का अंतिम परिच्छेद लिख रहा था, अमरीका नाम की एक नई वैज्ञानिक ताकत ने हिरोशिमा और नागाशाकी के लाखों जिन्दा इन्सानों को विज्ञान का एक नया वज्र चलाकर भून डाला। यह नृशंस हत्या-कांड एशिया की जमीन पर क्यों किया गया? क्या इसलिये कि पश्चिम अभी एशिया की दो अरब आंखों को विज्ञान की आखरी चकाचौन्ध से आतंकित, भयभीत और परावलम्बी रखना ही चाहता था? क्या इसलिये कि करोड़ों इन्सान नामके दरख्तों से भरे चीन और भारत जैसे महावन अभी पश्चिमी शिकारियों के खुश्नुमा शिकारगाह बने ही रहें?

किन्तु माओ के चीन ने वैज्ञानिक तुरूप के इस आखरी इक्के को खुली चुनौती देदी है। अमरीका के ट्रूमैन ने विज्ञान के अन्तिम ऐन्द्रजालिक वज्र की धमकी दे डाली। एशिया की गरीबी को अरबों खरबों डालर के आंकड़ों की भयंकर तालिका से डराया गया। ब्रिटेन का एटली भागकर अमरीका पहुंचा। जानबुल बोला— "चाचा शाम! अभी रुको। जरा मेरे मदारीपन की बानगी देखो। तुम्हारे खौफ के हौवे को मेरी अभिनय-चातुरी ज्यादे रंग देगी। ऐसा न हो कि हौवा म्यान से निकल पड़े और नतीजा उल्टा हो। तुम्हारी प्रतिष्ठा और शान की जिम्मेदारी मेरे जिम्मे। कौटिल्य का पुराना तजुर्बेकार हूं मैं।" एटली वापिस घर आया। कोमनवेल्थ का नाटक हुआ। हिन्दुस्तान का जवाहरलाल नये इन्सान को पहिचानने लगगया था। काश्मीर का 'बाइनोकूलर' उसकी आँखों पर चढ़ न सका। रूस का स्टालिन और उसका साथी चीन का माओ

राजनैतिक कौटिल्य के इस १६ वीं सदी के लायक बच्चों जैसे खेल पर हंस रहे थे। उनकी अक्ल का तराजू ताकत और कमजोरी दोनों जिन्सों को सही वजनों से तौल चुका था। राज-हंस समझ चुके थे कि इस दूध में ८० फी सदी पानी मिला हुआ है। लेकिन उनका मानव-प्रेम इतना खतरा भी नहीं लेना चाहता कि कौटिल्य की अंगीठी में लापरवाही का इतना ज्यादा कोयला जलाया जाय कि पश्चिमी ताकतों का यह बीस फीसदी दूध ज्यादे आंच पाकर उफन उठे और तीसरी लड़ाई की विभी-षिका इन्सानियत के बागों पर टूट पड़े। वे नहीं चाहते कि धागा जरुरत से ज्यादे खींचा जाय।

हम कह चुके हैं कि एशिया कि पहाड़ी चोटियों पर माओ-जे तुंग, चूनेह और चाऊ एन लाई ने एक तेज चिराग जलाया है जिसका नाम है इन्सानी ताकत और जिसका तेल है आजाद रहने के लौह-संकल्प का जौहर। इस महा क्रान्ति की सही कीमत अरबों इन्सानों की अगली पीढ़ी ठीक से आंक सकेगी। छोटे से कोरिया ने अमरीकी विज्ञान की सैकार्थरी तोपों के मुंह खेतों की मिट्टी से बन्द कर दिये। विश्व-इतिहास की बहुत बड़ी घट-नाएं पिछले कुछ वर्षों में घटी है। गांधी के भारत ने मानव-शक्ति का एक सैद्धान्तिक नक़शा बनाया। है। लगता है मानो माओ के चीन ने उसमें प्राण भरदिये—युग-चेतना का एक ताजमहल खड़ा कर लिया कि तुम्हारे मुर्दा एटम बम ५० करोड़ जिन्दा इन्सानों की दीवार को कभी नहीं तोड़ सकते। चीन ने आदमी की ताकत के महावेग वाले झरने खोलदिये—मानव-प्रवाहिणी के महा प्रवाह ने गुलामी के बान्धों को पूरी तरह तोड़ डाला—चैतन्य के तेज ने अपने सिंह द्वार पूरे खोल दिये। नया चीन मानव इतिहास की एक असाधारण

घटना है जो पूरे एशिया को नहीं बल्कि समस्त संसार की नई चेतना नई स्फूर्ति और प्रेरणा देगी।

इस युग-चेतना के जलते हुये अंगारों की कहानी को इस किताब में बान्धने का नम्र आयास किया गया है। १७ वीं, १८ वीं और १६ वीं सदी में जो हिन्दुस्तान में हुआ वही चीन में हुआ। फर्क इतना रहा कि हिन्द की रौनक का लुटेरा एक था और चीन की जिन्दगी के चमन में डाकुओं की पूरी जमात जुट गई। पुर्तगाली, डच, फ्रांन्सीसी, अंग्रेज, जर्मन और बाद में अमरीकी और जापानी चीन के चमन में तिजारत के बहाने डाकेजनी के मोर्चे और ठगी के जाल फैलाने में लगे थे। युरोप की पहली दुकान केंटन में लगी। पुर्तगाल ने चीन को तम्बाकू का तोहफा दिया और डचों ने अफीम का। चीन की जिन्दगी और नैतिकता को अफीम का नशीला जहर गाफिल करने में लगगया। मंचू सम्राट ने इस शैतानी व्यसन की खिड़कियों पर ताले लगाने की कोशिश की। फौरन ब्रिटिश संपत्ति और प्राणों की रक्षा के बहाने ब्रिटिश जहाजी बेड़ा कायर मंचुओं के प्रतिरोध को कुचलते हुये केंटन तक पहुंच गया। नानकिंग की सन्धि से चीन की सार्वभौमता, अखंडता और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पर जो प्रहार हुआ वह उत्तरोत्तर आगे बढ़ता गया। फ्रान्स, अमरीका और ब्रिटेन अलग २ चीन के मालिक बन चले। लूट की इस दावत में जापान जरा देर से पहुंचा। ईसाइयत का का प्रचार, गिरजाघरों के लिये जमीनों की सर्वत्र खुली छूट और गिरमिटिया मजदूरों की भर्ती आदि जनता को सभ्यता सिखाने के सब काम तेजी से आगे बढ़ चले।

ताइपिंग विद्रोह चीनी जनता का पहला सबसे बड़ा विद्रोह था। बागी सैनिकों ने सन् १८५३ में नानकिंग को फतह करके

अपनी राजधानी बनाया। वे पेकिंग और संघाई के द्वार तक पहुंच चुके थे, किन्तु उन्हें मंचू राज्य और साम्राज्यवादियों की संयुक्त ताकत के आगे पराजित होना पड़ा। लगभग इन्हीं दिनों भारत में सन् १८५७ का सिपाही-विद्रोह हुआ था। पश्चिमी लुटेरों ने तटस्थता का स्वांग छोड़कर ताइपिंग विप्लव को कुचलने में सेनापतियों और हथियारों की खुली मदद की। उस वक्त का मैकार्थर जनरल गार्डन था। उस गृह-युद्ध की भीषण ज्वालाओं ने लगभग दो करोड़ चीनियों का बलिदान लिया। अब लूट के लिये चीन को बांट लिया गया। जर्मनी के लिये शान्टुंग, जापान और जारशाही रूस के लिये मंचूरिया, अंग्रेजों के लिये यांगसी घाटी और केन्टन का पिछवाड़ा तथा फ्रान्स के लिये दक्षिण के चारों प्रान्त शिकारगाह तै हुये। भोले मजदूर, सस्ती मजदूरी, सस्ता कच्चा माल और डरपोक शासन पूंजीवादी लूट का पलंग इन चारों पायों पर बिछा दिया गया। अमरीका चीनी बाजार नामके लूट-गाह में जरा देर बाद आया। उसने 'खुला द्वार और समान अवसर' नामकी नई नीति को प्रोत्साहन दिया। याने पूरे चीनी राष्ट्र की रखैल का सब विदेशी समान रूप से उपभोग करते रहें। बाक्सर विद्रोह हुआ, उसे भी कुचल दिया गया।

उन्नत युरोप नृशंसता पूर्वक चीन को दूहने में व्यस्त था कि १६११ की प्रथम क्रान्ति का विस्फोट हो चला। ४० करोड़ लोगों ने मंचू गुलामी की प्रतीक अपनी लंबी चोटियों को सरे आम कटवा डाला। जनतन्त्र की घोषणा हुई और डॉ० सनयात स्यन को बुलाकर अध्यक्ष बनाया गया। किन्तु चीन और भारत में कभी मीरजाफरों की कमी नहीं रही। युआन-शी-काई नामके गद्दार को डा० स्यन की सरलता ने अपने हाथों

प्रेसीडेंट बनाया। सत्ता पर कब्जा करके इस साम्राज्यवादियों के पालतू कुत्ते ने बेरहमी से प्रगति का दमन करने में शासन की शक्ति लगादी। इसके बाद पहला महायुद्ध फट पड़ा। और इसके बाद संसार के इतिहास का वह सबसे ज्यादा शानदार अध्याय लिखा गया, जो रूस की अक्तूबर क्रान्ति के नाम से दुनियां को तबतक प्रकाश-पथ दिखाता रहेगा जब तक कि निखिल जगत का जन-साधारण अपने भाग्य का स्वयं पूर्ण स्वामी नहीं होजाता।

सन् १९२० में माओजे तुंग ने चीन की महान् क्रान्ति का पहला पत्थर चांगसा के मजदूरों का संगठन करके नये जनवादी अभ्युदय की बुनियाद में रखा। इस नये प्रभामंडल की किरणें प्रतिक्षण आगे बढ़ती गईं। कुओमितांग के नेतृत्व में १९२६ में केन्टन से रवाना होने वाली क्रान्ति-वाहिनी चांगसा के द्वारतक पहुंच गई। एक वर्ष के भीतर आधे चीन पर राष्ट्रीय सेना की विजय-पताका फहराने लग गई। २८ वर्ष की उम्र के क्रान्तिकारी तरुण चाऊ-एन-लाई ने चुपके से शंघाई में प्रवेश-करके ६ लाख मजदूरों की हड़ताल करादी और सशस्त्र मजदूर बेरीकेड खड़े करके बहुत जल्दी दुनिया के चौथे बड़े शहर शंघाई पर कब्जा करके 'नागरिकों की सरकार' का ऐलान कर दिया। थोड़े दिन बाद ही मजदूर और जनता ने पूरे विश्वास और उत्साह के साथ च्यांगकाई शेक को शंघाई का अधिकार सौंप दिया, किसने सोचा था कि चीन-क्रान्ति की चन्द्रज्योत्सना के लिये यही देश द्रोही सबसे बड़ा राहु साबित होगा। यह जयचन्द उभरती हुई क्रान्ति का लोक प्रिय सैनिक नेता बन कर विदेशी साजिशों के साथ मिल गया। साम्राज्यवादी लुटेरों के लिये च्यांग से ज्यादा योग्य, शक्तिशाली और वफादार साथी कौन

हो सकता था। वह सनयात सेन का पट्ट शिष्य और राष्ट्रीय क्रान्ति के उत्तरी अभियान का सफल सेनानी था। पश्चिमी ताकतों ने च्यांग के व्यक्तित्व में सर्वांग सुन्दर साथी प्राप्त कर लिया।

पश्चिमी षड्यन्त्रों के भाग्य हीन साझीदार च्यांग के नेतृत्व में प्रतिक्रिया का भयावह बवंडर पूरे चीन की ज्योति-दीपावली को बुझाने में लग गया। एक बार लगा कि सफलता प्रतिगामी कुहासे के पास चली गई। ऐसा भीषण दमन कि जिसे देखकर कल्पना थर्रा उठे, शैतान का काला कलेजा दहल उठे और निष्ठुरता की आंखें शर्म से झुक जांय, जाग्रत चीन की छाती पर रात-दिन ठंडी आरी की तरह चला। लाठी, गोली, जेल, फांसी, संपत्ति की जब्ती, बलात्कार और हत्या कुओमितांग शासन के मामूली खेल थे। भ्रष्टाचार और रिश्वत उस शासन पद्धति का स्वभाव था। वामपन्थी युवकों और युवतियों के मर्म-स्थानों को चाकू, बांस, तेजाब और जलते हुये लोहे से छीला जाता था। कुछ समय के लिये लगा कि अन्धेरे की घोर घटाने समस्त प्रकाश पर कब्जा पा लिया। ५० करोड़ के चीनी राष्ट्र में कम्युनिस्ट सदस्यता सिर्फ दस हजार रह गई। चीन के पवित्र स्वप्नों के पृष्ठ लहू लुहान होगये। मातृ भूमि के जीवन-प्रदीप में कम्युनिस्ट जवानों के बुझते हुये अरमानों का तेल लगता था कि जल चुका। चीनी नीलाम्बर के तारे दमन के शर्द तूफान से कुम्हला रहे थे। जन-वन के वृक्ष-लता फूलने-फलने की आशा छोड़ चुके थे। कवि और कलाकार उस अमावस्या को अनन्त समझने लगे थे।

किन्तु इस अपरिचित निराशा के घोर अन्धेरे में, धैर्य के टुकड़े टुकड़े कर देने वाले और जिन्दगी के पानी को बर्फ बना

देने वाले बुरे समाचारों के तूफान में, साहस की कमर तोड़ देने वाले दमन के तपते हुये रेगिस्तान की अनन्त बालू पर तथा यन्त्रणाओं के धधकते हुये शोलों के ढेर पर बैठा हुआ एक फौलाद का आदमी अब भी हरी भरी कल्पनाओं का गुलदस्ता गूंथने में लगा था। हूनान प्रान्त के शाओशान गांव का रहने वाला वह पागल किसान युवक गगन में घटाटोप के नीचे बैठा अरुणोदय की पंक्तियां गुनगुना रहा था। कहता था—'नये चीन का बसन्त इस निस्सीम दिखाई देने वाले पतझड़ की जड़ों में छिपा बैठा है।' कहता था—'इस घटाटोप के बादलों में क्रान्ति—बिजली की कटार के धमाके लगे कि इन हाथियों के झुंड ने चिग्घाड़ना और इसके बाद पिघलना शुरु किया। और निपुण क्रान्तिकारियों के रुखड़े पत्थर जैसे कड़े हाथ उस पानी को प्यासे खेतों में फैला देंगे। इसके बाद उगने वाले अंकुरों की बेशुमार कोपले रेगिस्तान की छाती को चीर कर मखमल जैसी हरियाली से ढँक देंगी।' उसने अंगारों के गीत गाये और प्राणों के दीप संजोये। सत्तारुढ़ गद्दारों का दर्प उस नई स्वर लहरी पर अट्टहास कर रहा था। उसने हारे हुये दिलों को बताया कि राष्ट्र की सल्तनत और उसके मालिक दोनों का नाम जानता है। उसने चाकुओं, लाठियों, छोटी २ बन्दूकों और निहत्थे हाथों के वज्र-संकल्प को मशीनगनों, हवाई जहाजों और बमों का निश्चित विजेता घोषित किया। उसने बताया कि इन तोपों और मशीनगनों को चलाने वाले हाथ अमीर-उमरावों, राज-कुमार-सामन्तों और तानाशाहों के नहीं है। वे हमारे ही जैसे उन भाइयों के हाथ हैं जो सत्ता के जाल में उलझ कर अपनी गरीबी की बेबसी को बेच रहे हैं। वे किराये के हाथ खेतिहर और मजदूर के लोक मंडल का अभ्र भेदी महा घोष सुन कर कांप उठेंगे। विश्वास मानो अन्धेरा हारेगा। अमरीका और जापान

के कारखानों में बने हुये विज्ञान के ये सुन्दर हथियार हमारी मिल्कियत है।" सवेरे का उज्ज्वल सन्देश देने वाले क्रांति के उस महान कलाकार का नाम है माओत्सेतुंग।

देखते देखते लौह निष्ठा वाले साथियों का गिरोह जमा होने लग गया। चूतेह, चाऊएन-लाई, होलूंग, येहतिंग जैसे क्रांति के सेनानियों ने आशा के द्वार खोलदिये। एशिया की जमीन पर आस्मान का जो आश्चर्य उतरा उसने संसार को स्तंभित कर दिया। चीन में जो हुआ वह हथियार, डालर, विज्ञान और मायावी अन्धेरे के हारने की लम्बी दास्तान है। वह देशभक्ति, बलिदान, प्रेम और पावन सहयोग के मधुर मानवी गुणों के जलते हुये अंगारों के विजय-अभियान की गौरवमयी गाथा है। चीन की भूमि पर जिन्दगी का मशाल जलाकर उजेला करने वाले क्रांति वाहकों ने जो कुछ किया उस वरेण्य प्रभा-मण्डल की शान के सामने बलिदान, शौर्य, त्याग और समर्पण जैसे शब्द छोटे पड़ जाते हैं। एक एक इन्च जमीन पर लाखों ल्युनीडास और थर्मोपली के युद्ध लड़े गये। कदम कदम पर हजारों हल्दीघाटी के शाके हुये। जौहर जैसे क्रांति-वाहिनी का स्वभाव बनगया। माओ को कुचलने के लिये पश्चिम की डालरशाही और दूसरी ताकतों ने जो कुछ उनके पास था वह सब दोनों हाथों गद्दार च्यांग की झोली में डाला। डालरों के पहाड़ और हथियारों की बौछाड़। मरने वाले सिपाही पश्चिम के पास हैं नहीं। कठमुल्लों ने कहा माओ की पीठपर रूस के हथियार हैं। किन्तु शैतान की मुर्दा कीमतों में विश्वास करने वाले उन हृदय हीन बर्बरों-दो पैर के पशुओं को यह पता नहीं कि लेनिन का रूस जिन हथियारों की सप्लाई करता है वे मानवता के सांस्कृतिक कारनामों में ढलते हैं।

लेनिन, कार्लमार्क्स और स्टालिन के दिव्य कारखानों में ढले हुये वे अणु-बम और उड़ते किले अमर आलोक की किरण झालरों पर बैठे मलय-वायु के मोहक झकोरों के रास्ते रात-दिन दिग्दिगान्त की पीड़ित मानवता को सप्लाई किये जा रहे हैं। लेनिन और मार्क्स के सामन्ती और पूंजीवादी किलेबन्दी को फूस के झोपड़ों की तरह जला ने वाले वे अग्नि-कण माओ और चूतेह जैसे व्यक्तियों के हृदयों की स्वर्गीय फौलाद से बनी दुर्ग-पक्ति मे वे क्रांति-स्फुलिंग जमकर बैठ जाते हैं और विजय ध्वज फहराने से पहले वे न बुझते हैं और न फीके पड़ते है। रामायण के राम की तरह वे निहत्थे बानरों में त्रिभुवनजयी रावणों की मायापुरियों के सुवर्ण-गढ़ों को मिट्टी में मिलाने का हौसला भरदेते हैं। संस्कृति, स्नेह, सहानुभूति, मानव-संवेदन और प्रेम के उन आभावाले नगीनों का मूल्य ट्रूमैन-मैकार्थरों की भाषा समझ नहीं सकती।

आज माओ का चीन एशिया की जागरण-बेला का ज्योतिर्मय प्रकाश-स्तंभ बनगया है। एशिया के मानव-धन की जीवित पूंजी के लिये आशा की हरियाली और साहस की दीपमाला से सजा प्रेरणा का महाश्रोत खुलगया है। वह बहा आरहा है-चढ़ा आरहा है। उस प्रवहमान वेग को पूंजीवादी सामन्तों की दीवारें, अणुबम की धमकियां, खरबों डालरों का अंकगणित और झूठी कुटिलता के दलदल से रोका नहीं जासकता। किम-इरसयन और होचिमिन्हों की नई नई क्रान्ति धारा एशिया की उस क्रान्ति-प्रवाहिणी में घुल-मिल कर अपने प्राणों का द्वैत खोती जारही हैं। फारमोसा में रैन-बसेरा करते हुये एशियाई मीरजाफरों के घृणित कान गुलामी की अफीम के नशे में अभी तक विजय-घंटिया सुन रहे हैं। बाओदाई और सिंगमनरी

जैसे विश्वासघाती गद्दार अपनी मातृभूमि के गौरव को विदेशी आक्रान्ताओं से ध्वस्त कराने में व्यस्त हैं। फिलीपीन, जापान, मलाया और फारमोसा में डालरशाही मैकार्थर तबाही की वर्षा कर रहे हैं। लेकिन माओ का चीन सहस्त्राब्दों से शोषित करोड़ों के न्याय को राज-सिंहासन पर प्रतिष्ठित करने में लगा है। वह कहताकि है किसान और मजदूर के पसीनें का नाम रत्नाकर है और प्रशान्त महासागर की लहरों पर एक अरब मनुष्यों का शान्ति-स्वर्ग रचा जावेगा। वह कहता है—'औ नर-दैत्यों! एशिया के पारावार को और न मथो। अमरीका, ब्रिटेन और फ्रान्स के सीमान्तों को हमारे घरों के आंगण तक न फैलाओ। संरक्षक या अनाहूत सहायक का चेहरा लगाकर इस गरीबी की अग्नि का ज्याद मजाक न उड़ाओ। यह प्रलयानल बनकर तुम्हारे दर्पित ताजों को जलादेगी।

नये चीन के पन्नों में गुंथी हुई अग्नि-फूलों की यह प्रज्वलित माला संसार के तान शाहों से कहना चाहती है कि एशिया का जर्रा जर्रा रूस है—एशियाई बाग की एक एक कली चीन के दिल की कली है।

साथियों! नये चीन को जोश भरा अभिवादन दो। अध्यक्ष माओ से कहो—जो तुम्हारा रास्ता वह एशिया का रास्ता।

मातादीन भगेरिया

सम्पादक

'नवभारत टाइम्स' (दैनिक)

(दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई)

बिना किसी संकोच के—

सोना उगलने वाली चीन की धरती एक नई अंगड़ाई ले रही है। उसके हजारों वर्ष पुराने जीवन में फिर नया बसन्त आया है। यह पुस्तक इस परिवर्तन के संघर्ष की छोटी सी कहानी है। इसमें मेरी अपनी दैन कुछ भी नहीं है। जो कुछ चीन के बहादुर और देशभक्त लोगों ने गत सौ वर्षों में किया है उसे मैंने अपनी समझ और ईमानदारी से हिन्दी के पाठकों के सम्मुख रखने की चेष्टा की है, मुझे गर्व है राष्ट्र भाषा में इस विषय पर प्रथम पुस्तक लिखने का। जब चीनी मुक्ति सेना के सदा विजयी जनरल लिनपियाव के नेतृत्व में आज से दो वर्ष पूर्व च्यांग काई शेक और उसके आका ट्रूमेन की मंचूरिया में पराजय हो रही थी मैंने इस पुस्तक को लिखने का इरादा किया लेकिन कुछ लिख नहीं पाया।

कांग्रेस राज्य के जेलखाने में शंघाई की मुक्ति पर यह पुस्तक प्रारंभ हुई और इनका तीन बटा चार भाग वहीं प्रथम बार समाप्त हुआ। मित्रों की उदासीनता के कारण वहाँ आवश्यक पाठ्य सामग्री न मिलने पर यह पुस्तक वहाँ पूरी नहीं हो सकी। जेल मुक्त होने पर पूंजीवादी आम आर्थिक

संकट का शिकार लेखक कभी निश्चिंत हो कर लिखने बैठ नहीं सका। यदि यह पुस्तक इन परिस्थितियों में छप कर तैयार है तो इसका श्रेय राजस्थान विश्व विद्यापीठ उदयपुर को है। पुस्तक की छपाई प्रूफ और कागज में जो खराबियां हैं उसके लिए मैं स्वयं शर्मिन्दा हूँ लेकिन जो बात अब बस की नहीं, उसकी शिकायत व्यर्थ है। इतना मैं अवश्य कह सकता हूँ कि यदि इसका दूसरा संस्करण निकला तो पाठकों को यह शिकायत नहीं रहेगी।

पुस्तक की भाषा और शैली के सम्बन्ध में क्लिष्ट हिन्दी के हिमायती अवश्यही नाराज होंगे। पर मेरे लिए भाषा एक अलंकार न होकर विचारों को ले जाने वाला वाहन मात्र है। मैं आशा करता हूँ कि जन साधारण को मेरी भाषा से कोई शिकायत नहीं होगी। इस सम्बन्ध में मैं कड़वी से कड़वी आलोचना का स्वागत करूँगा क्योंकि वह मेरी भाषा और शैली को सुधारने में सबसे अधिक सहायक होगी।

अनेक मित्रों ने मुझे सलाह दी कि मैं इस पुस्तक में नये चीन के भूमि सुधारों, लोक जीवन और राज्य व्यवस्था आदि पर विस्तार पूर्वक लिखूँ। लेकिन मैंने इन सुझावों को स्वीकार नहीं किया क्योंकि इससे पुस्तक का कलेवर करीब १०० पृष्ठ और बढ़ जाता और यह १०० पृष्ठ लिखना आसान नहीं था। नये चीन में तेजी से हो रहे परिवर्तनों के कारण हर हालत में मेरी पुस्तक पीछे रह जाती। दूसरे, मैंने सोचा हमारी आंखोंके सामने दुनिया के एक बटा चार लोगोंके जीवन में जब इतना बड़ा परिवर्तन हो रहा है तब उसे क्यों न जाकर आँखों से देखा जाय। चीनने हमारे देश की समस्याओं से भी कठिन समस्याओं पर हमारे सामने विजय प्राप्त की है स्वयं हमारे प्रधान मन्त्री श्री नेहरू ने भी इस सत्य को

स्वीकार किया है। तब क्यों न चीन जाकर इस सत्य का अध्ययन किया जाय ? चीन और भारत के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों को ताजा करने, ऐशियाई और विश्व शांति में अपना योग देने के लिए भी आवश्यक है कि दोनों देशों के अधिक से अधिक लोग एक दूसरे के यहाँ आवें जावें। यदि मुझे पासपोर्ट मिला तो अवश्य ही मैं चीन जाकर वहाँ के लोगों का हाल अपने देशवासियों के सम्मुख रखने का नम्र प्रयत्न करूँगा।

इस पुस्तक के लिए मैं अनेक विदेशी पत्रकारों और लेखकों का आभारी हूँ। अध्यक्ष माओ की रचनाओं और उनके अमर कारनामों के अतिरिक्त मुझे इस पुस्तक को लिखने में श्री एडगर स्नो, मिस स्मेडले, इजराइल इप्सटीन, आर्थर स्केग, मेडम अन्नालुई स्ट्रांग, जी० स्ताफयेव आदि की रचनाओं से बड़ी प्रेरणा मिली है। मैं उन सब का अत्यंत आभारी हूँ। इसी तरह मैं 'नवभारत टाइम्स' के यशस्वी सम्पादक श्री मातादीनजी भगेरिया का अत्यंत आभारी हूँ जिन्होने इसकी भूमिका लिखने के मेरे प्रस्ताव को बिना किसी तकल्लुफबाजी के स्वीकार कर लिया।

मुझे आशा है मेरी पुस्तक से हमारे महान पड़ोसी चीनी राष्ट्र को समझने में कुछ मदद अवश्य मिलेगी। यदि ऐसा हुआ तो मेरा प्रयत्न अपनी अन्य सभी खामियों के होते हुए भी व्यर्थ नहीं होगा।

१–३–५१
उदयपुर

—हुकमराज मेहता

प्रकाशक के दो शब्द—

श्री हुक्मराज मेहता द्वारा प्रणीत "नया चीन" पुस्तक राजस्थान विश्व विद्यापीठ उदयपुर-प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित की जा रही है। अफसोस है, न्यूजप्रिन्ट पर और साधारण छपाई इस पुस्तक की की जा सकी है। २२ महीनों के जीवन-मरण के संघर्ष ने विद्यापीठ की हालत जर्जरी भूत करदी है। फिर भी नये चीन की मानवता की सशस्त्र क्रांति ने समस्त एशिया में जो नई आशा जागरित कर दी है, जिन नये शोषित जनों के बलों को प्रेरणा एवं प्रकाश दिया है, वह हिन्दी पाठकों के सामने रखने का लोभ सँवरण करना कठिन था।

"नया चीन" आपके हाथों में है। श्री हुक्मराज मेहता दिल और दिमाग से नये चीन की सजीव भावना के वाहक हैं। इनकी नव जवान लेखिनी, अपनी शैली के साथ, स्वयं ही कहने और बोलने वाली लेखिनी है। हाथ कंगन को आरसी क्या ?

"नया चीन" का दूसरा संस्करण प्रकाशन के समूचे सौंदर्य और वैभव के साथ प्रकाशित किया जायगा। यह वादा है।

नये चीन और एशिया में स्थित एग्लो-अमरीकी षडंत्र

डालर साम्राज्यवाद के भग्नावशेषों में जो जन-शक्तियों का जीवन-मरण का संघर्ष आज चल रहा है, वह एशिया की महान और गहरी क्रांतिकारी जीवन-कविता है। संसार के शोषण और दुःखों तथा क्रूर अन्धकार का समूचा कारण अपने विकराल रौरव को लिये हुए अमरीकी-ऐंग्लो साम्राज्य-वाद है, इसमें इतिहास को सन्देह नहीं है। और इसमें भी किसे सन्देह है कि संसार के किसानों, मजदूरों, मध्यम वर्गों तथा बुद्धिजीवियों के शोषण को अविलम्ब समाप्त करने के लिये हमारी विभिन्न राज्य-शक्तियों को अब निर्विवाद दृढ़ प्रयत्न प्रारंभ करना है।

अपनी राजनैतिक स्वतन्त्रता--प्राप्ति के बाद भारतवर्ष आज चार वर्षों से व्यापक संकटों में फँसा हुआ सघर्ष कर रहा है। समूचे भारत में भ्रष्टाचार, कालेबाजार और अमानवीय मुनाफा खोरी और देश-द्रोह का दावानल सुलग रहा है। राष्ट्रीय शक्ति स्थिर होकर रुक गई है; और अपनी ही कमजोरी, मोह एवं प्रगति की निष्क्रिय लगन के कारण मृत्यु की सी मूर्छना में डूब गई है। प्रगतिशील कही जाने वाली ताकतों में अत्यधिक घृणा और साहसी अराजकता का भाव ही मुझे प्रबल लगता है। भारतवर्ष में जो "विरोध" प्रगट हो रहा है, वह आज स्वयं में एक ऊन् मानसिक समस्या हो गया है। प्रतिक्रियावादियों, प्रतिघातियों और 'गोड्से वादियों' का विरोध तो स्पष्टत. सत्ता हथियाने का एक फासिस्ट प्रयत्न है। किन्तु प्रगति शील दृष्टि और मति लेकर जो नव जवान विरोध व्यक्त हो रहा है, वह नवजवान तो है, किन्तु उसमें अनुभव और व्यवहार की कमी मालूम होती है। यह चिन्ताजनक स्थिति है।

स्पष्ट है, सन् १९५१ में भारतवर्ष एक चौराहे पर आ खड़ा

हुआ है। राजनैतिक स्वतन्त्रता पाने के बाद आश्चर्यों, अफसोसों और निराशाओं का तांता लगा हुआ है। आज हम व्याकुल मनोमथन और कटु आत्म-निरीक्षण के गम्भीर दौर में हैं। नये चीन की अभूतपूर्व जन-क्रांति ने — सामान्यतः क्रांति दर्शी कृषक-क्रांति ने — साम्यवादी समाज का एक मार्ग एशिया को दिया है। मानव-सभ्यता के सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का, मैं कहना चाहता हूँ, जो युगों के संघर्ष के बाद, समूचा नव-सृजन चीन की "अच्छी धरती" पर आज हो रहा है। ब्रिटिश-साम्राज्यवाद, घर के घातक और फेसिस्ट सम्प्रदायवाद तथा जुल्मी हिंसक शोषण एवं उससे उत्पन्न अन्यायी व्यक्तिवाद के विरुद्ध संघर्ष करने वाली महात्मा गांधीके हिन्द की मानवता नये चीन के क्षितिज को भेद कर गह गहाने वाले उत्साहवर्धक संगीत को नहीं सुनने लगी है ? धरती की हलचल और आकाश के अरुणोदय को हम अपने प्राचीन मोर्चों और साहस हीन मानसिक समझौतों तथा सड़े हुए आध्यात्मिक भावों के पर्दों और छातों और थम्भों से रोक सकेंगे ?

मुझे लग रहा है, स्वयं भारतवर्ष अपने जीवन के मूल्यों के नव-सृजन के वेदनामय गर्भ में है। "नये भारतवर्ष" की यह प्रसव-पीड़ा बड़ी गहरी और दुःखद है। हमारा नेतृत्व आज अपने कठिन परिश्रम के बाद हजारों वर्षों के भविष्य के सामने एक कसौटी पर चढ़ गया है। भारत को निश्चय करना होगा कि क्या उसके जनता के सार्वभौम प्रभुत्व सम्पन्न गणराज्य में शोषकों अन्यायियों और आततायियों का स्थान रहेगा ? सिद्धान्त

और भावना में इन्कार नहीं, हमें अब कर्म व्यवहार और मर्यादा में दृढ़ता के साथ 'इन्कार' करना होगा।

और यही भारत का नये चीन के साथ बन्धुत्व का सच्चा उत्तर होगा।

उदयपुर
२६–फरवरी १९५१

जनार्दनराय नागर
पीठस्थविर
राजस्थान विश्व विद्यापीठ

अनुक्रमणिका

पहला भाग

दूसरा भाग

तीसरा भाग

चौथा भाग

साम्राज्यवाद का प्रवेश

जमीन की कोई सीमा होती है;
लेकिन जनता के शोषण की कोई सीमा नहीं।

—एक चीनी कहावत

चीन के गत सौ वर्षों का इतिहास नये चीन की प्रसव-वेदना का इतिहास है। मरणासन्न सामन्ती चीन और नये जनवादी चीन का यह संघर्ष मनुष्य समाज के वर्ग युद्धों का सबसे बड़ा संघर्ष रहा है। नई सामाजिक शक्तियाँ स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से रंगमंच पर आई पर उन्हें पीछे धकेल दिया गया कुचल दिया गया, दबा दिया गया; लेकिन वे फिर दुगने जोश से उमड़ पड़ीं। इन नई शक्तियो का बीजारोपण किया था पुराने समाज के अन्तर्द्वन्द्वों ने।

मध्य एशिया के राजाओं की आपसी लड़ाइयों ने योरोप और चीन के स्थल व्यापार को ठप्प कर दिया था। 'रेशमी मार्ग' अब सुरक्षित न था; अतः एक नये मार्ग की आवश्यकता थी। भारत का मार्ग खोजने के बाद पोर्तगीज जहाज चीन तक आ

पहुंचे। पोर्चुगीजों के बाद स्पेन और हालेंड के व्यापारी आए और उन्होंने चीन के मार्ग में क्रमशः फिलीपाइन और जावा पर अधिकार जमा कर व्यापार केन्द्र स्थापित किये। १७ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अंग्रेज भी आ गये लेकिन प्रारंभ मे उन्हे कोई कामयाबी नहीं मिली। वे भारत में अपने पैर फैलाने में लगे रहे।

चीन में एक के बाद दूसरे आक्रान्ता उत्तर पश्चिम के मार्गों से आए। चीन की दीवार और विशाल सैनिक शक्ति भी उन्हें रोकने में असमर्थ रही। पर उत्तर पश्चिम के मार्गों से आने वाले अर्ध बर्बर मंगोल और तुर्क चीन के सामाजिक जीवन में कोई उथल पुथल नहीं मचा सके और कालान्तर में वे अपना स्वतन्त्र अस्तित्व तक चीन की विस्तृत संस्कृति में खो बैठे। लेकिन इस बार जल मार्ग से आने वाले वणिक उस दूर पश्चिम से आ रहे थे, जहाँ सामन्ती सभ्यता के ध्वंसावशेषों पर नयी पूंजीवादी सभ्यता का बड़ी तेजी से निर्माण हो रहा था, जहाँ मशीन युग का जन्म हो रहा था। इस समय चीन की सामन्ती सभ्यता अपनी उन्नति के चरम-शिखर पर थी। उसकी चमक दमक से स्वय नये आने वाले वणिक स्तंभित हो गये। उन्होंने चीन के वैभव और समृद्धि को आश्चर्य के साथ देखा, उस पर लिखा और गाया। लेकिन यह आखिरी चमक दमक थी। पुरानी व्यवस्था भीतर से खोखली हो चुकी थी और दुनिया ने आश्चर्य के साथ देखा नई सभ्यता की हल्की सी चोटों से लड़खड़ा कर गिरते हुए पुराने चीन को।

समाज का ढांचा—

इस समय चीन जमीदारों और किसानों का देश था; थोड़ीसी संख्या में राज्याधिकारी और व्यापारी थे। सम्पत्तिहीन मजदूरों

और भिखमंगों का भी कोई अभाव नहीं था। लेकिन बहुसंख्यक लोग किसान थे जिनमें से कुछ के पास अपनी जमीन थी; शेष किसी न किसी तरह के भूमि-सम्बन्धो के अनुसार दूसरो की जमीन को जोतते थे। लगान अनाज के रूप मे लिया जाता था; लगान के अतिरिक्त किसानो को बेगार देनी पड़ती थी। दिनो दिन बढ़ती हुई जनसख्या के नियमों ने खेतों को अलग अलग छोटे छोटे टुकड़ो मे काट डाला था। छोटे पैमाने की खेती की जरूरतो के अनुसार हल औजार बर्तन आदि गावो के कारीगर बनाते थे जिन्हे किसान नाज के बदले में खरीदता था। गांवो की जरूरत का कपड़ा, मुख्यतया रेशम, गावों के जुलाहे तैयार करते थे। इस प्रकार अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए हर गांव अपने में एक पूर्ण इकाई था। अकाल, बाढ़ पाला और महामारियां भागी जाती थीं। मुसीबतो में किसानों के हल, बैल, बर्तन और खेत लगान, लागते और ब्याज चुकाने मे और पेट भरने के लिए बिक जाते थे। इस तरह जमीन जमींदारां महाजनों और राज्याधिकारियों के पंजे मे फंस जाती। जब शोषको की लूट सीमा के बाहर हो जाती थी तब स्थानीय और कभी कभी राष्ट्रव्यापी किसान विद्रोह होते। असंगठित बगावतें जमीदारों की कोठियों और महाजनों के कर्ज और रहन के दस्तावेजों को भस्म कर देतीं। लेकिन शोषण का पुराना क्रम फिर बिल्कुल नये सिरे से प्रारम्भ हो जाता जैसे लोगों ने एक कन्धे का बोझ उठा कर दूसरे कन्धे पर रख दिया हो। लोगों की गरीबी और शोषण ने जमीन के अधिकांश भाग को सदा के लिए शोषको के खूनी पजे मे भेज दिया था।

यह सब होते हुए भी जिस समय योरोप के व्यापारी चीन पहुंचे उन्होंने चीन को तत्कालीन योरोप से अधिक सम्पन्न

विकसित और सुसंस्कृत पाया। खेती बाड़ी की तमाम उपजों के अलावा रेशम, चीनी बर्तन, कागज और दस्तकारी में चीन दुनियां के किसी भी देश के आगे था। हाथ की कारीगरी अपने शिखर पर थी। कोई भी चीज ऐसी नहीं थी जिसे चीन अपनी जरूरतों के लिए और औरों से अच्छी नही बना लेता था। चीन के शासक चीन को दुनियां का केन्द्र और सबसे उन्नत व श्रेष्ठ राज्य मानते थे। सन् १७९३ में पेकिंग के शाही दरबार में जब अंग्रेज राजदूत आया था तब उसने अत्यन्त विनीत शब्दों में व्यापार की सुविधाएं बढ़ाने और स्थाई दूतावास स्थापित करने के लिए तत्कालीन सम्राट से प्रार्थना की। इंगलैण्ड के बादशाह द्वारा भेजे गये पत्र और उपहारों का जो उत्तर चीनी सम्राट ने दिया था उससे पता लगता है कि चीन पश्चिमी राष्ट्रों के मुकाबले में कितना बढ़ा चढ़ा था।

"हमारे विशाल साम्राज्य में सभी चीजें प्रचुर मात्रा में हैं और ऐसी कोई चीज नहीं है जिसका यहां अभाव हो। इसलिए हमें बर्बर विदेशी लोगों के यहां बनाई गई चीजों के बदले में अपने यहाँ का माल निर्यात करने की कोई आवश्यकता नही है।"... लेकिन अपने माल के अतिरिक्त पश्चिमी ताकतों के पास एक और तर्क था वह था समुद्री जहाजों का – नौसेना का। और शक्ति को रोकना सामन्ती चीन के सामर्थ्य के बाहर था।

अफीम युद्ध की भूमिका :–

चीनी सम्राटों ने योरोपियन लोगों को केवल केन्टन में व्यापार करने की इजाजत दी और पुर्तगालवालों को मकाओं में व्यापारिक बस्ती बसाने का अधिकार दिया। उन्होंने अन्य बन्दरगाहों को व्यापार के लिए खोलने में साफ इन्कार कर

दिया। पोर्चुगीजों के बाद आने वाले स्पेन के व्यापारियों ने चीन में तम्बाकू का प्रचार किया और हॉलेण्डवालोंने उन्हें अफीम खाना सिखलाया। योरप के व्यापारी चाय, रेशम, कपड़े और बर्तनों के लिए चीन आते थे लेकिन चीन के ला.. को योरोपियन चीजें पसन्द न थीं अतः बदले में वे केवल सोना चाँदी मांगते थे। भारत पर अधिकार जमा कर अंग्रेज अपने प्रतिद्वन्दी राष्ट्रों को चीन के बाजार से भगाने में कामयाब हुए। उन्होने केन्टन के अतिरिक्त अन्य स्थानो से व्यापार करने की इजाजत मांगी लेकिन चीनी सम्राटों ने इन प्रार्थनाओं को ठुकरा दिया। अंग्रेज नहीं चाहते थे कि उन्हें चीनी माल के बदले में हर साल सोना चाँदी देना पड़े। अपने व्यापार का संतुलन रखने के लिए उन्होंने बड़े पैमाने पर गैर कानूनी रूप से चीन में अफीम बेचना प्रारंभ किया। अफीम विनिमय के लिए थोड़े ही दिनो मे काला सोना बन गया। हिन्दुस्तान में अफीम का ठेका ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पास होने से उसे कौडियो के मूल्य अफीम मिल जाता और चीन मे उसकी चाँदी हो जाती। १८१८ में ७५ लाख रुपये का अफीम चीन भेजा गया और १८३१ में वहाँ ६ करोड़ का अफीम भेजा गया। जब कम्पनी से चीनी व्यापार का ठेका छिन गया यह अफीम का व्यापार और भी तेजी से चमक उठा। अफीम का व्यापार जहाँ चीनी जनता के जीवन और नैतिकता पर हमला था वहाँ वह मंचू राज्य के लिए भी खतरा बन गया। इस व्यापार के गैर कानूनी होने से राज्य को इस पर कोई कस्टम नहीं मिलता था और लगातार चाँदी के निर्यात से सिक्के के अवमूल्यन का खतरा पैदा हो रहा था अतः मंचू सम्राट ने इस व्यापार को बन्द करने का निश्चय किया। पेकिंग से एक ईमानदार अफसर भेजा गया जिसने केन्टन आकर अफीम के सारे स्टॉक को जब्त कर लिया और

फिर उसे सार्वजनिक रूप से नष्ट कर दिया। योरोपियन फर्मों के पास २०००० पेटी अफीम पकड़ा गया। (१८३६)

काफी अर्से से अंग्रेज व्यापार किसी न किसी बहाने चीन से लड़ाई करना चाहते थे क्योंकि उनका विश्वास था कि बिना युद्ध में पराजित हुए चीन अपने बन्दरगाहों को कभी वैदेशिक व्यापार के लिए नहीं खोलेगा। अब उन्हें बहाना मिल गया उनकी दृष्टि में ब्रिटिश सम्पत्ति और प्राणों की रक्षा के लिए युद्ध अनिवार्य हो चुका था। उन्हें चीन की कमजोरी साफ दिखाई देती थी। उन्होंने एक जहाजी बेड़ा मंगवाया जो चीनी प्रतिरोध को कुचल कर आसानी से केन्टन तक पहुंच गया। ६ करोड़ डालर की भेट देकर मंचू साम्राज्य के कायर सामन्ती अफसरों ने केन्टन को अंग्रेजों की खुली लूट से बचाया। अब यह बेड़ा अन्य बन्दरगाहों को लेता हुआ नानकिंग के पास पहुंच गया। विशाल मंचू राज्य इन थोड़े से समुद्री डाकुओं को कुचल नहीं सका, उसने ब्रिटिश साम्राज्यवादियो के आगे घुटने टेक दिये। नानकिंग मे दोनों पक्षों के बीच सन्धि हुई जिसमें अंग्रेजों को मुँह मांगा मिल गया। हाँगकांग पर अब सदा के लिए अंग्रेजों का अधिकार हो गया। अमोप फुचाऊ निगपो और शंघाई के बन्दर अब विदेशी व्यापार के लिए खोल दिये गये। आयात और निर्यात कर केवल ५ प्रतिशत निश्चित कर दिया गया। इन पांचों बन्दरगाहों में अंग्रेजो को अधिकार मिला कि वे ब्रिटिश कानूनों और अदालतों के ही मातहत होगे। चीनी कानून और अदालतें उन्हें किसी भी अपराध के लिए कोई सजा नहीं दे सकेंगी। इसके अतिरिक्त चीन को १ करोड़ ५० लाख डालर युद्ध हरजाना और नष्ट की गई अफीम की पेटियों के एवजाने में ६० लाख डालर देना पड़ा। लेकिन अंग्रेजों को इतने से संतोष कहाँ? अगले वर्ष (१८४१) में फिर

चीन को एक व्यापारिक सन्धि करनी पड़ी जिसके अनुसार अंग्रेजों को अपनी बस्तियां बसाने और बन्दरगाहों मे 'शान्ति' बनाए रखने के लिए युद्धपोत रखने की इजाजत मिल गई। अब अफीम का व्यापार पूरे देश मे चमक उठा और १६०८ तक चलता रहा। जहाँ १८३६ मे चीन मे २० हजार पेटी अफीम था वहां १८५७ में वह ५७ हजार पेटी हो गया। इस व्यापार मे भारत सरकार को ५५ लाख रुपये की आमदनी हुई। स्मरण रहे अफीम युद्ध के पूर्व १८१६ में नेपाल पर दबाव डाल कर अंग्रेजो ने उसे चीन की मातहती से अलग कर दिया और १८२५ में चीनी साम्राज्य के अंग बर्मा के दो प्रान्त आक्रमण कर छीन लिये।

नानकिंग की संधि

नानकिंग की संधि चीन की सार्वभौमता, अखण्डता और राष्ट्रीय सम्मान पर पहली चोट थी। इस सन्धि से चीन में साम्राज्यवादी लूट खसोट का एक नया अध्याय शुरु होता है जो नये चीन के जन्म तक चलता है। यह संधि चीन के साथ आगे सो बरस तक होने वाली सन्धियां का आधार थी। अंग्रेजों के बाद थोड़ीसी शक्ति का प्रदर्शन कर फ्रांसिसी और अमरीकी साम्राज्यवादियों ने अग्रेजो के समान सुविधाएँ प्राप्त करलीं। इन सुविधाओं के साथ चीन के बाजार में विदेशी माल आया। प्रतियोगिता ने चीन के घरेलू उद्योग धन्धो को नष्ट करना शुरु किया। खेती पर दबाव लगातार बढ़ने लगा। लोग अधिकाधिक बेकार होकर छोटे मोटे काम की तलाश में अपनी मातृभूमि को छोड़ कर विदेश जाने लगे। इस प्रकार करीब पौन करोड़ चीनी अपना देश छोड़ने को लाचार हुए। मलाया की टीन की खानों चाय के बागानों, जावा, क्यूबा और अमरीका के बाजारों में सस्ते चीनी मजदूरों की मांग होने लगी। अब साम्राज्यवादी

लूटेरे चीनी प्राणों का व्यापार करने लगे। चीनी मजदूरों को चकमा देकर, नशे में चूर और जबरदस्ती जहाजों में भर कर गिरमिटिया मजदूर बना कर दुनियां के बाजारों में कौड़ियों के मोल बेचा गया। इस नृशंसता के विरुद्ध १८५२ में जब अमोय के लोगों ने विद्रोह किया तो एक ब्रिटिश जहाजी बेड़े ने शान्ति की स्थापना के नाम पर उसे कुचल दिया।

नानकिंग की सन्धि में अफीम के व्यापार का जान बूझ कर उल्लेख नहीं किया गया। अफीम के व्यापार कानूनी करार देने की मांग करते हुए स्वयं अंग्रेज शर्माते थे लेकिन यह व्यापार पहले की तरह चलता रहा। १८५७ में एक चीनी नौका जिस पर अंग्रेजी झण्डा लगा रक्खा था चोरी से अफीम लाते पकड़ी गई। अब अंग्रेजों ने कहा कि इस नौका के चीनी चालकों और मालिकों को चीनी अदालत सजा नहीं दे सकती क्योंकि अंग्रेजो के प्रदेशोत्तर अधिकार (extra Territorial rights) अंग्रेजो के झण्डे के साथ चलते हैं। झण्डे के इस अधिकार को मनवाने के लिए अंग्रेजों ने दूसरा अफीम युद्ध छेड़ दिया। अंग्रेजों ने शीघ्र ही केन्टन छीन लिया। तीन वर्ष के भीतर अंग्रेजो और फ्रान्सीसियों ने मिल कर पेकिंग पर अधिकार कर चीन की सर्वश्रेष्ठ कला सामग्रियों के संग्रहालय और अभूतपूर्व महल ग्रीष्मपहल को लूट कर आग के हवाले कर दिया। मंचू सम्राट ने पुनः घुटने टेक दिये। नई सन्धि हुई। लूटेरों को नये अधिकार मिले। नये बन्दरगाह विदेशी व्यापार के लिए खोले गये। चीन पर युद्ध का भारी हरजाना लादा गया और अफीम के व्यापार को इस बार कानूनी जामा पहनाया गया। चीन के तट कर को वसूल करने का काम एक अंग्रेज अफसर को सौंपा गया। विदेशियो को समूचे चीन में घूमने फिरने की खुली छूट मिल गई। ईसाई धर्म का प्रचार और चर्च

की जमीन खरीदने की छूट दे दी गई। गिरमिटिया मजदूर ले जाने की छूट दे दी गई और इसका विरोध करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। विदेशी राष्ट्रों को पहली बार पेकिंग में दूतावास स्थापित करने का हक मिला। इससे थोड़े दिन बाद अमरीका और जारशाही रूस ने भी सभी उपरोक्त सुविधाएँ प्राप्त करलीं।

१८६१ में विदेशियों को चीन के सभी मुख्य २ शहरों में कन्सेशन बसाने का अधिकार दिया गया। अर्थात् हर शहर में विदेशी बस्ती अलग होने लगी, जहाँ सरकार, पुलिस और न्याय विदेशियों का चलने लगा। थोड़े ही समय बाद युद्ध का हरजाना चुकाने के लिए कस्टम, गोरों के यहां गिरवी रख दिया गया। सन् १९०० तक चीन पर साढ़े पांच करोड़ पौंड कर्ज हो गया, जिसका ब्याज चुकाने में राज्य की आमदनी का ⅓ भाग चला जाता था और सन् १९०७ में तो राज्य की कुल आय का ४०प्रतिशत भाग ब्याज और हरजाना चुकाने में खत्म होने लगा। मचू राज्य की दशा विदेशियों के लिए ब्याज वसूल करने वाली एजेन्सी सी हो गई।

साम्राज्यवादी लूट खसोट का कोई अंत नहीं था। १८७० में अंग्रेजो ने चीन के आंतरिक व्यापार में पैर पसारने शुरु किये, फ्रांस ने दक्षिणी चीन में उनका अनुकरण किया, रूसने सिन्कियाग पर डोरे डाले और अमरीका ने कोरिया पर। चीन सब दुनिया भर के साम्राज्यवादियों का अखाड़ा बन गया। उसकी स्थिति किसी के एक मातहत देश की सीन थी। गरीब की जोरू सबकी भाभी कहावत उस पर चरितार्थ होने लगी। जो अधिकार आज एक साम्राज्यवादी राष्ट्र लेता, कल वही दूसरे को भी देना पड़ता।

एशियाई देशों में जापान ने तेजी के साथ पश्चिमी राष्ट्रों

की नकल की और तेजी से अपना उद्योगीकरण किया। थोड़ेही दिनों में वह भी साम्राज्यवादी लूट खसौट में भागीदार बन बैठा। १८६४ में वह उपनिवेशों की लूट खसौट के लिए मैदान में उत्तर पड़ा और चीन पर आक्रमण कर उसे परास्त कर फार-मूसा और कोरिया का मालिक बन बैठा। प्रसिद्ध अमरीकी पत्रकार जान गुन्थर ने जापान के रूख के बारे में लिखा है.—

"साम्राज्यबादी दावत मे जापान देरी से पहुँचा था, शायद उसके तरीके अधिक घृणित, क्रूर और साफ थे। लेकिन सार रूप से जापान ने ऐसा कुछ नहीं किया जो दूसरी शक्तियाँ अब तक नहीं कर चुकी थीं।"

जनता जागी

सामन्ती चीन पर साम्राज्यवादियों के बलात्कार ने एक नये चीन का गर्भाधान किया, उन शक्तियो की सृष्टि की जो बाद में दोनों के लिए यमराज सिद्ध हुई। पश्चिमी सम्पर्क से चीन को एक नई चेतना मिली। यह चेतना थी सामन्त विरोधी और साम्राज्यवाद विरोधी। चीनी जनता ने देखा कि पश्चिमी राष्ट्र चीन पर हावी होरहे हैं क्योंकि चीन एक पिछड़ा हुआ देश रह गया है, वर्तमान समाज व्यवस्था सड़ चुकी और मंचू राज्यवंश अपने पारिवारिक स्वार्थों के लिए राष्ट्रीय हितों का बलिदान कर रहा है। अतः यदि चीन का प्राचीन गौरव फिर लौटाना है, यदि उसे सुखी और समृद्ध, शक्तिशाली और स्वतन्त्र होना है तो इस राज्यवंश और सामन्तशाही को मिटाना अनिवार्य है। पश्चिम चीन पर हावी होरहा है क्यों कि उसने ज्ञान विज्ञान और उद्योग धन्धों में अभूत पूर्व प्रगति करली है, आगे बढ़ने का एक ही रास्ता है- इन्हीं राष्ट्रों के पथ का अनुकरण और साम्राज्यवादी जुए को उतार फेंकना।

किसानों में सामन्ती प्रथा और मंचू राज्य के प्रति असंतोष बढ़ता जा रहा था। व्यापार में विदेशी वणिको के आजाने से व्यापारी वर्ग का असंतोष तीव्र होता जा रहा था। विद्यार्थी राज्य के खिलाफ होते जा रहे थे क्योकि उन्हे नौकरियाँ नहीं मिल रही थी। मंचू राज्य ने सरकारी महो को बेचना शुरु कर दिया। जिससे शासन तन्त्र में सभी खराबियाँ पैदा हो गई। यह असतोष दक्षिण में ज्यादा था क्योकि योरोपियन लोगों ने वहाँ पहले कदम रखा था। दूसरे मंचूराज्य की नीति पक्षपात पूर्ण होने से दक्षिण वालो के साथ असमान व्यवहार होने लगा। पश्चिम से आए लोकतन्त्री विचारो ने इस असंतोष को विद्रोही रूप धारण करने में बड़ी मदद दी।

ताइपिंग विद्रोह १८४९-६४

यह चीन का सबसे बड़ा जन विद्रोह था। इसका मुख्य लक्ष्य सामन्त विरोधी था न कि साम्राज्यवाद विरोधी। इसका नेता एक पढ़ा लिखा चीनी ईसाई था और अनुयायी किसान और खेत मजदूर। कंगसी प्रान्त मे सैन्य निमार्ण कर उन्होंने उत्तर की ओर कूच किया। मध्य और दक्षिण चीन में तत्कालीन अन्य दल इनसे मिल गये और विद्रोहियों ने जनता के समर्थन से आसानी से बड़े २ शहरो पर अधिकार कर लिया। अब सभी बागी नानकिंग की तरफ बढ़े और उसे फतह कर १८५३ में अपनी राजधानी बनाया। बगावत की आग अब सारे चीन मे फैल गई। एक भी प्रान्त उसकी लपटों से अछूता नही रहा। ताईपिंग विद्रोही, पेकिंग और शंघाई के द्वार तक पहुँच गये लेकिन अन्त में उन्हे मंचू राज्य और साम्राज्यवादियों की संयुक्त शक्ति के आगे पराजित होना पड़ा।

ताइपिंग विद्रोही आधुनिक कम्युनिस्टो के पूर्वज थे।

उनके भूमि सुधार कम्युनिस्टो के भूमि सुधारों से बहुत मिलते जुलते थे। ए०एफ० लिन्डले नामक एक तत्कालीन अंग्रेज के अनुसार उनके भूमि सुधार इस प्रकार थे—

'खेतों पर अधिकार होने पर उन्हें सामूहिक रूप से जोतो और जब धान पैदा हो, सब मिल कर भोगों ताकि हर व्यक्ति को काम और उसका फल मिले। प्रत्येक परिवार रेशम के कीड़े, ५ मुर्गियाँ और दो सुअर पाल कर उनसे अण्डे, बच्चें पैदा करे। फसल पकने पर अधिकारियों को चाहिये कि लोगों की जरुरत के अतिरिक्त धान को सार्वजनिक कोठारों में जमा कराओ। जब राज्य के पास बाकी अनाज होगा तब हर परिवार को हर स्थान पर पूरा २ खाने पहिनने को मिलेगा।"

उन्होने जमीदारो और जमीदारी को मिटा दिया। जमीदारो के दस्तावेजों को नष्ट कर भूमि को किसानोंमें नये सिरे से बांट दिया। औरतोंके पैर बांधने, स्त्रियों और बच्चों की गुलामी और वैश्यावृत्ति को रोक दिया। अदालतों के अत्याचार और रिश्वतखोरी को मिटा दिया। यह बगावत मुख्यतया दबे हुए किसानों की सामन्त विरोधी क्रांति थी। इस क्रान्ति के नेतृत्व आज के कम्युनिस्ट नेतृत्व के मुकाबले मे बहुत ही पिछड़ा हुआ था। ताइपिंग बागियो ने विदेशियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार रखा। वे योरोप से व्यापार करना और ज्ञान विज्ञान सीखना चाहते थे। यद्यपि उनकी सरकार का रूप राजतन्त्री था, उनके अफसर सादगी से रहते थे और मंचू राज्य का नाश होने पर जनतन्त्री सरकार की स्थापना का इरादा रखते थे। विद्रोह के प्रारम्भ में योरोपियन राष्ट्र तटस्थ रहे और उनकी सहानुभूति बागियों की तरफ थी, लेकिन धीरे २ अपने वर्ग स्वार्थो की रक्षा के लिए बदनाम, भ्रष्ट और देशद्रोही मचू सम्राट के पक्ष में चीन के गृहयुद्ध में प्रगतिशील ताकतों को दबाने में जुट गये।

साम्राज्यवाद का रुख,

चीन के इतिहास में आज अमीरीकी साम्राज्यवादी पहली बार ही आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप नहीं कर रहे हैं। चांगकाई शेक के देश द्रोही प्रतिक्रियावादी गुट को ही पहली बार साम्राज्यवादी समर्थन नही मिला है। सदैव से साम्राज्य-वादी ताकतें चीन की प्रतिक्रियावादी ताकतों को जनता के विरोध में मदद देरही है। अंग्रेजों ने ताइपिंग आन्दोलनकारियो के हाथों में केन्टन नहीं जाने दिया। अंग्रेजों और फ्रान्सीसियो ने शंघाई की रक्षा अपने हाथो मे लेली। द्वितीय अफीम युद्ध से जो अधिकार इन लुटेरों को मिले थे उनको सुरक्षित रखने के लिए मंचू राज्य से अच्छा सहायक नहीं मिल सकता था; अतः मंचू राज्य की सुरक्षा को खतरे में देख कर तटस्थता का स्वांग भरने वाले साम्राज्यवादी गृहयुद्ध में निश्चित रूप से मंचू राज्य की मदद को उतर आए। स्मरण रहे, ताइपिंग विद्रोही निश्चित रूप से अफीम के खिलाफ थे। ताइपिंग के विरुद्ध इंगलेण्ड, फ्रांस, अमरीका आदि राष्ट्रों ने सैन्य विशारदों और हथियारों से मंचू राज्य की मदद की। जनरल गार्डन और दूसरे सेना नायक भेजे गये। जिस बगावत को दुनियां का सबसे बड़ा निरंकुश राज्य न कुचल सका उसे विदेशी तोपों ने कुचल डाला। इस गृहयुद्ध मे दो करोड़ के करीब लोग मारे गये।

यदि चीनी जनता सामन्त विरोधी और साम्राज्यवाद विरोधी होरही थी तो चीन के प्रतिक्रियावादी भी पश्चिमी असर से मुक्त न थे। वे भी पश्चिमी राष्ट्रों के सख्त खिलाफ थे। क्योंकि उन्होंने सामंती चीन के साथ उपरोक्त व्यवहार किया था, क्योंकि उन्होंने पुराने चीन की कमजोरी को, खोखलेपन को चीनी जनता के

सामने नंगा करके रख दिया और उसे शोषण में अपना छोटा भागीदार बना लिया। लेकिन साम्राज्यवाद से भी अधिक घृणा थी उन्हें पश्चिम के नये विचारों और इनसे प्रेरित चीनी देश भक्तों से। इन्हें सन्तोष था कि साम्राज्यवादी उन्हें कम से कम छोटा भागीदार तो बनाए रखना चाहते हैं, लेकिन यह नये विचारों के लोग तो सामन्तशाही का खात्मा करने पर ही तुले हुए थे। ऐसी स्थिति में अपनी ही बागी जनता से डरे हुए प्रतिक्रियावादियों ने वर्तमान चांगकाईशेक की तरह जनता के विरुद्ध साम्राज्यवादियों का ही दामन थामा। वे साम्राज्यवादी शोषण के चीनी दलाल और नकाब बन गये।

यद्यपि पुराना चीन इतना कमजोर होचुका था लेकिन उसे निगलने से प्रत्येक साम्राज्यवादी ताकत घबराती थी क्योंकि इतनी बड़ी चीज को एक ताकत द्वारा हड़पी जाना दूसरी ताकतें चुपचाप देख नहीं सकती थीं। बाद में जब जापान ने इसकी कोशिश भी की तो दूसरों की प्रतिद्वन्दिता के कारण वह सफल नहीं हो सका। दूसरा इतने बड़े राज्य को गुलाम बना कर सीधा राज्य करना खतरे से खाली न था। अतः उन्हें अधिक सुविधा जनक लगा कि किसी शिखण्डी की आड़ में चीन पर वार करना। वे एक ऐसी शक्ति चाहते थे जो चीनी जनता के मुकाबले मे मजबूत लेकिन उनके मुकाबले में कमजोर हो और जो उनका मोहरा बनने को तैयार हो। वर्तमान च्यांग की तरह मंचूराज्य वंश इस 'मजबूत व्यक्ति' कापार्ट खेलने को तैयार था।

ताइपिंग विद्रोह के बाद साम्राज्यवादी लूट खसोट ने एक और रूप धारण किया। जर्मनी ने सिंग्ताओ, अंग्रेजों ने कूलून और वाईहईवेपर अधिकारजमा लिया। विदेशी पूंजी चीनमे आने

लगी। मजदूर आन्दोलन और कानूनों का अभाव, सस्ती मजदूरी और सस्ता कच्चा मालपूंजी को और क्या चाहिए ? अलग अलग ताकतों ने चीन के अलग अलग भागों पर अपना एकाधिकार जमाना शुरुकिया। जर्मनी की शान्टुंग पर, जापान और रूस की मंचूरिया पर अंग्रेजो की यांगसी घाटी और केन्टन के पिछवाड़े पर, फ्रांस की दक्षिण के चार प्रांतों पर काली छाया पड़ी। इन अलग अलग क्षेत्रो पर अलग अलग राष्ट्रों ने रेल निकालने और दूसरे विशेषाधिकार प्राप्त किये। अब फिर खतरा पैदा हुआ कि कहीं थोड़े दिनों में चीन के साफ टुकड़े २ न हो जांय। इन टुकड़ों की झपटा झपटी में योरोपीय राष्ट्र लड़ न पड़ें।

"खुला द्वार समान अवसर"

साम्राज्यवादी लूट खसोट में अमरीका दुनियां के बाजारों में जरा देरी से आया। उसकी आंखें चीन पर गढ़ी हुई थीं लेकिन चीन मे अधिक पैर पसारने के लिए उसने पहले फिलीपाइन द्वीप समूह को आधार बना लेने के लिए स्पेन से छीन लेना अधिक उचित समझा। जब अमरीका इधर उलझा हुआ था, चीन मे प्रभाव क्षेत्र बनना प्रारंभ हो गया था। अमरीका नहीं चाहता था कि चीन निश्चित रूप से विभिन्न ताकतों के प्रभाव क्षेत्र में बँट जावे या उस पर किसी एक ताकत का निष्कंटक आधिपत्य जम जावे। अतः अमरीका के तत्कालीन सेक्रेटरी जान हेने चीन का अलग २ प्रभाव क्षेत्रों में बांटे जाने और टुकड़े किये जाने का विरोध किया और एक नई नीति सभी साम्राज्यवादियों के सामने रखी। यह नई नीति राजनैतिक इतिहास में 'खुला द्वार और समान अवसर' की नीति के नाम से प्रख्यात हुई। इस नीति का अर्थ था चीन के शोषण के द्वार सबके लिए

खुले रहे और इस लूट मे सबको समान अवसर मिले अर्थात् चीन को कोई एक अपनी रखैल न बनाले; बल्कि सभी उसे समान रूप से भोगते रहें। डॉ० सनयात सेन के शब्दों मे चीन किसी एक राष्ट्र का उपनिवेश न बनकर सभी का उपनिवेश हो गया। ब्रिटेन ने अमरीका की इस नीति का समर्थन किया; क्योंकि उसे जारशाही रूस, जापान और जर्मनी की चीनी नीति से दिनो दिन खतरा लग रहा था। अन्य ताकतो ने भी एक दूसरे से ईर्षा वश या प्रभाव वश इस नीति को स्वीकार कर लिया। बाद मे जब जापान ने चीन के खुले द्वार को जबरदस्ती बन्द कर जापानी सतरी का पहरा बिठाने की चेष्टा की तो उसे दूसरे राष्ट्रों का विरोध देखना पड़ा।

ताइपिंग विद्रोह के बाद पश्चिमी विचारों से प्रभावित उदार पथी लोगो ने वैधानिक सुधारों के लिए आवाज उठाई। लेकिन साम्राज्यवादी कुचक्रों और तत्कालीन बदनाम मंचू साम्राज्ञी दोवागीर ने इस वैधानिक आवाज को भी सख्ती के साथ कुचल दिया। आन्दोलन के आगेवानों को पकड़ कर उनका वध करा दिया गया।

बाक्सर विद्रोह

साम्राज्यवादी ताकतों की खुली लूट, सुविधाओं, प्रादेशोत्तर अधिकारों आदि के प्रति चीनी जनता का रोष बढ़ता जा रहा था। इस शताब्दी के प्रारम्भ में इस रोष ने एक और बगावत का रूप धारण किया, जिसे इतिहास में बाक्सर (घूंसेबाजी) विद्रोह के नाम से याद करते हैं। इस विरोधका लक्ष्य सभी विदेशियों को चीन से भगाना था जिसमें मंचू राज्यवंश भी शामिल था। चीन के लोग मंचूओं को भी विदेशी मानते

थे। लेकिन मंचू 'साम्राज्ञी ने इस विरोध की धारा को केवल पश्चिमी राष्ट्रों के विरोध में मोड़ दिया। आन्दोलन के आगे-वानों को बताया गया कि राज्यवंश तो स्वयं पश्चिमी राष्ट्रों की कुटिलता का शिकार है। पश्चिमी राष्ट्रों के हाथों बाक्सरों को पिटवा कर वह खुले आम साम्राज्यवाद की समर्थक बन गई।

बाक्सर विद्रोह को साम्राज्यवादियों ने बुरी तरह बदनाम करने की चेष्टा की। इसके विरुद्ध झूठा से झूठा और गन्दा से गन्दा प्रचार किया गया। इस विद्रोह के आगेवान ऊपर के वर्गों के देशभक्त थे, जिनके पास ताइपिंग की तरह कोई सामाजिक लक्ष्य नहीं था। वे साम्राज्यवाद विरोधी थे, लेकिन चीनी समाज के जीवन में कोई बुनियादी परिवर्तन करने के लिए तैयार नहीं थे। उनके घोषणा-पत्र में कहा गया—

"यह विदेशी व्यापार करने और ईसाई मत का प्रचार करने के बहाने असल मे लोगों की जमीन, भोजन और कपड़ा ले जा रहे है। सन्तों की पुस्तकों को उलटने के अतिरिक्त वो हमें अफीम जैसा जहर दे रहे हैं और व्यभिचार में डुबो रहे है। ताओकांग के समय से इन्होंने हमारे प्रदेशो को लेना प्रारम्भ किया है और हमारा पैसा ले जारहे हैं। उन्होने अनाज की तरह हमारे बाल बच्चों को खा डाला है और सर पर कर्ज के पहाड़ खड़े कर दिये हैं। उन्होंने हमारे महलों को जलाया है, हमारे आधीनस्थ राज्यों को छीना है, शंघाई पर अधिकार जमाया है, फारमूसा को उजाड़ दिया है और कियाऊचाउ का द्वार जबर-दस्ती खोल दिया है। और अब वे चीन को तरबूज की तरह काट कर आपस में बाँट लेना चाहते हैं।"

इस विद्रोह को आसानी से कुचल कर उत्तरी चीन को साम्राज्यवादियों ने अपने हाथों मे ले लिया। विद्रोह के कुचल

जाने पर भी केसर विलियम ने एक सेना भेजी। जर्मन सेनापति के नेतृत्व में सभी राष्ट्रों की संयुक्त सेना ने चीनियों को सबक सिखाने के लिए विशुद्ध प्रशियन तरीके से लूटमार, आगजनी, बलात्कार और कत्लेआम का राज्य उत्तरी चीन में फैला दिया। पेकिंग की विदेशी बस्ती किलेबन्दी में बदल दी गई। समुद्र से राजधानी तक जाने वाली रेलों पर विदेशी फौजों का पहरा बैठा दिया गया, तटीय किलेबन्दी को तोड़ दिया गया, और अमरीका की १५ वीं पैदल सेना स्थाई तौर पर चीन की छाती को रौंदने के लिए रखदी गई। इस बगावत का चीन पर ६ करोड़ ७५ लाख पाउंड का हरजाना लादा गया। साम्राज्यवादी लालसा का अन्त कहां था? वह तो शैतान की आंत की तरह बढ़ती जा रही थी।

१९०४ में तिब्बत पर अंग्रेजों ने आक्रमण किया। १९०४-५ में चीन के उत्तरी भाग में प्रभाव बढ़ाने के लिए रूस जापान में युद्ध हुआ। उस युद्ध में विजयी जापान को मंचूरिया और कोरिया मे विशेषाधिकार मिले। १९०८-१० में जर्मनी, इंगलैण्ड फ्रांस और अमरीका के बेंकों ने एक गुट्ट बना कर चीन में रेल मार्गों और दूसरे धन्धों में पूंजी लगाकर शोषण प्रारंभ किया।

बगावतों को दबाना तो प्रतिक्रियावादियों के लिए अपेक्षाकृत आसान था लेकिन उन हालतों को मिटाना कठिन था, जो बगावतें पैदा करती हैं। अपनी सफलता पर मंचू राज्य और साम्राज्यवादी दोनों खुश थे लेकिन जनता की पीड़ा और गरीबी दिनो दिन बढ़ती जा रही थी। राज्य की अर्थनीति के, मंचू सम्राट के ऐशोआराम और विदेशियों के हितों में होने से कल-कारखाने बहुत ही कम खुल रहे थे और घरेलू धन्धे ठप्प हो रहे थे। व्यापार विदेशी हितों में होने से छोटे व्यापारी बर्बाद

हो रहे थे। जनता का अपमान और शोषण अपनी चरम सीमा पर पहुंच चुका था। शंघाई के एक पार्क पर नोटिस लग चुका था।

"कुत्ते और चीनी अन्दर नहीं जा सकते।"

---

(२)

पहला इन्कलाब १९११

—"और उन्नत योरप? वह चीन को लूट रहा है, लोकतंत्र विरोधी शक्तियों का, स्वतंत्रता के शत्रुओं का चीन में समर्थन कर रहा है··· योरप का शासक वर्ग; योरप के समस्त पूंजीपति चीन में मध्ययुगीन प्रतिक्रियावादी शक्तियों के सहयोगी हैं।"

लेनिन (मई १९१३)

चीन दुनियाँ का सबसे बड़ा देश जहाँ मनुष्य जाति का पाँचवा भाग बसता है और मंचू राज्य इस दुनियां का सबसे बड़ा राज्य, जितना बड़ा उतना ही निरकुश। 'करेला फिर नीम चढ़ा; इस राज्य की पीठ पर थे दुनियाँ भर के साम्राज्यवादी लुटेरे। दोनों जनता को कुचल कर निश्चिन्त थे कि एक ऐसी बाढ़ आई जो एक को ले डूबी। चीन की जनता ने दुनियाँ के सबसे बड़े राजतंत्र को एक बार में सदा के लिए समाप्त कर दिया। यह लहर अकस्मात नहीं आई थी, लेकिन इस बार इसके आने का पता मंचुओं को तो क्या उनके आका साम्राज्यवादियो को

भी नहीं लगा। १६११ की क्रान्ति के थोड़े ही दिन पहले 'जन-तंत्री अमरीका' ने इस निरंकुश राज्य को एक बड़ा ऋण दिया। लेकिन ऋण देने वाले ट्रूमेन के पूर्वज मंचू राज्य को बचा न सके।

१६११ की क्रान्ति को जन्म देने वाली वे सामाजिक परि-स्थितियाँ थीं जिनका हम ऊपर जिक्र कर आए हैं। बाक्सर विद्रोह के बाद भी जन असंतोष नये २ रूपों में भड़कता रहा जिसे शासक वर्ग बहुत आसानी से कुचलता रहा। लोगों के रोष को कम करने के लिए सम्राट ने एक नकली संसद् का स्वांग रचा, कुछ छुट पुट सुधारों का नाटक किया गया लेकिन बालू की दीवारें जनक्रान्ति के ज्वार को कहाँ तक रोक सकती थीं ? १६११ में जब मंचू सरकार ने धनी चीनियों द्वारा प्रस्तुत एक रेल मार्ग की योजना को विदेशी योजना के खिलाफ स्वीकार करने से इन्कार कर दिया तो अचानक असंतोष भड़क उठा। हांको में सेना ने बगावत शुरु की, शीघ्र ही शंघाई और केन्टन विद्रोह के केन्द्र बन गये। विद्यार्थी और व्यापारी इस विद्रोह के आगेवान थे। सदा शेर की तरह दहाड़ने वाला मंचू राज्य इस बार साँप की तरह दुम हिलाता हुआ भाग खड़ा हुआ। लोगो ने जनतंत्र की घोषणा कर दी। डॉ० सनयातसेन को विदेशों से बुलाकर नये जनतंत्र का अध्यक्ष बनाया। दुनियां की इतनी बड़ी राज्यक्रान्ति बिना विशेष खून खराबी के सम्पन्न हो गई। तलवारों के चमकने से अधिक इस बार कैंचियों की आवाज हुई। ४० करोड़ लोगों ने मंचू गुलामी की प्रतीक अपनी लम्बी चोटियों को सरे आम कटवा डाला।

ताइपिंग विद्रोह यद्यपि कुचल दिया गया था लेकिन उसने जो चेतना प्रदान की थी वह लोगों के हृदय में सुलग रही थी।

दमन से बचने के लिए अनेक ताइपिंग विद्रोही विदेशों को चले गये थे। वे अपने साथ देश भक्ति की कट्टर भावना लेकर गये। विदेशों के अनुभवों ने उन्हें और उग्र बना दिया था। इसी तरह गरीबी और भूख से पीड़ित गिरमिटया और दूसरे चीनियो ने विदेशों में जगह २ अपमान अनुभव किया। उन्होने देखा कि उनका अपमान इसलिए हो रहा है कि उनके देश में एक स्वतंन्त्र और सार्वभौम सरकार नहीं है जिसे दूसरे राष्ट्र समान समझे। इस अनुभव ने उन्हे भी कट्टर देश भक्त बना दिया। इस प्रकार चीनियों की विदेशी बस्तीयाँ मंचू विरोधी और क्रान्तिकारियो के अड्डे बन गई। डॉ० सनयातसेन का जन्म केन्टन के पास एक गाँव में मध्यमश्रेणी के किसान के घर में हुआ था यह गांव ताइपिंग परम्परा रखता था। डा० सन ने विदेशों में शिक्षा पाई। वे कट्टर राष्ट्रवादी और जनतंत्रवादी थे। डा० सन ने विदेशों मे घूमकर चीनियों का संगठन किया और चीन के कोमिन्हांग दल की नींव डाली। डॉ० सन का देश विदेश के चीनी बहुत सम्मान करते थे और नौजवान लोग उनसे बहुत प्रभावित थे। उनसे प्रभावित नौजवानों ने ही हांको के विद्रोह का नेतृत्व किया था।

क्रान्ति आगे बढ़ न सकी—

इस इन्कलाब ने मंचू राज्य वंश को तो समाप्त कर दिया लेकिन क्रान्ति इससे आगे नहीं बढ़ सकी। हजारों वर्षों से चले आए चीनी समाज के ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं आया। गांवों में जमीदार और सूदखोर, किसानों की छाती पर बैठे रहे। सरकार में पुराने भ्रष्ट नौकरशाहों का बोलबाला रहा। जन साधारण की स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया। क्रान्ति की आगेवानी, सेना के मध्यमवर्गी अफसरों ने की थी और उनका

समर्थन कर रही थी शहर की मध्यमवर्गी जनता। क्रान्ति की चालक शक्तियां अभी तक सोई हुई थीं। औद्योगिक सर्वहारा वर्ग का अभी अभाव था या वह अत्यन्त छोटी तादाद में था। विशाल कृषक जनता क्रांति के संघर्ष में अभी आई नहीं थी। उधर प्रतिक्रियावादी सामन्तवर्ग और साम्राज्यवादी, क्रांति की गति को रोकने के लिए सचेत थे। उन्होंने उग्र सनयातसेन पर विश्वास करना ठीक नहीं समझा और एक पुराने घोड़े पर दाँव लगाया।

यह शख्स एक पहले दरजे का अवसरवादी स्वार्थी और देशद्रोही था। पर मंचू राज्य का पुराना वफादार नौकर युआन शी-काई था। चूंकि विशाल जनता क्रांति के मोर्चे पर आ नहीं पाई थी और कोमिन्तांग अभी तक सुसंगठित और सुदृढ़ पार्टी बनी नहीं थी। इस अवसरवादी को अच्छा मौका मिल गया। क्रांतिकारियों के पास सेना और राज्य चलाने के लिए रुपया नहीं था और रुपया केवल साम्राज्यवादियों से उधार मिल सकता जो उसे अपने भरोसे लायक लोगो को ही दे सकते थे। नई परिस्थितियों मे युआन से अधिक विश्वस्त व्यक्ति मिलना कठिन था। ऐसी हालतों में दक्षिण पंथी दबाव मे आकर डॉ० सन ने अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देकर यूआन से अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव किया जिसे उसने सहर्ष स्वीकार किया। हर क्रांति के साथ कुछ ऐसे प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं जो क्रांति की शक्ति को कुचलना सभव न पाकर कुछ समय तक क्रांति के साथ हो जाते हैं, आगे गद्दारी करने के लिए। युआन भी ऐसा ही भेड़ की खाल पहना हुआ भेड़िया था। युआन के प्रेसिडेन्ट बनते ही चारों राष्ट्रों ने उसे थोड़ासा कर्ज दिया। सत्ता हाथ मे आते ही युआन और उसके साथी सामन्ती नौकरशाहों ने प्रगतिशील तत्वों का बेरहमी से दमन करना प्रारंभ किया। डा० सन को

भाग कर अपने गढ़ केन्टन की शरण लेनी पड़ी। जब साम्राज्य-वादियों को विश्वास हो गया कि उनके टुकड़खोर प्रगतिशील तत्वों का डट कर मुकाबला करने को तैय्यार हैं तो उन्होंने बड़े ऋण की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए १६ प्रतिशत तत्काल मुनाफे की दर पर २ करोड़ ५० लाख पौंड का कर्ज पुनः संगठन के लिए दिया। इस समय लेनिन ने साम्राज्यवादियों की इस साजिश का भंडाफोड़ करते हुए लिखा था—

"तुम्हे (साम्राज्यवादियो को) एक साथ कुछ हफ्तों में १ करोड़ ५० लाख रूबल का मुनाफा होगा। 'विशुद्ध मुनाफा' है न ? यदि चीन के लोगो ने यह ऋण स्वीकार नहीं किया तो ? चीन अन्ततः एक जनतंत्र है और वहाँ की पार्लामेन्ट में बहुमत ऋण के विरुद्ध है।

" ओह, तब 'उन्नत 'योरोप चीखेगा 'सभ्यता' 'व्यवस्था' 'सस्कृति' और 'राष्ट्र'। तब तोपे काम करना प्रारभ कर देंगी और 'पिछड़े' हुए एशिया का जनतत्र कुचल दिया जायगा और यह होगा ले भग्गू, गद्दार, प्रतिक्रियावादी युआन शी-काई से मिल कर।"

लेकिन यूआन की पार्लामेन्ट एक जेबी पार्लामेन्ट थी। उसमे से सभी प्रगतिशील लोगो को निकाल दिया गया। ऋण का अधिकांश भाग कोमिंतांग को कुचलने के काम लाया गया। डा० सन ने केन्टन और उसके इर्दगिर्द अपनी सरकार बनाई। देश के अधिकांश भाग पर युआन का निरंकुश राज रहा। इस कर्ज के बदले एक विदेशी अर्थ विभाग का ऑडिटर, एक अंग्रेज राजनैतिक सलाहकार, फ्रेंच सैनिक सलाहकार और डाकखाने के अधिकारी बनाये गये। यह भी निश्चित हुआ कि कस्टम की सारी आमदनी पहले ऋण की किस्तों को

चुकाने के लिए शंघाई और हांगकांग के विदेशी बैंकों में जमा कराई जाय। किस्तों के चुकाने के बाद यदि कुछ बचे तो वह चीनी सरकार को मिले। सन् १६१२ में नमक की आय भी ब्रिटिश हाथों में चली गई।

इस स्थिति का लाभ उठाकर जारशाही रूस ने बाहरी मंगोलिया को 'आजाद' कर अपने प्रभाव में ले लिया। अंग्रेजों ने बर्मा की सीमा को उत्तर में खिसका कर चीन के काफी प्रदेश को ले लिया। जापान दक्षिणी मंचूरिया में अपने प्रभाव को अधिकाधिक बढ़ाने लगा। ब्रिटिश, अमरीकी टोबेको कम्पनी उत्तरी चीन में तम्बाकू की खेती करा कर मालामाल होने लगी। यूआन की आधीनता मे चीन की स्थिति मंचूराज्य के समय से भी अधिक खराब हो चली। लेकिन उसे कर्ज मिलता रहा जिससे उसका काम चलता रहा। वह अब पक्का तानाशाह था। शासन की मशीन छिन्न भिन्न हो चुकी थी। अनुशासन टूट चुका था और कर वसूल करने वाले स्थानीय अधिकारी हथियार बन्द स्थानीय सामन्तों के साथ हो गये। समूचा चीन अब युद्ध सामन्तों के लिए आधार बन गया।

अब युआन को सम्राट बनने की सूझी और राजतन्त्र का प्रचार करने के लिए उसे एक योग्य अमरीकी फ्रेंक गुडनाऊ मिल गया। वह राजतन्त्र के, चीनी सभ्यता और संस्कृति के अनुकूल होने के गीत गाने लगा। १६१६ में युआन ने सचमुच अपने को सम्राट घोषित कर दिया। यदि चीनी जनता के सामने भावी समाज की रूप रेखा स्पष्ट नहीं थी तो भी उसे खूब मालूम था कि अतीत कि कौनसी चीज उसके लिए अच्छी नहीं थी। जगह २ राजतन्त्र के विरुद्ध आन्दोलन और बगावतें होने लगी और थोड़े ही दिनों में युआन मर गया। पुरातन

अंग्रेज़ी लोगों ने समझा कि युआन नवागन्तुक होने की वजह से राजतन्त्र स्थापित करने में असमर्थ रहा; अतः अब किसी खान्दानी व्यक्ति को राजा बनाया जाय। मंचू राजवंश के एक राजकुमार को जापान के आशीर्वाद से सम्राट घोषित किया लेकिन चीन में अब राजा रानियों के लिए कोई स्थान नहीं था। आधे एशिया ने राजतन्त्र को समाप्त कर दिया। नये सम्राट को जनता के क्रोध से बचने के लिए डच दूतावास में जाकर अपनी जान बचानी पड़ी।

प्रथम महायुद्ध

आपसी लागडांट के कारण विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतें चीन का बटवारा नहीं कर पाई थीं पर शोषण का हर द्वार खुल चुका था। इसी समय द्वितीय विश्वयुद्ध आगया और सभी ताकतों का ध्यान उधर चला गया। इस समय अपने योरोपियन प्रतिद्वन्दियों की अनुपस्थिति का लाभ उठाया जापान ने। उसने जर्मन प्रभाव क्षेत्र शान्टुग को अरक्षित पाकर अपने प्रभाव मे ले लिया। १६१५ में उसने चीन के सामने प्रसिद्ध २१ मांगे रखी–शान्टुग में जर्मनी को जो सुविधाएं थी वे सब जापान को मिले, जापान का दक्षिण मंचूरिया में कन्ट्रोल माना जाय, आन्तरिक मंचूरिया मे प्रवेश करने का अधिकार हो, फूकियन प्रान्त मे विशेष हित, चीन के एक मात्र स्टील के कारखाने में हित आदि-। ब्रिटेन तो जापान की पीठ पर था ही, अमरीका ने भी जापान के विशेष हितों को स्वीकार कर लिया! स्मरण रहे प्रथम महायुद्ध मे जापान की तरह चीन ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की थी फिर भी उस पर हुए आक्रमण के खिलाफ मित्र राष्ट्रों ने कोई अंगुली तक नहीं उठाई। चीन में जापान के इस व्यवहार के विरुद्ध

जापानी माल के सफल बहिष्कार और अन्य राष्ट्रो के दबाव के कारण वाशिंगटन कांफ्रेन्स मे जापान को शांटुग पर अधिकार छोड़ना पड़ा। सन् १९१७-१८ में जापान ने चीन पर नये कर्जे का बोझ डाल दिया और रूसी इन्कलाब से लड़ने के नाम पर मचूरिया को अपना रूस विरोधी सैनिक अड्डा बना लिया। वर्साई की संधि चर्चा मे चीन ने मांग की कि जापान ने युद्ध काल में उससे जो कुछ छीना है वह उसे वापस मिले लेकिन मित्र राष्ट्रों ने चीन की बात नही सुनी। एक मित्र राष्ट्र का और क्या अपमान हो सकता था! युद्ध के बाद एक नौ राष्ट्र सम्मेलन हुआ- अमरीका, बेलजियम, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली, जापान, हॉलैण्ड, पोर्तुगाल और चीन- इन नौ राष्ट्रों ने एक संधि की जिसकी पहली लाइन थी-

"चीन की सार्वभौमता, स्वतन्त्रता, अखण्डता और शासन सम्बन्धी एकता का सम्मान करना।" वाशिंगटन कांफ्रेन्स और नौ राष्ट्र सन्धि का लक्ष्य एक ही था कि कोई राष्ट्र चीन मे अकेले पैर न फैलाए

चीन में इस समय केन्द्रिय सरकार नाम मात्र के लिए रह गई थी। सारे देश में अराजकता और युद्ध सामन्तों का दौर था। हर प्रदेश का शासक अपनी निजी सेनाएँ रखता था और अपने अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए युद्ध सामन्त आपस में लड़ते रहते थे। इन युद्ध सामन्तों की पीठ पर साम्राज्यवादी थे। वे इन्हे शस्त्रों और रुपयों से मदद देते और उसके बदले में अपना उल्लू सीधा करते। जिस समय युद्ध सामन्त आपसी लड़ाइयों में चीनी जनता के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे थे एक बड़ा परिवर्तन अंगड़ाइयां ले रहा था। युद्ध के कारण विदेशो से व्यापार बन्द सा हो गया था अतः आड़तियों ने अपनी पूंजी को स्वदेशी उद्योगो में लगाना शुरु

किया। नानकिंग, केन्टन और शंघाई मे नये २ कारखाने खुले। एक नया औद्योगिक पूंजीपति वर्ग और साथ ही औद्योगिक मजदूर वर्ग उत्पन्न हुआ। यह दोनों वर्ग आगे आने वाली क्रान्ति के नेता होने वाले थे। १६१५ में पहले मजदूर संगठन का जन्म हुआ।

महायुद्ध मे १ लाख ४० हजार चीनी मजदूरों को भर्ती किया गया था। यह मजदूर योरप गये जहाँ मोर्चों पर खाइयां खोदने के अलावा उन्होने कारखानों मे काम किया। योरोपीय कारखानो में काम करते हुए उन्होने देखा कि गोरो के यहां भी दो वर्ग हैं। योरप की युद्धोत्तर हड़तालों मे भाग लेकर यह चीनी मजदूर नई वर्ग चेतना लेकर स्वदेश पहुंचे।

जापान के युद्धकाल में चीन पर जो दबाव डाला उसका जबाव चीनी छात्रों ने जंगी प्रदर्शनों हड़तालों और जापानी माल के वहिष्कार के रूप में दिया। वर्साई की सन्धि के विरोध में छात्रों और मजदूरों की इतनी प्रचंड हड़तालें और प्रदर्शन हुए कि चीन के ३ जापान पक्षी मंत्रियों को त्यागपत्र दना पड़ा और जापान भी सन्धि की शर्तों पर पुनः विचार करने के लिए तैयार हुआ। छात्र आन्दोलन के साथ ही प्रगतिशील महिला आन्दोलन भी प्रारम्भ हुआ। इन आन्दोलनों और जापानी माल के वहिष्कार, अमरीका के दबाव और लाल सेना द्वारा साइबेरिया से जापान को भगाने पर जापान की अक्ल कुछ ठिकाने आई और उसने १ करोड़ ४० लाख स्वर्णग्रेन के बदले चीन से छीनी गई कुछ सुविधाओं को लौटाना स्वीकार किया। इसी समय चीनी भाषा और लिपि में सुधार हुए। नये छापेखाने खुले और पुस्तको व पत्रों का प्रकाशन तेजी से बढ़ा।

महायुद्ध के बाद आनेवाले आर्थिक सकट ने नये औद्योगिक

विकास पर प्रहार किया। विदेशी प्रतियोगिता के मुकाबले में चीनी उद्योग धन्धों का खड़ा रहना मुश्किल होने लगा। साम्राज्यवादियों के अनुचित प्रभाव के कारण राष्ट्रीय उद्योगों को समुचित संरक्षण नहीं मिल सकता था। अतः नये पूंजी-पति वर्ग को एक ऐसे नेतृत्व की जरूरत थी जो चीन को एक कर सकता था, मजबूत बना सकता था और इसे साम्राज्यवादी प्रभाव से मुक्त कर सकता था। इन उम्मीदों को पूरा करने वाला केवल एक ही दल दिखाई देता था- वह था युद्ध सामन्तों के दबाव से मुक्त कोमिन्तांग और उसके नेता डॉ॰ सनयात सेन।

सोवियत क्रान्ति और चीन

रूसियों ने अक्तूबर क्रान्ति और दुनियां में पहले समाजवादी राज्य की स्थापना की। ...रूसियों ने मार्क्सवाद को अमली रूप दिया। अक्टूबर क्रान्ति के पूर्व चीनी न लेनिन और स्तालिन को जानते थे न मार्क्स और एंगल्स को ही। अक्तूबर क्रान्ति की रणभेरी ने हमें मार्क्सवाद, लेनिनवाद का ज्ञान दिया... हम उसी पथ पर चलें जिस पर रूसी चले आए हैं; यह हमारा निष्कर्ष था।

मावजे तुंग

प्रथम महायुद्ध में दुनिया को हिला देने वाली एक घटना हुई जो मानव इतिहास की अब तक की सबसे बड़ी घटना है। यह घटना थी बोल्शेविकों के नेतृत्व में लाल क्रान्ति - रूस में एक सर्वहारा क्रान्ति। यह एक ऐसी क्रान्ति थी जो देश की सीमाओं से बंधी न थी। यह दुनियाँ की एक नई करवट थी पूंजीवाद से समाजवाद की तरफ। यह एक ऐसी प्रेरणा थी

जिसने देश देश के शोषित और उपनिवेशिक गुलामी के शिकार करोड़ों इन्सानों को जगा दिया। चीन के लोग अक्टूबर क्रान्ति के रणनाद को सुनकर जागने वालों में प्रथम थे। अक्टूबर क्रान्ति के आगेवानो ने चीनी जनता के नाम सन्देश भेजा था।

"पूर्व के लोगों और सर्व प्रथम सर्वाधिक चीनी जनता का गला घोटने वाली, विदेशी पूंजी और विदेशी संगीनों के दमन से हम जनता की मुक्ति लिए आए हैं।"

और यह सन्देश साम्राज्यवादी नेताओं की शुभकामनाओं के संदेशों की तरह मौखिक नहीं था। इसके पीछे इन्कलाबी लगन थी, कुछ कर गुजरने की भावना थी। अन्य साम्राज्यवादी ताकतों की तरह जारशाही रूस ने भी चीन से असमान सन्धियां कर लूटने की छूट ले रक्खी थी। चीन के साथ जारशाही रूस का व्यवहार सदा अपमान जनक रहा। सोवियत सरकार ने इन तमाम असमान सन्धियों को बिना नई मांग या सुविधा के अपनी तरफ से खत्म करने का ऐलान किया। नये रूस ने सभी जातियों और राष्ट्रों के समान होने के सिद्धान्त को अमली रूप दे दिया। चीन और रूस ऐसे पड़ौसी हैं जिनकी हजारों मील समान सीमा है। रूस में होने वाले कायापलट से रूस बिल्कुल अछूता रहे यह असम्भव था। न केवल अक्टूबर क्रान्ति ने चीन को अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में रूस जैसा मित्र दिया जो उसके साथ समानता और न्याय का व्यवहार करता बल्कि स्वयं चीन में भी प्रगतिशील शक्तियो को जन्म दिया। नये चीन के अध्यक्ष मावजे तुंग के शब्दों में,

"रूस में होने वाली घटनाओं को मैने ध्यान पूर्वक देखा... मार्क्सवादी क्रान्तिकारी सिद्धान्तों और महान् अक्टू-

बर क्रान्ति से प्रभावित होकर मैंने सन् १६२० की सर्दी में चांगसा में मजदूरों का पहला राजनैतिक संगठन स्थापित किया।"

रूसी क्रान्ति से प्रभावित होकर १६२१ में चीन ने अपनी कम्युनिस्ट पार्टी को जन्म दिया। वह चीन के मजदूर वर्ग की प्रथम राजनैतिक पार्टी थी जो बाद में दुनियां भर में अपने शानदार कारनामों से पहचानी गई। कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म एक साथ चीन के बुद्धिजीवियोंऔर योरप स्थित चीनी छात्रों के आन्दोलन में हुआ। लेकिन शीघ्र ही इस छोटी सी पार्टी ने मजदूरो और किसानों के व्यापक संगठन बनाना प्रारम्भ किये। मावजे तुंग चीन में पार्टी के संस्थापकों में से था। चाऊ ऐन लाई पेरिस मे पढ़ता था और वहां पार्टी के आगेवानों में वह भी था। इसी तरह चू तेह बर्लिन में पार्टी की शाखा बनाने वालो में से एक था। शीघ्र ही कम्युनिस्ट पार्टी के इन्कलाबी झण्डे के इर्द गिर्द करोड़ो की संख्या में मेहनतकश जनता जागृत होने लगी। इस पार्टी के बनने से हजारों वर्षों के बूढ़े अफीमची चीन को एक नया जीवन, नई गति और पथ प्रदर्शन मिला।

आज से २५ वर्ष पूर्व सनयातसेन विश्व विद्यालय में भाषण देते हुए दुनियां के कम्युनिस्ट नेता स्टालिन ने कहा था कि चीन की घटनाएँ दो तरह से घट सकती हैं।

"राष्ट्रीय पूंजीपतिवर्ग कुछ हद तक, कुछ समय तक अपने देश के साम्राज्यवाद विरोधी क्रांतिकारी आन्दोलन का समर्थन कर सकता है।"·········

बाद में उन्होंने बताया कि

"या तो राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग सर्वहारा वर्ग को कुचल देता है, साम्राज्यवाद के साथ गठजोड़ा कर लेता है और

उसके साथ मिलकर क्रांति का विरोध करता है ताकि क्रांति का अन्त होकर पूंजीवाद का राज्य स्थापित हो।

अथवा, सर्वहारा पूंजीपति वर्ग को एक तरफ हटा देता है, अपने प्रभाव को मजबूत कर शहर और देहातों की श्रमिक जनता का नेतृत्व धारण करता है, पूंजीवादी प्रतिरोध को दबा देता है, पूंजीवादी जनतांत्रिक क्रांति को पूरा करता है और फिर उस क्रांति को समाजवादी क्रांति के पथ पर मोड़ देता है''

अक्तूबर क्रांति के प्रभाव से उत्पन्न हुए दल ने आगे जाकर स्टालिन की भविष्यवाणियों को सिद्ध किया। उसने न केवल मजदूर वर्ग की पार्टी को जन्म देकर उसका पथ प्रदर्शन किया; बल्कि उसने चीन के प्रजातंत्री आन्दोलन को बड़ी मदद पहुँचाई। प्रथम चीनी क्रांति के नेता डॉ० सनयातसेन तो रूस के व्यवहार से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने लिखा—

"यह कभी न भूलो कि आजाद रूस ने ये नारा बुलन्द किया था 'चीन में हाथ न डालो।' योरप के पूंजीपति भले ही इसकी मजाक उड़ावें यह विश्वास करते हुए कि इसका कोई असर नहीं हो सकता क्योंकि रूस और चीन बहुत दूर हैं। लेकिन सत्य यह है कि मास्को में लगाये गये नारों को स्थान की दूरी रोक नहीं सकती। वे सारी दुनिया में जोरों के साथ फैल जाते हैं और प्रत्येक श्रमिक हृदय से उनका समर्थन करता है.........। हम जानते हैं कि सोवियत कभी भी अन्यायपूर्ण पक्ष का समर्थन नहीं करेगा। अगर रूस हमारे साथ है तो सत्य हमारे साथ है और सत्यमेव जयते इसमें संन्देह नहीं, हिंसा पर न्याय की अवश्य विजय होगी।"

इंग्लैंड और अमरीका का रुख:—

महायुद्ध के समाप्त होने के पूर्व मित्र राष्ट्रों के नेताओं ने

बड़ी २ आदर्शवादी घोषणाएँ की। राष्ट्रों के आत्म निर्णय के अधिकार को स्वीकार करने का एलान किया। अमरीका के राष्ट्रपति विल्सन के भाषणों से तो लगता था मानों एक नई बेहतर दुनियाँ जन्म लेने जारही है। चीन के देश भक्तों ने बड़ी उम्मीदों के साथ पश्चिम की तरफ देखा। महायुद्ध के समाप्त होने पर अन्तरराष्ट्रिय सम्मेलनों में चीन के साथ जो व्यवहार हुआ उससे वे खिन्न जरूर हो गये थे लेकिन उनकी उम्मीदें पूरी तरह से टूटी नहीं थीं। उन्हें विश्वास था कि अच्छी तरह समझाने पर पश्चिमी राष्ट्र पूरी तरह से चीन की मदद करेंगे। इसी लक्ष्य से डॉ० सन ने एक पुस्तक में पश्चिमी राष्ट्रों से प्रस्ताव किया कि वे चीन को टेकनिकल सहायता दें; उचित मुनाफे पर पूंजी लगावें, लेकिन चीन की सार्वभौमता को अक्षुण रखें। उन्होंने बताया कि महायुद्ध में खून खच्चर करने के लिए जितनी पूंजी बहाई गई थी उसके एक नगण्य भाग को चीन में सृजनात्मक कामों के लिए लगाने पर चीनी राष्ट्र उठ खड़ा होगा। इस प्रकार पूंजी लगाने पर पश्चिम को अनेक लाभ होंगे, विशेषकर वहाँ बेकारी मिटेगी क्योंकि कल कारखाने चीन की जरूरतों को पैदा करने में लगे रहेंगे। उन्होंने पश्चिमी शक्तियों से अपील की, कि वे चीन में एक सच्ची और स्थाई जनतांत्रिक सरकार की स्थापना के लिए प्रयास करें। डॉ० सन ने अपने एक मित्र मोरिस कोहेन को अमरीका और केनेडा में सैनिक अफसर भरती करने भेजा। अनेक अफसरों ने व्यक्तिगत रूप से चीन में आकर काम करना स्वीकार किया लेकिन वहाँ की सरकारों ने उन्हें प्रगतिशील चीन की सेवा करने नहीं जाने दिया। इस प्रकार फिर इस कथन की पुष्टि हुई कि दलित देशों विशेषकर चीन में साम्राज्यवादी सदा से प्रतिक्रियावादी तत्वों का पोषण करते रहे हैं। कोमिन्तांग का आज समर्थन करने वाले

अंग्रेज अमरीकी साम्राज्यवादियों ने डॉ० सन की अपील को अनसुना कर दिया और पेकिंग की कठपुतली सरकार व युद्ध सामन्तों की मदद करते रहे।

"डॉ० सन ने कोशिश की कि विदेशी मदद से देश की औद्योगिक प्रगति की जाय और उसे सुव्यवस्थित किया जाय। विशेषकर इन्हें अमरीका व इंग्लैंड से उम्मीदें थी लेकिन न तो यह दो राष्ट्र न कोई अन्य साम्राज्यवादी ताकत उनकी मदद के लिए आई। वे सब चीन के शोषण में दिलचस्पी लेते थे न कि उसके कल्याण और शक्तिसम्पन्न होने में। तब १६२४ में जाकर डॉ० सन ने रूस की तरफ हाथ बढ़ाया।"

पं० नेहरु (विश्व इतिहास की झलक)

डॉ० सनयातसेन और उनके साथियों के पास इसके सिवाय और कोई चारा न था कि वे रूस की तरफ देखते। रूस चीन के साथ तमाम असमान सन्धियों को समाप्त कर चुका था, चीन में अपने सारे विशेषाधिकारों को छोड़ चुका था और चीन के साथ एक समान राष्ट्र सा व्यवहार करने के लिए हाथ आगे बढ़ा चुका था। क्रान्ति के बाद गृहयुद्ध से अब रूस निकल चुका था। यद्यपि विदेशों में लगाने के लिए उसके पास पूंजी नहीं थी। पर उसके पास अनुभवी राजनैतिक और सैनिक सलाहकार थे। रूस ने अपना अनुभव, अनुभवी व्यक्ति और कुछ शस्त्र डॉ० सन को दिये। सोवियत सलाहकारो का एक दल केन्टन आया जिसने कोमिन्तांग, सेना व सरकार का नये सिरे से संगठन करने में बड़ी मदद की।

इस मैत्री के परिणाम स्वरूप डॉ० सन या कोमिन्तांग ने कम्युनिज्म नहीं अपना लिया जैसा कि अनेक साम्राज्यवादी पत्रो ने प्रचार किया। और रूस ने कम्युनिज्म का ध्येय छोड़ दिया।

दोनों ने एक दूसरे की सीमा को अच्छी तरह पहचान कर एक नये संयुक्त कार्यक्रम को जन्म दिया। डॉ० सन को सोवियत सलाहकारों ने बताया कि चीन की प्रतिक्रियावादी शक्तियों को चाल बाजियों, षडयंत्रों या अन्य पुराने तरीकों से पराजित नहीं किया जा सकता। अगर सचमुच पुरानी शक्तियों को हराना ही है तो विराट जनता को प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध संघर्षों में उतारना पड़ेगा। जनता को अब निष्क्रिय, अचेत सावधान बनाने से काम नहीं चलेगा। डॉ० सन भी अब तक देख चुके थे कि मध्यवर्गी पढ़े लिखे लोग और व्यापारी ही नये चीन को बनालें यह संभव नहीं।

सोवियत सलाह के अनुसार कोमिन्तांग अब एक राजनैतिक पार्टी से सयुक्त राष्ट्रीय मोर्चे मे बदल गई। वह अनेक जन-सगठनों की राष्ट्रीय परिषद् सी बन गई। कम्युनिस्ट पार्टी ने यद्यपि अपना अस्तित्व अलग रक्खापर वह इस सँयुक्त मोर्चे का अंग था। उनकी नीति थी, अलग रहे लेकिन दुश्मन पर मिल कर चोट करें। दोनो का संयुक्त लक्ष्य था सामन्तवाद और साम्राज्यवाद को चीन में दफना देना। केन्टन में उसके परिणाम स्वरूप लगान मे कमी कर उसे २५ ०/० तक निश्चित कर दिया। काम के घण्टे ८ हुए और मजदूर किसान संगठनो को आजादी मिली। इस नये मेल का सारे चीन पर असर पड़ा। जनता तेजी से प्रगति करने लगी। शंघाई, केन्टन और हेकों में आर्थिक और राजनैतिक मांगों के लिए मजदूरों की छुटपुट हड़ताले आम हड़तालों में बदल गई। मजदूरो और छात्रो के जबरदस्त प्रदर्शन किये, साम्राज्यवादी हस्तक्षेपों को रोकने के लिए। केन्टन के मजदूरो पर विदेशी बस्ती मे चलाई गई गोली पर हांग कांग के मजदूरों ने हड़ताल करदी जो दुनियां की सबसे बड़ी हड़तालों में से है। शंघाई की सूती मिलों के मजदूरों की

हड़ताल में एक हड़ताली मारा गया उसकी स्मृति में जंगी साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शन हुए। शंघाई में इस प्रदर्शन पर अंग्रेज पुलिस अफसरों ने गोली चलाई जिससे बहुत से विद्यार्थी मारे गये। अंग्रेजों के खिलाफ चीन भर में गुस्सा फैल गया और ब्रिटिश विरोधी प्रदर्शन हुए। केन्टन मे ऐसे प्रदर्शन पर फिर अंग्रेजों ने मर्शनगन चलाई जिससे ५२ व्यक्ति मरे व अनेक घायल हुए। इससे साम्राज्यवाद विरोधी जोश को और बल मिला विशेष कर ब्रिटिश माल का बहिष्कार कर चीनियो ने एक लम्बे अर्से तक हांगकांग का व्यापार ठप्प कर दिया। साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलन के साथ ही स्वयं सेवक सेना का निर्माण हुआ।

अब तक कोमिन्तांग की सेनाएँ भी अन्य चीनी सेनाओं की तरह भाड़े के सिपाहियों से भरी हुई थी। इस सेना ने चीन को एक करने के लिए एक दो असफल प्रयत्न भी किये थे जिससे साफ हो गया कि ऐसी सेनाओ के बल पर राष्ट्र को एक नहीं किया जा सकता। अब नये सिरे से देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत एक नई लोक सेना की शिक्षा प्रसिद्ध रुसी सेनापति मार्शल बनूचर की सलाह के अनुसार होने लगी। वाम्पिया में एक सैनिक विद्यालय खोला गया जहाँ अफसरों की ट्रेनिंग होने लगी। च्यांगकाईशेक इस एकेडेमी का सभापति और कम्युनिस्ट नेता चाऊऐनलाईडीन था।

इसी समय डॉ० सनयात सेन ने अपने प्रसिद्ध तीन सिद्धान्तों की घोषणा की जिन्हें सभी दलों ने एक राय से स्वीकार किया। बाद में यह तीन सिद्धान्त बड़े वादविवाद के विषय बने। इन सिद्धान्तों को लेकर कुछ लोगों ने सन को केवल एक राष्ट्रवादी ही माना तो दूसरो ने उन्हें कम्युनिस्टों के निकट बैठा दिया। इन तीन सिद्धान्तों की दुहाई कम्युनिस्ट और कोमिन्तांग समान

रूप से देती रही। दर असल डॉ० सन एक उग्र राष्ट्रवादी और उदार सोशलिस्ट थे। यह तीन सिद्धान्त थे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, जनतंत्र और लोगो के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना। इन तीन सिद्धान्तों के साथ सन ने तीन महान् नीतियों को निश्चित किया साम्राज्यवाद का विरोध, रूस के साथ सहयोग, व मजदूर किसान आन्दोलन को प्रोत्साहन। डॉ० सन ने मरने के पहले अपनी वसीहत लिखाई जिसमें उन्होंने कहा कि मैंने अपने जीवन भर चीन की मुक्ति और उत्थान के लिए काम किया लेकिन 'क्रांति' अभी तक पूरी नहीं हुई है।' उन्होंने अपने साथियों को आदेश दिया कि वे क्रांति को पूरा करने के लिए काम करें व रूस के साथ मित्रता रखें। डॉ० सन की विधवा पत्नी ने इस आदेश को पूरा करने के लिए स्व० डॉ० का काम जारी रखा और आज भी वे नये चीन की उपाध्यक्षा व सोवियत-चीन मित्र संघ की अध्यक्षा हैं।

मरने के पहले डॉ० सन ने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के नाम एक सन्देश भेजा था।

"प्यारे कमरेडों,

दुनियां की दलित मानवता को अमर लेनिन की देन—स्वतंत्र जनराज्यों के संघ-के तुम नेता हो। इस देन के परिणाम स्वरूप अतीत की गुलामी, युद्धों और अन्याय पर आधारित अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवाद के शिकार अवश्य ही आजादी और मुक्ति प्राप्त करेंगे।"

सोवियत और चीन के भावी संबंधों का हम आगे अलग २ स्थानों पर विश्लेषण करेंगे।

क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति

"I am Chang from foundries
On strike in the streets of Shanghai
For the sake of Revolution
I fight, I starve, I die,"

"मैं फाउंडरी का चांग हूँ— चांग
जो शंघाई की गलियों में हड़ताल पर है—
क्रांति के लिये मैं लड़ता हूँ; भूखों मरता हूँ और मरता हूँ।"

चीन को एक करने, युद्ध सामन्तों का प्रभाव नष्ट कर, असमान सन्धियों का अन्त कर डॉ० सन के सिद्धान्तों को अमली रूप देने के लिए उसकी मृत्यु के कुछ महिने बाद १९२६ मे राष्ट्रीय सेना ने केन्टन से उत्तर की तरफ कूच किया। ६० हजार सैनिकों की यह विजयवाहिनी राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत थी। इसका नेतृत्व कर रहे थे। रूसी सलाहकारों द्वारा शिक्षित वाम्पिया एकेडेमी के तरुण अफ़सर। सेना के

आगे एक और अदृश्य सेना चल रही थी। यह सेना थी कम्यु-निस्ट प्रचारकों की जो गांवों में जाकर किसानो का संगठन करते, जमीदारों के हथियार बन्द दस्तों को निशस्त्र कर राष्ट्रीय सेना का मार्ग साफ करते। इन प्रचारको ने अकेले हूनान प्रांत में ४ लाख किसानों को युद्ध सामन्तों के विरुद्ध राष्ट्रीय सेना की सहायता के लिए सगठित किया। इनकी कुशलतासे स्थानीय सामन्तो का प्रतिरोध बिना किसी युद्ध के समाप्त हो गया। किसान सभा की सदस्य संख्या २० लाख पर पहुंच गई। मज-दूर संघो और व्यापारी सगठनों की मदद से उन्होंने शीघ्र ही स्थानीय 'जनता की सरकारें' स्थापित करली। बड़े २ जमीदार अपनी जमीदारियों को छोड़ कर भाग गये। जो मजिस्ट्रेट नहीं भागे उनका काम रह गया था जनता की सरकार के आदेशों पर हस्ताक्षर करना। किसान सभाओं ने अतिरिक्त अनाज पर अधिकार कर उसे गरीबों में सस्ते दामो पर बेच दिया। आय का कुछ भाग शिक्षा पर खर्च होने लगा। थोड़े से समय में ही चीनी किसानो की सृजनात्मक शक्ति अपना विधायक रूप दिखाने लगी। हजारों वर्षों से सामन्ती गुलामी के शिकार आजाद इन्सानों की तरह उठ कर जनवादी तरिकों से अपनी समस्याएँ हल करने लगे।

जून १९२६ को केन्टन से चली राष्ट्रीय सेना ११ जुलाई को चांगसा के द्वार पर थी। ११ अक्टूबर तक सभी वूहान शहर उसके हाथ में थे। केन्टन से राष्ट्रीय सरकार हैंको चली आई। यह चीन का औद्योगिक इलाका है जहां मजदूर वर्ग अपने प्रभाव को काम में ला सकता था। सरकार के यहां आने से उस पर वामपक्षी प्रभाव बढ़ गया। शहरों में मजदूर अपनी हड़तालो, संघर्षों और हथियारबन्द तैयारियों से युद्ध सामन्तों और साम्राज्यवादियों के मन्सूबों को मिट्टी में

मिलाने लगे। जिस शहर पर राष्ट्रीय सेना का अधिकार हो जाता, मजदूर संघ तेजी से बढ़ते और मालिकों के सामने अपनी मांगे रख कर, लड़ झगड़ कर अपनी मजदूरी बढ़वाते। हेकों पर अधिकार होते ही वहां के मजदूरों ने हड़ताल कर अपना वेतन बढ़ाया। कुलियों की तनखा ४ रुपये माहवार से ६ माहवार तक होगयी। कोमिन्तांग के जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने के प्रोग्राम को अमली रूप मिला। युद्ध सामन्त उनके अफसर और सैनिक भी अब क्रान्ति की गति को रोकने में अपने को असमर्थ पाकर राष्ट्रीय सेना में मिलने लगे। १ वर्ष के भीतर आधे चीन पर राष्ट्रीय सेना का अधिकार होगया।

राष्ट्रीय सेना को अब आसानी से विजय श्री मिलती रही। इससे उसके हौंसले बहुत बढ़ गये थे। अब सवाल था कि शंघाई पर अधिकार किया जाय या नहीं। इस पर कौमिन्तांग में दो मत थे। बहुमत इस राय का था कि पहले विभिन्न इलाकोंमें अपने प्रभाव को अच्छी तरह जमा लिया जाय और फिर सारे उत्तरी चीनको फतह कर पेकिंग व शघाई को लिया जाय। यही बोरोडिन की राय थी। उसके अनुसार इस प्रकार समूचे चीन में एकता होती जायगी और तब साम्राज्यवादी ताकतों से उनके प्रभाव क्षेत्रों में जाकर निपटना उचित होता।

"क्रान्तिकारी बोरोडिन ने यह सावचेती की राय दी क्यों कि एक स्थिति में विभिन्न तत्वों को समझने मे वह अनुभवी था। लेकिन कोमिन्तांग का दक्षिण पंथ और विशेष कर प्रधान सेनापति शंघाई पर आक्रमण करने का समर्थक था। शंघाई को लेने की इस इच्छा के असली कारण का तब पता लगा जब कोमिन्तांग दो भागों में बंट गई। मजदूर और

किसान संगठनों की बढ़ती हुई ताकत को यह दक्षिण पंथी नेता फूटी आंख से नहीं देख सकते थे। अतः उन्होंने इन संगठनों को कुचलने का निर्णय किया चाहे परिणाम स्वरूप पार्टी दो टुकड़ों में बंट जाय और राष्ट्रवादी उद्देश्य को हानि पहुंचे बहुत से जनरल जमीदार थे। शंघाई चीनी पूंजीपतियों का मुख्य केन्द्र था। दक्षिणपंथी जनरल उनसे मदद की उम्मीद रखते थे। उन्हें उम्मेद थी कि पूंजीपति रुपये आदि से वाम-पक्षियों के विरुद्ध विशेष कर कम्युनिस्टों के विरुद्ध उनकी मदद करेंगे। इस लड़ाई में उन्हें विश्वास था कि विदेशी बेंकर और चीनी उद्योगपति उनकी सहायता करेंगे।"

—नेहरु (विश्व इतिहास की झलक)

अतः हेंको सरकार के आदेश के विरुद्ध च्यांग काई शेक ने शंघाई की तरफ कूच किया। चीनी क्रांति के ज्वार को कम आंकने वाले साम्राज्यवादियों ने अपने इस अड्डे पर सैनिक शक्ति संग्रह करना प्रारंभ किया। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान से काफी सेना यहाँ मंगाली। अंग्रेज, अमरीकी और फ्रेंच साम्राज्यवादियों का इरादा था ताइपिंग विद्रोहियों की भाँति इस बार फिर शंघाई मे राष्ट्रीय सेना को समाप्त करना। विदेशी व्यापारी तो खुले आम युद्ध में उतरना चाहते थे लेकिन उनकी सरकारों ने इतना आगे बढना ठीक न समझ कर युद्ध सामन्तों की पीठ ठोकना उचित समझा। लेकिन नये चीन की विजयवाहिनी और जाग्रत जनता के प्रयत्नों के आगे साम्रा-ज्यवादियों के मन्सूबे ज्यों के त्यों धरे रह गये।

चाऊ ऐन लाई का साहसः—

नये चीन के वर्तमान प्रधान और विदेश मंत्री चाऊ ऐन लाई युद्ध सामन्तों और साम्राज्यवादियों की योजनाओं पर पानी

करने के लिए गुप्त रूप से शंघाई पहुँचे। इस समय इस प्रतिभा सम्पन्न क्रान्तिकारी की उम्र केवल २८ वर्ष की थी और उन्हें मजदूर आन्दोलन का कोई व्यवहारिक ज्ञान नहीं था। ३ महिने में उन्होंने शंघाई के ६ लाख मजदूरों को इन्कलाबी एकता में बांध कर आम हड़ताल करादी। आम हड़ताल हो गई, व्यापार यातायात आदि ठप्प होगये लेकिन शहर पर अधिकार कैसे हो यह विकट प्रश्न था। कुछ समय बाद फिर आम हड़ताल हुई। इस बार मजदूरों को डराने के लिए युद्ध सामन्तों ने कुछ नेताओं को पकड़ कर उनके सर काट डाले। लेकिन यह दमन भी मजदूरों को दबाने में कामायाब नहीं हुआ। अब चाऊ और उसके साथी कम्युनिस्टों ने ५००० मजदूरों का एक दस्ता संगठित किया। इन में से २००० को गुप्त रूप से सैनिक तालीम दी गई। चोरी से शस्त्र संग्रह किया गया और ३०० बहादुरों की एक सशस्त्र टुकड़ी संगठित की गई। २१ मार्च १९२७ को ६ लाख मजदूरों ने फिर कम्युनिस्ट नेतृत्व में आमहड़ताल करदी। एशिया के सबसे बड़े नगर में जनता ने पहली बार बेरीकेड़ खड़े कर दिये। मजदूरों के हथियार बन्द दस्तों ने पहले पुलिस स्टेशनों और शस्त्रागारो पर अधिकार जमा लिया। फिर ५ हजार सशस्त्र मजदूरों ने फौजी स्थानों पर कब्जा कर शंघाई के चीनी भाग को साम्राज्यवाद के पिट्ठुओं से मुक्त कर दिया। दुनियाँ के चौथे बड़े शहर में 'नागरिकों की सरकार' का ऐलान किया गया। पूर्वी दुनियाँ के इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना थी।

कुछ दिन बाद जब च्यांग काई शेक आया तो उसे पता लगा कि शंघाई पर विजय हो चुकी है। मजदूरों और जनता ने च्यांग का स्वागत किया और शहर उसके हाथों में सौंप दिया। साम्राज्यवादियों और युद्ध सामन्तों की सीधी कार्यवाही से

क्रान्ति की गति को रोकने की योजनाएँ धरी रह गई।

क्रान्ति के साथ गद्दारी—

शंघाई पर च्यांग का अधिकार हुए महिना भर ही हुआ था कि शहर की सड़कें खून से लाल हो उठीं, लाशों के ढेर लग गये। यह खून किसका था ? यह लाशें किनकी थीं ? साम्राज्यवादियों और उनके पिट्ठुओं की ? नहीं। यह खून था उन बहादुर मजदूरों का जिन्होने साम्राज्यवादियो की योजनाओं को मिट्टी मे मिला दिया था। जिन्होंने युद्ध सामन्तों के गढ़ को भीतर से ले लिया था। जिन्होने च्यांग के गले विजय श्री पहनाई थी। और यह खून बहाया च्यांगकाई शेक ने। शघाई के ५००० मजदूर आगेवानों का खून बहाया गया। उसकी खूनी प्यास यहाँ रुकी नहीं। इन्कलाबी छात्रों और बुद्धिजीवियों का खून बहाया गया। उन्हें जेलो में सड़ाया गया। सारे चीन में प्रगतिशील लोगों का एक नरमेध रचा गया। जो बचे उन्हें अपनी जान बचाने के लिए छिपना पड़ा या देश छोड़ना पड़ा। यह आक्रमण विशेष तौर पर कम्युनिस्टों के खिलाफ था।

रक्त पात क्यों ?

कोमिन्तांग का संयुक्त राष्ट्रीय मोर्चा एक पंचमेल खिचड़ी था जिसमें परस्पर विरोधी हित वाले विभिन्न वर्ग अपने २ स्वार्थों के कारण एक दूसरे के साथ हो लिये थे। इनमें एकता बनाए रखने वाला सर्वमान्य नेता डॉ० सनयात सेन की मृत्यु हो चुकी थी। डॉ० सन के रहते यह विरोध खुले रूप में इसलिए भी नहीं आया था कि अभी तक विजय के फलो को बाँटने का प्रश्न भी पैदा नहीं हुआ था। अभी तो समान लक्ष्य था औपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति पाना।

उपनिवेशों के सभी वर्ग साम्राज्यवादी गुलामी से मुक्ति

चाहते हैं। लेकिन सभी यह मुक्ति अपने लिए चाहते हैं। सामन्त लोग यदि पश्चिमी राष्ट्रों से मुक्ति चाहते हैं तो केवल इसलिये कि उनका विगत सामन्ती वैभव और गौरव लौट आवे, उनका ऐशोआराम बना रहे और साम्राज्यवाद के मरने के पूर्व उन्हें शासन और शोषण करने का जो अधिकार था वह लौट आवे। पूंजीपति वर्ग जब आजादी चाहता है तो अपने वर्ग स्वार्थों के लिए ही। पूंजीपतिवर्ग के लिए स्वतंत्रता का अर्थ है— देश में अपनी सरकार हो जो स्थानीय पूंजी को बढ़ावा देती रहे और उसकी प्रबल विदेशी पूंजी की प्रतियोगिता से रक्षा करती रहे। जो विदेशी धन्धों के मुकाबले में स्थानीय धन्धों को सरकारी संरक्षण दे। जो सस्ता कच्चा माल प्राप्त करने और सस्ती मजदूरी मिलने की हालतें पैदा करे अर्थात् विदेशी पूंजीवाद की जगह देशी पूंजीवाद को शोषण की पूरी छूट दे।

लेकिन उपनिवेशों के मजदूरों और किसानों के लिए आजादी का अर्थ इसका उल्टा ही है। एशिया के करोड़ों मजदूरों, खेत मजदूरों, गरीब किसानों और कुचले हुए मध्यम-वर्ग के लिए आजादी का एक और अर्थ है। उनकी आजादी का मतलब है उन्हें भर पेट खाने को मिले, तन ढकने को पूरा कपड़ा मिले, रहने को स्वास्थ्यप्रद मकान हो। उनके लिए आजादी का अर्थ है उनके कंधों पर से साम्राज्यवादी पूंजीवादी सामन्ती व्यवस्था का जिमा उतर जाय। उनकी बेहतर जिन्दगी का अर्थ है शोषण की सभी अवस्थाएँ समाप्त हों। साफ है शोषक और शोषित वर्ग की आजादी उपनिवेशों में भी एक दूसरे से मेल नहीं खाती।

चीन के पूंजीपति और व्यापारी साम्राज्यवादियों के विरुद्ध थे और उनके प्रभाव को हटा कर चीन को एक व मजबूत बनाना चाहते थे। वे तटकर लगाने वाली, उद्योग धन्धों

को संरक्षण और प्रोत्साहन देने वाली सरकार चाहते थे जिसके राज में मजदूर और किसान आन्दोलन न हो ताकि सस्ते मजदूर और सस्ता कच्चा माल प्राप्त कर अधिक से अधिक मुनाफा कमाने की छूट हो। इन पूंजीपतियों में से कुछ तो स्वयं जमींदार भी थे अथवा कृषि में सामन्ती रिश्तों से उनका गहरा संबंध था। कोमिन्तांग सेना के अफसर व युद्ध सामन्तों की जो सेनाएँ राष्ट्रीय सेना में मिल गई थीं उनके अधिकांश अफसर जमींदार और अफसरों के बेटे थे। यह लोग चीन को मजबूत राष्ट्र देखना चाहते थे लेकिन उन्हें साम्राज्यवाद से अधिक खतरनाक दिखाई देती थी देहात की कम्युनिस्ट नेतृत्व में किसान जाग्रति। पूंजीपति साम्राज्यवादियों से अधिक, मजदूरों की एकता व हड़तालों से भय खाते थे। शोषक वर्ग जनता का साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में भाग लेना पसन्द करते थे लेकिन उसका फायदा अपने लिए सुरक्षित चाहते थे। उत्तर की ओर अभियान करती हुई सेना के अफसर किसान क्रांति से अपने सामन्ती स्वार्थों के डूबने का खतरा देखकर सजग हो गये थे अपनी ही जनता के खिलाफ। मजदूरों की दिनों दिन बढ़ती हुई हड़तालों को देखकर पूंजीपति सहम गये। उतरी अभियान के दौरान में ही राष्ट्रीय पक्ष के परस्पर विरोधी वर्ग-स्वार्थ टकराने लगे लेकिन उन्होंने कोई उग्र रूप धारण नहीं किया। च्यांग ने प्रारंभ में केन्टन में कुछ वामपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर उनके असर को रोकने की असफल चेष्टाएँ जरूर की थी।

साम्राज्यवादी और उनके पट्ठे राष्ट्रीय सेना की प्रगति को रोक नहीं सके। शंघाई को उनकी हथियार बन्द साजिशें बचा न सकी। लेकिन इस बार उन्होंने एक अचूक शस्त्र उठाया। यह शस्त्र था फूट का, क्रांति की शक्तियों को बारह

बाँट करने का। उन्होंने राष्ट्रीय मोर्चे की कमजोरी की तरफ देखा। उन्होंने देखा कि चीन के स्थिर स्वार्थ स्वयं क्रांति की प्रगति से घबरा रहे हैं और उसका साथ छोड़ कर हमारे समीप आने को तैयार हैं। साम्राज्यवाद को चीन में सदैव 'मजबूत व्यक्ति'' की जरुरत रही– ऐसा 'मजबूत व्यक्ति' जो चीनी जनता के लिए मजबूत हो लेकिन साम्राज्यवाद के आगे कमजोर न हो। राष्ट्रीय मोर्चे में कुछ लोगों को खरीदे बिना खैर न थी और कुछ लोग अपने को बेचने के लिए बाजार मे थे और जनरल च्यांग से अधिक लोकप्रिय, योग्य और वफादार व्यक्ति कौन मिल सकता था जो अपनी दक्षिण पंथी प्रवृत्तियों का परिचय दे चुका था। वह सनयातसेन का प्रमुख शिष्य और उत्तरी अभियान का सफल सैनानी था। इस नई नकाब की स्थिति युआन-शी-काई और दूसरे युद्ध सामन्तों से भिन्न थी। वह एक उभरती हुई क्रांति का लोकप्रिय सैनिक नेता था। युद्ध सामन्तों के मुकाबले में वह बहुत प्रबल था, उसकी पीठ पर चीन का पूंजीपति वर्ग था अतः उसकी सौदा पटाने की स्थिति पहले के प्रतिक्रियावादियों के मुकाबले में बहुत अच्छी थी। वह एक दलाल नहीं; भागीदार बनने की हैसियत रखता था और शंघाई विजय पर च्यांग जनता के पक्ष को छोड़कर साम्राज्यवादी पक्ष में चला गया।

शंघाई की फ्रेंच बस्ती के पुलिस अधिकारियों ने एक बदनाम अफीम के करोड़पति व्यापारी के जरिये च्यांग से मेल स्थापित किया। विदेशी बस्ती के प्रधान अमरीकी स्टर्लिंग फेसेनडेन ने च्यांग के हथियारबन्द गुण्डों को विदेशी बस्ती मे मार्च करने का गौरव प्रदान किया। च्यांग की सेना को टिकाए रखने में पूंजीपतियों ने उसे भरपूर रुपया दिया। च्यांग ने क्रान्ति से भय खाए शोषितवर्ग का दलाल बन कर क्रान्ति

पर खुला वार कर दिया। शंघाई की सड़कों के पश्चात् केन्टन और दूसरे स्थानों के बाजार कम्युनिस्टों, वामपन्थियों, मजदूर और किसान नेताओं के खून से लाल हो गये। मारपीट और गिरफ्तारियो का दौरा शुरु हो गया। थोड़े ही दिनों में कोमिन्तांग का अंग कम्युनिस्ट पार्टी गैर कानूनी करार देदी गई जिसका सदस्य होने का अर्थ था मृत्युदण्ड। मजदूर और किसान सगठनों को जबरदस्ती खत्म करने के प्रयत्न किये गये। जिस समय च्यांग क्रान्ति के साथ गद्दारी कर रहा था कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व ढिलमिल मध्यमवर्गी बुद्धिजीवियो के हाथ में था। च्यांग के हमलो का दृढ़ता पूर्वक जबाब देकर क्रान्ति का नेतृत्व करने के स्थान पर इन कायरों ने घुटने टेकना ठीक समझा।

सोवियत से सम्बन्ध विच्छेद

जब से डॉ० सन ने सोवियत से सहयोग किया था पश्चिम राष्ट्र डॉ० सन, च्यांग और सोवियत के विरुद्ध लगातार प्रचार करते रहे। इस बारे में सदा की तरह बे सिर पैर की बातें उड़ाई गई और यहां तक कहा गया कि च्यांग एक कम्युनिस्ट है और मास्को का एजेन्ट है। अब उन्होंने नया राग अलापना शुरु किया कि रूस चीन को हड़पने जारहा था लेकिन च्यांगकाईशेक की सावधानी और देशभक्ति के कारण रूस का मनोरथ असफल हो गया। साम्राज्यवादियों के इशारे पर पेकिंग स्थित सोवियत दूतावास पर आक्रमण किया गया और सफेद रूसियों (क्रान्ति विरोधी अमीर भगोड़ो) की मदद से जाली दस्तावेज तैयार कर छपाए गये और इस तरह रूसी षड़यन्त्रों का भण्डाफोड़ किया गया। इन दस्तावेजों के बारे मे तत्कालीन अमरीकी पत्रकार रोलेन्ड गाऊड ने लिखा था।

"यह दस्तावेज अत्यन्त भद्दी किस्म की जालसाजी से भरे हुए थे जिन्हें सफेद रूसी भगोडों ने तैयार किया था......यहाँ तक कि उनकी वर्णमाला भी पुरानी थी। जिसमें सुधार हो चुका था और जिसे सोवियत सरकार काममें नहीं लाती थी।"

सोवियत सलाहकार वापिस भेज दिये गये, दूतावास बन्द कर दिये गये और सोवियत सम्पत्ति पर आक्रमण किये गये। सोवियत विरोधी प्रचार का आश्रय लिया गया। केन्टन, कम्यून के बाद सोवियत दूतावास पर आक्रमण कर वहाँ के रूसी कर्मचारियों का खून किया गया, स्त्रियों के गुप्तांगों में डन्डे डाल कर उन्हें मारा गया। यह था प्रतिक्रियावादियों की सहायता का बदला। सभी पश्चिमी राष्ट्र कोमिन्तांग की इस नई नीति से संतुष्ट हो गये। उनके स्वार्थों की रक्षा करने वाला चीनी पहरेदार उन्हें मिल गया। लेकिन एक राष्ट्र था जो इतने पर भी संतुष्ट न था— वह था पूर्वीय साम्राज्यवादी डाकू— जापान।

अन्धकार के बादल

ओ मेरी मातृभूमि ! केवल तेरे स्वप्न ही रक्तरंजित नहीं है ।

—ऐनी (एक ताजिक कवि)

अमीरीकी पत्रकार अन्नालुईस्ट्रांग से बात करते हुए चीनी नौजवान ने कहा 'हजारो वर्षों तक सामन्तों के राज्य के बाद अब एक परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन किसानों में आया है। पर तुम विदेशी लेखक इसे समझ नहीं पारहे हो ...... चीन पर लिखी गई ये विभिन्न पुस्तकें अच्छी है लेकिन इनमें तुम कभी किसी किसान से नहीं मिलते और चीन में $\frac{4}{5}$ लोग किसान हैं।" किसानों की अवस्था और उनके संघर्षों के समझे बिना चीन और ऐशिया के देशों की वर्तमान राजनीति को नहीं समझा जासकता। जब मावजेतुंग से उपरोक्त ४ वर्ष पहले पूछा कि चीन के गृहयुद्ध में कौन जीतेगा तो उसने उत्तर दिया 'जनता'...... 'यदि हम खेती हर प्रश्नों को हल कर लेंगे तो हम जीतेगे। इससे समझा जासकता है कि

किसानों प्रश्न चीन की राजनीति की कुंजी है।

हिन्दुस्तान की तरह चीन भी एक खेतीहर देश है जहां जन-संख्या का ८०% भाग कृषि पर अपना जीवन निर्वाह करता है। खेती के लिहाज से हम सारे चीन को ४ भागों में बांट सकते हैं। (१) मंचूरिया और आन्तरिक मंगोलिया (उत्तर और उत्तर पूर्व) इसी इलाके में गोबी का रेगिस्तान है। शेष मंगोलिया में खुले मैदान और छोटी छोटी झाड़ियों से ढकी चट्टाने हैं। यहां घास के मैदानो में भेड़ें पाली जाती है जो भोजन, ऊन और कपड़े बनाने का काम देती हैं, भेड़ों की मेंगनी इंधन की तरह जलाई जाती है।

मंचूरिया चीन के धान्य भण्डारों में एक है जहां प्रचुर मात्रा में गेहूँ, सोयाबीन, काओलिंग आदि पैदा होते हैं। यह उत्तर पूर्वी चीन है जहां जमीन का अधिकांश भाग थोड़े से लोगों के हाथ में है। मंचूरिया के देहातों में तो गावों की जनसंख्या का ४३ % भाग गरीब किसान और खेत मजदूर है जिनके पास जोती हुई जमीन का केवल ६.% भाग ही है। अधिकांश जमीन महाजनों, व्यापारियों और अफसरों के पास है। कुछ नौकरशाहों के पास तो ३०, ५० और १०० वर्गमील जोती हुई जमीन है। इस इलाके में किसानों को बेगार नहीं देना पड़ता है उनका शोषण मुख्यतया भावों के उतार चढ़ाव द्वारा होता है। सूदखोर महाजनों के चक्कर में उन्हें अपनी पैदावार सस्ते भावों में फसल पकते ही बेचनी पड़ती है। फिर उसी उपज को उन्हें मंहगे भावों में खरीदनी पड़ती है भावों की इस मार से लगातार कंगाली बढ़ती जाती थी। अकाल और बाढ़ पीड़ीत चीन के लाखों गरीब किसान इन वर्षों में यहां आकर बस गये हैं। (२) उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश :-

इसमें सिन्कियांग, तिब्बत, सिकांग, चिंघाई और पुत्रान व जेचुआन के पश्चिमी भाग आते हैं। यह भिन्न भिन्न जलवायु वाला पहाड़ी प्रदेश है इस इलाके के बारे में दुनियां को बहुत कम जानकारी है। यहाँ बहुत कम लोग रहते हैं, खेती लायक जमीन बहुत ही कम है और सारा प्रदेश पिछड़ा हुआ है। आबादी की कमी के कारण मजदूरों का अभाव है अतः किसानों को जमीन के साथ गुलामों और कम्मियों की तरह बांध रक्खा गया है। यहाँ का किसान एक बोलने वाला पशु है, खेत पर काम करने के अलावा उसे या उसकी स्त्री को जमींदार के लिए पानी लाना, घास काटना, लकड़ी चुगना, पशुओं की देखभाल करना, खाना पकाना और जमींदार के परिवार की चाकरी करनी पड़ती है। इस प्रदेश के कुछ भागों में जमींदार अफीम की खेती करते हैं अफीम का $\frac{7}{10}$ भाग जमींदार लेलेता है और शेष पर किसान के परिवार को गुजारा करना पड़ता है।

कृषि के लिहाज से शेष चीन दो भागों में बाँटा जा सकता है– उत्तरी और दक्षिणी। यांगली इसकी सीमा है। जनसंख्या के हिसाब से चीन का अधिकांश मानव-समाज यहाँ बसता है। उत्तरी चीन का आम किसान गरीब है वह औसतन एकड़ पौन एकड़ जमीन का मालिक है लेकिन उसके परिवार के गुजारे के लिए इससे दुगनी जमीन जरूरी है। उसके खेत का तिहाई या चौथाई भाग औसतन पीवल है। उसके पास एकाध घोड़ा या गधा है। आमतौर पर यह कहा जा सकता है कि उसकी स्थिति शेष चीन के किसानों के समान ही है।

उत्तरी चीन में जमीन की मिल्कियत इस प्रकार है:—

	परिवारों का प्रतिशत	जमीन की मिल्कियत का प्रतिशत
जमींदार	५ %	१२ %
धनवान किसान	८ %	२८ %
मध्यम किसान	२५ %	३३ %
गरीब किसान	६२ %	२७ %

जमीन की मिल्कियत के यह आंकड़े दक्षिण चीन के आंकड़ों की तुलना में यहाँ गरीब किसानों के हित में हैं लेकिन सिंचाई के साधनों की कमी की वजह से यहाँ के किसानो का जीवन स्तर दक्षिण के मुकाबले में ऊंचा नहीं है। यहाँ चीन की दूसरी बड़ी नदी ह्वाँगहो (पीली नदी) सदा अपना मार्ग बदलती रहती है। उसके बाढ़ें हर दूसरे तीसरे वर्ष बर्बादी लाती है। इसलिए इस नदी का नाम भी 'चीन का शोक' पड़ गया है।

दक्षिणी चीन में जमीन की मिल्कियत इस प्रकार है:—

	परिवारों का प्रतिशत	जमीन की मिल्कियत का प्रतिशत
जमीदार	३ %	४७ %
धनवान किसान	६ %	१७ %
मझौले किसान	२० %	२० %
गरीब किसान	७१ %	१६ %

यह आंकड़े बताते हैं कि दक्षिण चीन में किस तरह जमीन का अधिकांश भाग थोड़े से शोषकों के हाथों में केन्द्रित हो गया है। इस भाग में सिंचाई के प्रचुर साधन हैं और साल में तीन २ फसलें होती है। ऐसी उपजाऊ जमीन पर जमींदारों और धनवान किसानों की आँख गड़ना स्वाभाविक था। यहाँ धनवान किसान भी स्वयं खेती करने की अपक्षा जमीन को सिझारेदारों और शिकमी-कास्तकारों को लगान आदि पर उठा देना पसन्द

करते हैं। यह प्रवृत्ति जमींदारी का ही दूसरा रूप है।

मुख्य चीन का जमींदार इग्लेंण्ड या फ्रांस के बड़े २ जमींदारों की तरह नहीं है। एक लेखक के अनुसार वह एक चौपाया है जो लगान वसूल करता है, सरकारी टेक्स भी लेता है और साथ ही बोहरा व व्यापारी भी है। इस प्रकार आमतौर से वह चौतरफा मुनाफा बटोरता है। उत्तरी चीन में ५७ %. बड़े जमींदार सरकारी अफसर और २८ %. बोहरे हैं। दक्षिण चीन में २७ %. अफसर और ४३ %. बोहरे। उत्तर और दक्षिण में कुल मिला कर १८ %. गरीब किसानों के पास खेती लायक जमीन का २२ %. भाग ही है और जमीन न जोतने वाले ३ %. जमींदारों के पास २६ %. जमीन है। चीन में औसत प्रति व्यक्ति ०.२ से ०.४ एकड़ जमीन जोती जाती है जबकि संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हर व्यक्ति के पीछे आधुनिक तरीको से ३.५ एकड़ जमीन जोती जाती है

जमीन की मिल्कियत की इस पृष्ठ भूमि में पंचू शासकों और युद्ध सामन्तों के शासन मे सिचाई के साधनो का अस्त व्यस्त होना, अकाल, बाढ़ और युद्धों में लोगों की हालत का दिनों दिन खराब होते जाना साफ कह रहे थे- कि जमीन की मिल्कियत में क्रान्तिकारी रद्दोबदल हुए बिना चीन का उद्धार असंभव है। जमीदारों और सूदखोरों के पजे से किसानो को मुक्त कर समृद्धि के मार्ग पर लाने के लिए संयुक्त मार्चे के दिनों में कोमिन्तांग और कम्युनिस्टों ने एक नारा उठाया था- जमीन, जोतने वाले की है। लेकिन जीत की घड़ियों में कोमिन्ताग ने इस नारे को त्याग दिया। चीन का अगला इतिहास इस नारे के इर्दगिर्द घूम रहा है।

कम्युनिस्टों की बेवकूफी :—

कम्युनिस्टों और डॉ० सन ने अपने नारे 'जमीन जोतने

वाले की' को अमली रूप देने के लिए एक महान किसान आन्दोलन की नींव डाली। केन्टन में भूमि कर केवल २५ % कर दिया गया। अन्य लागते व बेगार उठादी गई। देहातों में जमीदारो के खिलाफ किसान संघर्षों को तेज किया गया। कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल ने भी आदेश दिया भूमि सुधारों के आन्दोलन को तेज करो। लेकिन उत्तरी अभियान में जब कोमिन्तांग के दक्षिणपंची नेता दबाव डालने लगे तो 'राष्ट्रिय ऐकता' बनाए रखने के लिए कम्युनिस्ट नेता जनता के संघर्षों को तेज करने लगे। जब चीन के प्रतिक्रियावादियों ने मजदूर किसान आन्दोलन पर प्रहार करना प्रारंभ किया तब कम्युनिस्टों का फर्ज था कि वे मजदूर किसानों के संघर्षों को और भी तेज करते लेकिन उन्होंने जनता का पूरी तौर पर साथ नहीं दिया।

कम्युनिस्टों का नेतृत्व इस समय मध्यमवर्गी बुद्धिजीवियों के हाथो में था जो इन्कलाब का नारा तो लगाते थे लेकिन उसका नेतृत्व करने से घबराते थे। वे पूंजीपतिवर्ग के साथ कुछ मसलों पर संयुक्त मोर्चा बनाना जानते थे लेकिन साथ ही अन्य मसलों पर उनसे लड़ना नहीं जानते थे। परिणाम स्वरूप प्रतिक्रियावादियों ने तो उनका फायदा उठा लिया लेकिन वे अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर सके, क्रांति आगे बढ़ नहीं सकी।

कम्युनिस्ट पार्टी का सेकेट्री चेनतूसू था जो बड़ा किताबी विद्वान था लेकिन क्रांति में किसानों के महत्व को जरा भी नहीं समझता था। उसने मावसेतुंग के किसान कार्यक्रम का कदम २ पर विरोध किया। उसने पार्टी के पत्रों में माव के विचारों को प्रगट नहीं होने दिया और उसके प्रस्तावों पर विचार नहीं किया। रूसी प्रतिनीधि बोरोदिन ने भी हर हालत में कोमिन्तांग से ऐका बनाए रखने के लिए खेतीहर क्रांति के

प्रोग्राम को स्थगित करने में योग दिया। और हमारे हिन्दुस्तान के कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के तत्कालीन सदस्य एम. एन. राय ने तो जब इस बारे में कोमिनटर्न का आदेश आया तो उसे वांगचिंगवाई को बता दिया। परिणाम स्वरूप बंटाढार हो गया। मावसेतुंग के शब्दों में बोरोडिन ने भयानक भूल की, चेन एक अचेत गद्दार था और राय एक बेवकूफ था जो केवल बातें बनाना ही जानता था।

च्यांगकाई शेक ने जब शंघाई के बंक पतियों से रुपया लेकर नानकिंग में कोमिन्तांग के बहुमत के विरोध में सरकार बनाई तब कोमिन्तांग के बहुमत में कम्युनिस्ट भी थे। वूहान की संयुक्त मोर्चे की सरकार मे कम्युनिस्टों और कोमिन्तांग के वामपक्षियों का ही बहुमत था। जनता वूहान सरकार को अपनी सरकार मानती थी। कम्युनिस्टों की सदस्य संख्या ६० हजार थी और उनके साथ देश के मजदूर वर्ग का अधिकांश संगठित भाग था। उनकी किसान सभाओं की सदस्यता करोड़ के नजदीक थी। लेकिन पार्टी का नेता चेनतू सू मजदूर और किसानों हथियारबन्द जत्थों से घबराने लगा और 'एकता' बनाए रखने के लिए उन्हें निःशस्त्र होने का आदेश दिया। जब एक युद्ध सामन्त ने चांगसा शहर को ले लिया तो पड़ोस के १ लाख किसानों ने उसे घेर लिया। किसानों की हथियार बन्द ताकत का स्वागत करने की जगह च्यांग ने उन्हें वापिस लौट जाने का आदेश दिया। कम्युनिस्ट नेताओं की इन कमजोरियों और बेवकूफियों की वजह से मजदूर किसान आन्दोलन लक्ष्य हीन और नेतृत्व हीन हो गया। जब कम्युनिस्ट ही दृढ़ नहीं रहे तो अन्य वामपक्षी धीरे २ वूहान सरकार को छोड़ कर च्यांग से मिलने लगे और च्यांग की नानकिंग सरकार चीन की सरकार बन गई।

कम्युनिस्ट कांटे को निकला समझ कर अब च्यांगकाई शेक दूसरे युद्ध सामन्तों को दबाकर शेष चीन को एक करने का प्रयत्न करता है। लेकिन इन प्रयत्नों के पीछे जनता की सजग चेष्टा नहीं है। अब नीचे से न हो कर ऊपर से एकता स्थापित होती है; 'साम, दाम, दंड, भेद द्वारा।' यह नई एकता युद्ध सामन्तों की एकता है जिसमें च्यांगकाई शेक सबसे बड़ा सामन्त होता है, यांगसी घाटी का मालिक। इस ऊपरी एकता के भीतर और कभी २ खुले रूप में आपसी विरोध चलते रहते हैं।

शेन्सी और हापी में फेंगयू शियांग, शांसी में येन शीशान और मंचूरिया में चांगस्ये लियांग व दक्षिण में याई चुंगसी और ली सुंगजेन समय समय पर च्यांग से लड़ते झगड़ते रहते थे। कभी च्यांग इस सामन्त को दबाता कभी उसे। परिणामस्वरूप चीन के पूंजीवादी विकास की सभी संभावनाएं रुक गई। विदेशी सरकारों ने चांग की सरकार को चीन की राष्ट्रीय सरकार के रूप में स्वीकार कर लिया और यूयान शिकाई की तरह उसे कर्ज देना शुरु कर दिया पर साथ ही वे गुप्त रूप से युद्ध सामन्तों की भी सहायता करती रहीं।

साम्राज्यवादी गठबन्धन का परिणाम

साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और सामन्तवाद के इस घिनौने गठबन्धन का परिणाम चीन के लिए अशुभ कर हुआ। औद्योगिक दृष्टि से वह भारत से भी पिछड़ा रह गया। १९२५ में जहां ७७ मिलें थीं, वे १९३० में ८१ से आगे नहीं बढ़ सकीं, लेकिन विदेशी मिलों की संख्या ३७ से ४६ होगई। १९३७ में चीन में लगी कुल औद्योगिक पूंजी ४५०० लाख पाउंड थी और इसमें चीनी पूंजी केवल ½ थी इसके अतिरिक्त विदेशियों ने १५०० लाख पाउण्ड

के सरकारी और रेलवे बौण्ड खरीद रक्खे थे ।

लोगों की दरिद्रता में कोई अन्तर नहीं आया। शंघाई में मजदूरों का औसत मासिक वेतन केवल १२) था, परिवार के सारे सदस्य (स्त्री, पुरुष, बच्चा) मिलकर भी औसत २७) माहवार से अधिक नहीं कमा पाते थे जब कि साधारण जरूरतों को पूरा करने के लिए ही ३६) माहवार आवश्यक थे। अधिकांश मजदूर मानो कर्ज के बोझ से दबे हुए थे या उन्हें भर पेट खाने को नहीं मिलता था। काम के घन्टे १२ और १४ से कम नहीं थे और मजदूर बस्तियों की तुलना भारतीय मजदूर बस्तियों के नर्क से ही की जासकती थी। कोमिन्तांग दमन ने मजदूर संगठनों को खत्म कर दिया था। या उन्हें गुप्त होजाने के लिए बाध्य किया था।

इसी तरह देहातों में किसानो की हालत बद से बदतर होने लगी। सन् १९२८ के भयानक अकाल ने ६ करोड़ लोगों को बर्बाद कर दिया। सन् ३० की बाढ़ से २½ करोड़ लोग बे घर-बार हो गये। इसी साल एक गांव से इकट्ठे किये गये आंकड़ों के अनुसार एक खाते पीते किसान को साल में औसत १४) कर्ज लेने पड़ते थे और एक सिभारेदार को ४६)। जमीन सिमिट कर थोड़े से थोड़े हाथों में केन्द्रित होने लगी। सामन्त लोग अपनी आय को बढ़ाने के लिए अधिकाधिक काला सोना (अफीम) पैदा कराने लगे। इस अर्थ प्रणाली में दुनियां का सबसे बड़ा खेतिहर देश चीन अब विदेशों से चावल खरीदने लगा। घरेलू उद्योगों में रेशम का उद्योग–जापानी प्रतियोगिता के कारण ठप्प होता जा रहा था। इसी समय के आंकड़ों के अनुसार चीन के ६५ प्रतिशत लोग दरिद्र थे और उनमें से ३५ प्रतिशत असहाय।

चीन के आकाश में अंधकार के घटाटोप बादल छाए हुए थे हाथ को हाथ नहीं दिखाई देता था। दमन की आंधी में बड़े २ शूरवीर लापता हो गये थे। नेता अपने २ मोर्चों को छोड़ कर भाग चुके थे। लाठी, गोली, जेल और फाँसी ने कम्युनिस्ट सदस्यता को १०००० पर ला पटका। पर जनता का छुटपुट संघर्ष जारी था लेकिन ऐसा लगता था कि प्रतिक्रिया का अजगर इसे अभी डसने ही वाला है।

माव का उदय

Glory, Glory without end to him
who blew a breath of life into a handful of dust.

"उसे अपार और अपरिमित यश, असीम यश !
मुट्टी भर धूल में किसने जीवन का प्राण फूंक दिया ?"

प्रतिक्रिया के इस झन्झावात के पीछे एक नये सूर्य का उदय हो रहा था। जब क्षीण ज्योति वाले तारागण अपना मुँह छिपा रहे थे, काले बादलों में एक सूर्य ऊपर उठ रहा था। पूर्व का यह नया सूर्य था- मावसेतुंग, जिसकी यश गाथाएँ आज देश विदेश की सीमाओं को लांघती हुई, डालरों की अभेद्य दीवारों को चीरती हुई दुनियां के असंख्य पीड़ित मानवों को एक नया सन्देशा दे रही है- पथ प्रदर्शन कर रही है।

अभी कुछ सप्ताह पूर्व इटली के लाखों खेत मजदूरों ने सामन्तों और चर्च की जमीन को छीन कर आपस में बाँट लिया था। उनके झण्डों-पर लिखा हुआ था 'माव का रास्ता हमारा रास्ता।' एशिया के अनेक देशों के नौजवानों ने इस वर्ष घोषणा की है 'चीन का रास्ता; हमारा रास्ता।' अकेले चीन

के ४५ करोड़ लोगों का ही वह प्यारा माव चूसी (अध्यक्ष माव) नहीं है। सैगोन, टोकियो, सिंगापुर, कलकत्ता, केपटाउन-एशिया और अफ्रीका की श्रमजीवी जनता ही नहीं, पेरिस, प्राग, और रोम के मेहनतकश भी माव के गीत गाते हैं और उसके झण्डे को लहराते हैं।

एशिया की धरती पर यह युग पुरुष कौन है, जिसकी गौरव गाथाओं ने राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद और गांधी को भी पीछे रख दिया है। यह कौन रणबांकुरा है जिसकी विजयवाहिनी को च्यांग, जापान और अमरीकी रणविशारद भी परास्त न कर सके। यह कौन राजनीतिज्ञ है जिसकी चालों के आगे दुनिया को हटाने का दम भरने वाले डालरपतियों को भी मात खानी पड़ी। यह जनता का कैसा बेटा है, जिसके लिए करोड़ों लोग अपने प्राणों को निछावर करने को तैयार हैं। एशिया मे हर पीढ़ी में एक अरब लोग घास फूस की तरह पैदा हो कर मरते है लेकिन इस बार यह मृत्युञ्जय कौन है, जिसे मौत मार न सकी, एकाधिकारी पत्रों की चुप्पी छिपा न सकी और अनेक लुटेरों का सम्मिलित क्रोध डरा न सका।

यह एक साधारण किसान का बेटा है। मावत्सेतुंग-उस किसान का पुत्र है जो यांगत्सी और गंगा-सिन्धु की घाटियों में ४००० वर्षों से शोषित है, पीड़ित है शासित है, और पददलित है।

हूनान प्रान्त के शाओशान गांव के एक किसान माओ-जेन शेंग की पत्नी ने १८९३ में एक पुत्ररत्न को जन्म दिया। माओजेनशेंग एक गरीब किसान था। कर्ज उतारने के लिए उसे जवानी के दिनों में फौज में भर्ती होना पड़ा। अपनी तनख्वाह में से थोड़ा २ पैसा बचा कर वह पुनः अपने गांव लौट आया और

अपनी जमीन रेहन से छुड़ाकर खेती और साधारण व्यापार करने लगा। धीरे २ उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी होती गई। अब उसने स्वयं व्यापार की तरफ ध्यान देना शुरु किया और नौकर रख कर खेती करने लगा। ६ वर्ष की उम्र में माव ने अपनी माता और भाइयों के साथ २ खेत पर काम करना प्रारम्भ कर दिया था। पिता की आर्थिक अवस्था अच्छी हो जाने के कारण उसे स्कूल जाने का मौका मिल गया।

माव ने अपने बचपन में चीन की गरीबी देखी और स्वयं उसका अनुभव भी किया। उसका पिता अत्यन्त कठोर स्वभाव वाला, मारपीट और गाली गलौज देनेवाला व्यक्ति था। माता एक दयालु, सरल और सहृदय महिला थी। घर में माव और उसके पिता के कभी नही बनती थी। एक बार इस गृहयुद्ध ने गम्भीर रूप धारण कर लिया। माव, पिता की गाली गलौज अतिथियों के सामने बर्दास्त नहीं कर सका और घर से भागा। गालियाँ देते पिता ने माव का पीछा किया और वापस लौटने के लिए कहा। आखिर दोनों में समझौता होगया और पिता ने उसे आगे से पीटना बन्द करने का आश्वासन दिया। इस घटना से माव ने निष्कर्ष निकाला कि जब मैंने खुली बगावत की तो अपने अधिकार की रक्षा कर सका। जब तक मैं दब्बू और आज्ञाकारी रहा मार खाता रहा। पिता से रुष्ट होकर आखिर माव ने घर छोड़ ही दिया।

बड़े हो कर माव ने चीन का भयानक अकाल देखा। इन्सानो को भूखे पेट दम तोड़ते देखा। उसने सामन्तों के युद्ध और जनता की बगावतें देखी। उसकी सहानुभूति उन सामन्त विरोधी बागियो के साथ थी जिनके सर खभों पर लटकाए गये। १९११ की क्रान्ति के दिनों में वह क्रांति की सेना में भर्ती

हो गया, लेकिन डॉ० सन के अध्यक्ष पदत्याग के साथ ही उसने भी सैनिक जीवन छोड़ दिया। वह इतिहास, राजनीति, अर्थशास्त्र और साहित्य का गहन अध्ययन करने लगा। साथ ही उसके क्रान्तिकारी राजनैतिक जीवन प्रारंभ कर दिया।

१६१७ में उसने नया जन अध्ययन मंडल, स्थापित किया जिसके ७० से ८० तक सदस्य थे। इस अध्ययन मंडल से चीन के बहुत से कम्युनिस्ट नेता और साहित्यक निकले। इस समय तक माव की कोई साफ विचार धारा नहीं थी, वह उदारवाद, जनतंत्र और काल्पनिक समाजवाद के जगल में भटक रहा था।

माव ने इसी समय चीनी छात्रों के विदेश जाकर विद्याध्ययन के काम का संगठन किया और अनेक नौजवानों को विदेशों में जाने के लिये प्रेरणा दी। लेकिन स्वयं उसने चीन नहीं छोड़ा। उसका कहना था कि अभी उसे चीन को बहुत समझना है और वहीं उसकी आवश्यकता है।

एक बार माव पेकिंग भी गया। वहाँ ८ डालर (चीनी) माहवार पर लायब्रेरी में नौकर होगया। यहां उसने गहरा अध्ययन किया और तत्कालीन चीन के विद्वानों के सम्पर्क में आया। यहां उसका अपने भूतपूर्व अध्यापक की पुत्री के साथ प्रेम विवाह होगया। बाद में माव की इस पत्नी की च्यांगकाईशेक के एक युद्ध सामन्त द्वारा हत्या करदी गई। पेंकिग की दूसरी यात्रा में माव ने कम्युनिस्ट साहित्य पढ़ा और मजदूरों का राजनैतिक संगठन किया। १६२० की बसन्त से वह अपने आपको मार्क्सवादी मानने लगा।

जुलाई १६२१ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म हुआ।

पार्टी की पहली बैठक में १२ व्यक्ति थे जिनमें एक माव भी था। माव अपने प्रान्त हूनान में पार्टी का काम करने लगा जहां वह पार्टी का सेक्रेट्री था। एक ही वर्ष में हूनान में २० मजदूर संघों की स्थापना हो गई। मजदूरों और छात्रों के संगठन पर ही जोर दिया गया और किसानों की उपेक्षा की गई। अगले वर्ष मई दिवस पर हूनान प्रान्त के मजदूरों ने आम हड़ताल की जो चीन के मजदूर आन्दोलन में विशेष स्थान रखती है साथ ही माव के एक योग्य संगठन कर्त्ता होने का परिचय देती है।

१९२३ में कोमिन्तांग कम्युनिस्ट गठबन्धन होने पर माव शंघाई गया, जहां वह कोमिन्तांग और कम्युनिस्ट पार्टियों की केन्द्रीय कमेटी मे काम करने लगा। शंघाई में बीमार पड़ने पर वह अपने घर लौट आया लेकिन आराम के दिनों मे उसने हूनान में एक बड़े किसान आन्दोलन की नींव डालदी। किसान आन्दोलन की तेजी को देखकर जमींदारों का क्रोध माव पर फूट पड़ा और उसे पकड़ने के लिए एक सेना भेजी गई। माव अब केन्टन आगया जहां से वह कोमिन्तांग के 'साप्ताहिक राजनीति' का सम्पादन करने लगा। शीघ्र ही वह प्रचार विभाग का संगठन कर्त्ता और केन्द्रीय कमेटी का उम्मीदवार सदस्य बनाया गया। इसके साथ २ वह कम्युनिस्ट पार्टी के किसान विभाग का प्रमुख बनाया गया।

जब च्यांगकाईशेक ने गद्दारी का रास्ता अपनाना शुरू किया तो माव ने उसका डट कर मुकाबला करने की सलाह दी। माव ने ज्यादा से ज्यादा लोगों में ज़मीन का फिर से बंट वारा करने का क्रान्तिकारी मार्ग अपनाने को कहा और उसकी योजना भी पेश की। लेकिन पार्टी की नेताशाही ने माव की थिसिस को ठुकरा दिया। माव का कहना है कि यदि उस समय

उनकी बात मानली जाती तो हम प्रतिक्रिया को रोक तो नहीं पाते पर चीनी सोवियतों का विकास तेजी से होता और बाद में हमें दक्षिण चीन छोड़ना नहीं पड़ता।

माव हूनान की राजधानी चांगसा गया, जहां उसने जन विद्रोह का संगठन किया और एक किसान मजदूर सेना का निर्माण किया। एक बार संगठन में लगा हुआ माव सन्देह में कोमिन्तांग द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। उसे पकड़ गोली से उड़ाने के लिए थाने की ओर सिपाही चले। आरजू, मिन्नत और रिश्वत देने पर भी अफसर ने उसे नहीं छोड़ा। थाने से दो सो गज की दूरी पर माव अपने बन्धन तुड़ाकर भाग निकला और पड़ोस के खेतों में छुप गया। उसे बहुत ढूंढा गया पर हर बार वह बाल बाल बच गया।

माव की दिक्कतों का यहीं अन्त नहीं था। उसके विद्रोही कार्यक्रम को पार्टी की नेताशाही ने स्वीकार नहीं किया था। पर उसने हिम्मत नहीं हारी, हथियार नहीं डाले। वह अपने १००० साथियों को लेकर एक अभेद्य पहाड़ी दुर्ग पर पहुँच गया। माव के इन साथियों में हेनयांग के बहादुर खान मजदूर, होनान के किसान और कोमिन्तांग के इन्कलाबी सैनिक थे। पार्टी की केन्द्रीय कमेटी ने इस संगठन और माव की नीति का विरोध किया। माव की नीति थी- (१) कोमिन्तांग से कम्युनिस्ट पार्टी का पूरी तरह नाता भंग हो (२) मजदूर किसानों की अपनी क्रांतिकारी फौज का संगठन हो (३) छोटे बड़े और मध्य जमींदारों की जमींने जब्त की जावें, (४) कम्युनिस्ट पार्टी की होनान प्रांत में अपनी स्वतन्त्र सत्ता हो, (५) जगह जगह सोवियतों की स्थापना हो।

अगस्त १, १९२७ में एक और बड़ी घटना हुई, कोमिन्तांग

की २०वीं सेना होलूंग, येहतिंग और चू तेह के नेतृत्व में नान-चांग में जनता के विद्रोह के साथ होगई और इनकी टुकड़ियां माव की सेना में मिल गई। चूंकि माव की नीति और नानचांग विद्रोह को केन्द्रीय कमेटी का समर्थन नहीं मिला, प्रारम्भ में पहली सेना को गम्भीर क्षति पहुँची, और शहरो की दृष्टि से आन्दोलन कमजोर होता दिखाई दिया, अतः नेताशाही ने माव को पार्टी की सबसे ऊँची कमेटी से 'असफलता पर' निकाल दिया और इस आन्दोलन को 'रायफल आन्दोलन' का नाम देकर खिल्ली उड़ाई।

मावसेतुंग साधारण मिट्टी का पुतला नहीं था। उसने और उसके दृढ़ संकल्पी साथी चूतेह ने सशस्त्र बगावत का मार्ग छोड़ने से इन्कार कर दिया। इतिहास ने साबित किया कि अनेक कायरों का सम्मिलित मत एक वीर पुरुष के दृढ़ निश्चय के सामने गलत साबित हुआ। चिंग कान शान पर माव और उसके साथी श्वेत सेनाओं के मुकाबले और पार्टी नेताओं के विरोध में डटे रहे। यहाँ प्रथम चीनी सोवियत का निर्माण हुआ। यह पहला जनता का राज्य था जिसका प्रभाव क्षेत्र हूनान, कियांग्सी और क्वागतांग का सीमा प्रदेश था। यहाँ भी माव को अतिउग्रवादी और भाग निकलने वाली प्रवृतियों से संघर्ष करना पड़ा। माव ने जमीन बाँटने, सोवियतें स्थापित करने, स्वतन्त्र व्यापार और गिरफ्तार शत्रु सैनिकों के साथ सद् व्यवहार करने की नीति अपनाई। इस नीति का परिणाम था धीरे २ किन्तु निश्चित रूप से विकास।

इसी समय चीन के अन्य भागों में भी बगावतें हो रही थी और कई स्थानों पर सोवियतें कायम हो गई। इन सोवियतो ने हजारों जमीदारों की जमीन को छीन कर आपस में बाँट

लिया। नये लाल सैनिक च्यांगकाई शेक की आक्रमणकारी सेनाओं से अपील करने लगे—

"भाइयों ! जागीरदारों और जमींदारों के लिए तुम अपनी जाने क्यों खपाते हो ! हम भी गरीब किसान, तुम भी गरीब सिपाही, आओ, लगान देना बन्द करो, कर्जमत चुकाओ, टेक्स देना बन्द करो ! हमारे साथ आओ, अपने हथियार लेकर आओ और हम तुम क्रांति के लिए आगे बढ़ें !!!

स्वताओं के बन्दरगाह की जनता और मजदूरों ने क्रांति कर, शहर पर अधिकार कर लिया। सामन्तवादियों की सेना और विदेशी गनबोटों से बहादुर मजदूर १० दिन तक लोहा लेते रहे।

केन्टन कम्यून

१९२७-२८ के जाड़े में चीन के तीसरे बड़े शहर केन्टन के मजदूरों ने आम हड़ताल कर शहर पर अधिकार कर, इतिहास प्रसिद्ध केन्टन कम्यून की स्थापना की। तीन दिन तक शहर पर मजदूरों का अधिकार रहा। च्यांग के खूंखार दलों ने इस कम्यून को भी साम्राज्यवादियों की मदद से खून की नदी में डुबो दिया। पर केन्टन कम्यून क्रांति के प्रचार का सबसे बड़ा साधन बना। इस कम्यून के नारों से समूचा चीन गूंज उठा, लाखों मजदूर किसानों को क्रांति का प्रोग्राम पढ़ने और सुनने को मिला। उन्हें पता लगा कि सोवियत शासन में सामन्ती अत्याचारों का अन्त होकर जमीन लोगों में बांटी जा रही है। सोवियत इलाकों में जनता का चीन पैदा हो चुका है और वह फल फूल कर प्रतिक्रियावादियों से लोहा ले रहा है।

चेन की घुटना टेक नीति का पार्टी के अन्दर दिनों दिन

विरोध बढ़ता चला जारहा था। माव के रास्ते ने पार्टी को रास्ता दिखा दिया। कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल ने माव के रास्ते को सही बताया। तब पार्टी केन्द्रीय कमेटी का समर्थन माव की सोवियत नीति को मिला। पार्टी का नेतृत्व चेन के हाथों से छीन लिया गया। माव के नेतृत्व में पार्टी को, जनता के आन्दोलन को, एक नया जीवन, नया बल और साहस मिला वह विजय की ओर डग भरने लगी।

(३)

गृहयुद्ध और खेतीहर क्रांति

"Sending my brOther lover to war,
Urging him to see clearly the way to revolution;
Urging him tO wipe out the Kuomintang,
To destroy the militarist and the gentry
Who oppress the poor population"

"क्रान्ति का मार्ग स्पष्ट रूप से देखने के लिए तथा कोमिन्तॉंग का खा़त्मा करने के लिए और इन सैनिक वादियों तथा शिष्ट-सामान्य वर्गों को जो गरीब जनता का दमन करते हैं, नष्ट करने के लिए मैं अपने प्रिय बन्धु को युद्धक्षेत्र में भेजता हूँ।"

जब च्यांग अपने प्रतिद्वन्द्वी युद्ध सामन्तों से उलझ रहा था माव और दूसरे कम्युनिस्ट अपने इलाकों में निश्चिन्त बैठे नहीं रहे। वे जानते थे कि दुश्मन शीघ्र ही उन पर टूट पड़ने वाला है। उन्होंने अपने आधार को दृढ़ बनाना शुरु किया। किसान क्रान्ति को पूरा करने के लिए जमींदारों की जमीन छीन कर

गरीब किसानो और खेत मजदूरों में बांटी गई। सभी पुराने कर्जों से जनता को मुक्त किया। न केवल सामन्ती जुर्म ही खत्म हुए, लगान की दर भी बहुत कम करदी गई। सोवियत इलाको से अफीम को देश निकाला दिया गया। अफीम की खरीद फरोख्त करने वालों के लिए मृत्युदण्ड निश्चित किया गया। उधर च्यांग के इलाके में सन् ३२ मे अफीम का खुला लाइसेन्स व्यापार करने की इजाजत दी गई। वेश्यावृति को बन्द किया गया, बच्चों की गुलामी और बाल विवाह बन्द किये गये और बेकारी को मिटाया गया। एक ही वर्ष में सोवियत सरकार ने इतने सुधार किये जितने एशिया के किसी दूसरे मुल्क की 'आजाद सरकारें' अब तक नहीं कर सकी हैं। १००० सहयोग समितियां बनी और शिक्षा का प्रचार तेजी से हुआ।

इसी समय कम्युनिस्टो ने कुछ उग्रवादी गल्तियाँ भी की, जिनके लिए उन्हें बाद में पछताना पड़ा। उन्होंने प्रारंभ में निम्न पूंजीवादी लोगो की सम्पत्ति जब्त कर उनके साथ सामन्तों सा व्यवहार किया। लीलीसान के नेतृत्व में एक नई नीति कुछ समय के लिए अपनाई गई जिसमें शहरो को विजय करने और डट कर लड़ने के तरीके काम में लिए गये। इस नीति के कारण लाल फौज को बड़ी हानि पहुंची और च्यांग को विदेशी मदद ज्यादा मिलने लगी। इसी नीति के प्रभाव में एक बार लालसेना ने होनान की राजधानी चांगसा पर अधिकार कर लिया। इस समाचार को सुनकर देशी-विदेशी प्रतिक्रियावादी प्रेस पागलों की तरह लाल सेना के विरुद्ध बकने लगे।

"लाल सेना ने चांगसा को जला दिया है, उसने तमाम पूजा घरों, विदेशी व्यापार गृहों और लोगों के घरो को जला दिया है। लाल फौज ने हजारों लोगों का कत्लेआम किया है।

चांगसा में कोई कुमारी नही बची है। लाल सेना ने लूट और बलात्कार का बाजार गर्म कर रखा है। लाल डाकू चीनी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट कर रहे हैं।"

शंघाई के एक प्रमुख ब्रिटिश पत्र ने गुस्से में लिखा—

'भले आदमियों के चांगसा खाली करने के पूर्व, नीचे की श्रेणी के लोगों ने लाल सेना के साथ हमदर्दी बताई। ज्यों ही सरकार जागी, शहर पर लाल झण्डों का समुद्र लहरा उठा, और पूंजीवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध युद्ध भड़काने वाले पर्चों की शहर में बाढ़ सी आ गई।"

नतीजा साफ था, साम्राज्यवादियों ने हस्तक्षेप किया अमरीकी गनबोट 'पालोस' (Polos) के नेतृत्व में ७ विदेशी गनबोटों ने चांगसा पर आक्रमण कर लाल सेना को वहाँ से हटा दिया और शहर को पुनः च्यांग के हाथों में जाने दिया। ज्यों २ कम्युनिस्ट विरोधी गृहयुद्ध बढ़ता गया। च्यांग की विदेशी मदद बढ़ती गई। अमरीका ने ५ करोड़ डालर का 'गेंहूं, कपास' ऋण दिया। ४ करोड़ डालर, हवाई सेना बढ़ाने के लिए दिये और सन् ३३-३४ में तो नानकिंग की हवाई सेना में ३०० से अधिक अमेरीकी व केनेडियन पाइलट थे। जर्मनी, फ्रांस, इंग्लैंड और जापान की सहायता अलग थी।

लीलीसान की गलत नीति को कड़े अनुभवों के बाद छोड़ कर मावसेतुंग और चूतेह के नेतृत्व में लम्बे अर्से तक छापामार युद्ध प्रणाली को अपनाया गया।

इन गल्तियों के होते हुए भी सोवियत इलाकों का विस्तार हुआ और प्रभाव क्षेत्र बढ़ा। लाल फौज में किसान नौजवान बड़ी खुशी से आकर भरती होने लगे। अनेक किसान सहायक दस्तों में और शत्रु की गतिविधि पर देखभाल रखने का काम

करने लगे। सोवियत क्षेत्र में कम्युनिस्टों की स्थिति पानी में मछली की भांति सुरक्षित हो गई।

फौज का जनता में राजनैतिक आधार होने के कारण सैनिकों की संख्या बढ़ रही थी, अतः अनुशासन और संगठन पर सबसे पहले ध्यान दिया गया। एक मादरी सेना का निर्माण करने और जनता-सेना सम्बन्धों को अच्छे से अच्छा बनाने के लिए ८ नियम बनाए गये जिन पर आज तक सख्ती के साथ अमल किया जाता है, रोज सवेरे सैनिक इन्हे गाते हैं। यह नियम हैं—

१- जब तुम किसी के घर को छोड़ो तो किवाड़ों को वापिस लगाओ। (चीन में रात को किवाड़ उतार कर उन पर सोया जाता है।)

२- सोने की घास की चटाई को समेट कर वापिस लौटा दो।

३- लोगों के साथ व्यवहार में नम्रता और सौजन्यता से पेश आओ। जब उनकी मदद कर सकते हो जरूर करो।

४- मांगी हुई चीजें लौटादो।

५- चीजें टूट फूट जाय तो बदले मे नई दो।

६- किसानों के साथ व्यवहार में ईमानदार रहो।

७- जो सामान लो उसके पैसे दो।

८- आसपास सफाई रखो और टटियाँ बस्ती से दूर बनाओ।

इसी तरह अनुशासन के ३ नियम बनाए गये। १- हुक्म को फौरन बजाओ, २- गरीब किसानों की किसी भी चीज को जब्त न करो, ३- जमीदारों की जो चीज जब्त करो उसे फौरन सरकार में जमा कराओ। इस अनुशासन को भंग करने वाले के साथ

कड़ा व्यवहार किया जाता।

लाल सैनिकों के तीन कर्त्तव्य निश्चित किये गये। दुश्मन से मृत्युपर्यन्त लड़ना, जनता को हथियार बन्द करना और इस संघर्ष को चलाने के लिए रुपया इकट्ठा करना।

कहना नहीं होगा कि इन नियमों का शक्ति से पालन होने के कारण लाल सेना किसानों में अत्यन्त प्रिय हो गई। वे उसे भाई-बेटों की सेना कहने लगे। एशिया के हजारों वर्षों के इतिहास ने अब तक जनता की ऐसी सेना नहीं देखी थी। इस अनूठी सेना की हाल ही में उसके कट्टर शत्रु अंग्रेजों और अमरीकनों ने भी प्रशंसा की है। जब नानकिंग और शंघाई पर लाल सेना ने अधिकार जमाया, विदेशी पत्र और पत्रकार भी उसकी गजब की सादगी, भलमसाहत, अनुशासन और लोक सेवा की भावना को देख कर स्तंभित हो गये। चीन की जनता जो अब तक सेनाओं से घृणा करती आ रही थी इस सेना को अपनी आँख की पुतली समझने लगी।

इतना होते हुए भी लाल सेना की संख्या च्यांग की सेना के मुकाबले में बहुत थोड़ी थी और उसके पास अच्छे हथियारों और गोलाबारुद का तो सर्वथा अभाव था। लेकिन इन खराबियों को दूसरे तरीकों से पूरा किया गया। छोटी मशीन गनें और रायफलें ही लाल सेना के मुख्य आधुनिक शस्त्र थे। और यह शस्त्र व गोला बारुद प्राप्त होते थे च्यांग की सेना से। कोमिन्तांग की नई फौजी टुकड़ियाँ, अपना साज सामान लेकर अनेक बार लाल सेना से मिल गई। एक बार तो २० हजार की एक विशाल सेना कम्युनिस्टों की तरफ आ गई। लाल सैनिक च्यांग की सेना को अपनी 'गोला बारुद ढोनेवाली गाड़ी' कहते थे। दुश्मन की चौकियों, शस्त्रागारों और इक्की दुक्की टुकड़ियों पर हमला कर लाल सैनिक दुश्मन से शस्त्र छीनते। शेष शस्त्र

और गोला बारूद लाल सेना व उनके कारखाने तैयार करते थे।

१६४७ मे एक अमेरीकी पत्रकार को मुलाकात देते हुए मावसेतुंग ने कहा था, 'अमरीका हमें खून दे रहा है- अप्रत्यक्ष तरीके से। वह च्यांगकाई शेक की सेना को शस्त्र और ट्रेनिंग देता है। हम च्यांगकाई शेक से शस्त्र और सिपाई छीन लेते हैं।' दुनिया के इतिहास में दुश्मन के शस्त्रों को छीन कर उन्हीं शस्त्रों से उसे पछाड़ने वाली इतनी बड़ी दूसरी सेना नहीं देखी गई। न केवल चीनी लाल सेना ने च्यांग से बल्कि जापान से भी इसी तरह शस्त्र छीने।

संख्या, शस्त्र और अनुभव में च्यांग के मुकाबले मे कमजोर होने के कारण लाल फौज ने युद्ध के नये तरीके निकाले। उसने गुरिल्ला लड़ाई का मार्ग अपनाया। दुनिया के बहुत से देशों के देशभक्तो ने गुरिल्ला युद्ध प्रणाली अपनाई थी लेकिन इसे जिस विशाल पैमाने पर चीनी कम्युनिस्टो ने अपनाया और जिस खूबी के साथ इस युद्ध विज्ञान को आगे बढ़ाया वह इतिहास में बेमिसाल है।

लाल फौज की खूबी यह थी कि वह अपनी मुख्य ताकत को आक्रमण के समय एक स्थान पर केन्द्रित कर बादमें बड़ी तेजी से साथ बिखर जाती। उसने एक स्थान पर जम कर लड़ना छोड़ दिया। बड़े २ स्थानों पर नाक बचाने के लड़ने की जगह उसने दुश्मन को थका कर, छका कर उसकी शक्ति को तोड़ना प्रारम्भ किया। शीघ्र आक्रमण और चाल की नीति, इस सेनाने ही निकाली थी। 'शीघ्र आक्रमण की नीति' के पण्डित जनरल लिन पियाव के लिए मशहूर है कि वह गत बाईस वर्षो मे किसी भी युद्ध में पराजित नहीं किया जा सका। उसके नाम से

जापानी और च्यांग के जनरल खौफ खाते थे। कई स्थानों पर शत्रु अफसर लिन पियाव के आने की खबर सुन कर ही रणक्षेत्र छोड़ कर भाग खड़े हुए। मंचूरिया और हैनान की विजय का श्रेय उसे मिला है। लाल सेना की युद्धनीति की पुस्तकें न केवल नानकिंग मे बल्की जापान और सैन्य विशारदों में भी बड़े चाव से पढ़ी जाती थी।

लाल सेना की रणनीति के नारे थे—

(१) जब दुश्मन हमला करता है हम पीछे हटते हैं।

(२) जब दुश्मन ठहर कर केम्प करता है, हम उसे परेशान करते हैं।

(३) जब दुश्मन युद्ध करने से बचना चाहता है, हम उस पर आक्रमण करते हैं।

(४) जब दुश्मन लौटने लगता है हम पीछा करते हैं। इन युद्ध नीतियों ने आने वालों वर्षों में लाल सेना को अजेय बना दिया, यह हम आगे देखेगे। यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि लाल सेना की कामयाबी का मुख्य कारण था उसका खेतीहर क्रान्ति का प्रोग्राम, उसकी राजनीति। यदि जनता का भरपूर सहयोग नहीं होता तो कितनी भी अच्छा रणनीति क्यों न होती शत्रु बल के आगे लाल सेना की हार निश्चित थी।

सन् १६३० समाप्त होने जारहा था। नानकिंग लाल खतरे के वास्तविक महत्व को समझने लगा। च्यांग अपने विरोधी सामन्तों पर किसी हद तक सफलता प्राप्त कर चुका था। देशी विदेशी प्रतिक्रियावादी उसकी पीठ पर थे। अब उसने अपना मुख्य ध्यान चीनी सोवियतों की ओर मोड़ा। उसने निश्चय किया, इस बार 'लाल डाकुओ' को सदा के लिए समाप्त करने का। एक लाख सैनिकों की विशाल सेना सोवियतो को

निर्मूल करने के लिए भेजी गयी। इस सेना ने सोवियत इलाकों को घेर कर ५ तरफ से चढ़ाई शुरू की। लाल सेना के पास केवल ४० हजार सैनिक थे। लेकिन अपनी चुस्ती और रणचातुरी से कम्युनिस्टो ने इस सेना को पूरी तरह हराकर अपने क्षेत्र और प्रभाव को और अधिक बढ़ा लिया।

पराजय के समाचार सुन कर च्यांग को बड़ा क्रोध आया। ४ ही महिने बाद उसने अपने प्रधान सेनापति होयिंगचिंग के नेतृत्व में २ लाख से ऊपर सैनिक भेजे। साधन सिमित होने के कारण लाल सेना पीछे हट गई। अपनी 'सफलता' पर फूलती हुई शत्रु सेना ७ तरफ से सोवियत इलाकों में तबाही ढाती हुई आगे बढ़ी लेकिन लाल फौज ने मौका देख कर बड़ी फुर्ती के साथ अपनी पूरी ताकत लगाकर एक के बाद एक कर ६ फौजों को हरा दिया। ७ वीं बिना लड़े अपना मुह लेकर लौट आई।

कोमितांग के यह आक्रमण साधारण सैनिक हमले नहीं थे। इनका लक्ष्य केवल लाल फौज को सैनिक दृष्टि से पराजित करना ही नहीं था। इनका लक्ष्य था लाल फौज के साथ २ सोवियत इलाके की जनता को, उसके मनोबल को, उसकी प्रतिरोध भावना को भी कुचल देना। न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी के अनुसार जब लाल सेना का आधार जनता है तो इस आधार को नष्ट कर देना च्यांग का लक्ष्य हो गया था। गाँवोंको जलाना, धान और घरों को लूटना, स्त्रियों की इज्जत लेना और निरपराध लोगों को गोली से उड़ा देना रोजमर्रा का सैनिक कार्यक्रम हो गया था। अनेक कम्युनिस्ट नेताओं के परिवार के स्त्री, पुरुष, मित्र, परिजन मौत के घाट उतारे गये। स्वयं मावसेतुंग की बहिन और पत्नी का खून किया गया उसकी दो भौजाइयों और पुत्र को गिरफ्तार किया गया। माव,

चूतेह आदि नेताओं का खून करने वालों को ढाई २ लाख डालर इनाम देने की घोषणाएं की गई। लेकिन कड़ा से कड़ा दमन भी जागृत जनता के फौलादी मनोबल को तोड़ न सका।

अमानुषिक आतंक और दमन का सहारा केवल सोवियत इलाकों में ही नहीं लिया गया। समूचे चीन में खुफिया पुलिस का आतंक छाया हुआ था। सभी तरह के प्रगतिशील तत्वो का दमन किया जारहा था। नागरिक अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का गला घोंटा जा चुका था। कोमिन्तांग अधिकृत इलाके में दमन की क्रूरता का कुछ परिचय निम्न घटना से मिलता है

१६३१ की जनवरी में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के २४ प्रमुख सदस्यों को शंघाई की ब्रिटिश पुलिस ने पकड़ कर कोमिन्तांग के हाथों में सोंपदिया। इन लोगों को पाशविक यातनाएं दी गई पर उन्होंने कुछ भी बताने से इन्कार कर दिया। इनमें से केन्द्रीय कमेटी का एक सदस्य था जिसे स्वयं च्यांग ने अपने पास बुलाया पर उसने गद्दारी करने से इन्कार कर दिया। महिला बन्दियों के स्तन और पुरुषों की इन्द्रियां कुचल दी गई, उनकी अंगुलियों के नख निकाल दिये गये। उनके शरीर पर पाखाना और गेसोलिन मिला कर डाला गया। फिर उनके अंगों को बेदर्दी के साथ बांस से, चाकुओं से छीला गया। लेकिन उन्होने जन आन्दोलन के प्रति गद्दारी करने से इनकार कर दिया। अन्त में फरवरी की आधी रात में ५ को जिन्दा जला दिया गया, शेष को गोली मारदी गई।

दूसरे हमले की असफलता के महिने भर बाद च्यांग ने इस बार 'लाल डाकुओं' को सर्वथा निर्मूल करने के लिए एलान किया और स्वयं तीन लाख सेना और अपने श्रेष्ठ सेनापतियों

को लेकर लाल इलाके पर चढ़ आया। उसने तेजी से लालसेना को खत्म करने लिए तीव्रगति से लाल इलाके में प्रवेश किया। यही लाल सेना चाहती थी। ३० हजार लाल सैनिको की मुख्य सेना ने बड़ी फुर्तीके साथ च्यांग की ५ सेनाओं से ५ दिनके भीतर ५ भिन्न २ स्थानों पर युद्ध किया। पहले ही युद्ध में लाल सेना को बहुत सा गोला बारूद और सैनिक हाथ लगे। दो महिने में च्यांग को अपनी असफलता का पता लग गया। उसने अपनी फौजे पीछे हटाली। अब लाल सेना कोम्न्तिांग इलाके में घुसकर प्रत्याक्रमण करने लगी।

१९३३ के अप्रेल में च्यांग ने चौथा बड़ा आक्रमण किया। पर इसमें च्यांग की सबसे बड़ी पराजय हुई। उसकी सेना का सर्व-श्रेष्ठ डिविजन हार कर अपने हथियार खो बैठा। उसने अपने सेनापति को लिखा कि 'मुझे अपने जीवन में इतना बड़ा अपमान कभी महसूस नहीं हुआ।' उसे पता न था कि यह तो उसकी पराजयो और अपमानो की शुरुआत ही थी। च्याग ने अपने सेनापति चेनचेग को हाई कमांड से हटा दिया। इस पराजय से क्रोधित होकर च्यांग ने पुरी शक्ति बटोर कर ५ वें आक्रमण की तैयारी की।

५ वें आक्रमण के लिए च्यांग ने १० लाख सैनिक इकट्ठे किये। विदेशी सैनिक सलाहकारों की मदद से युद्ध के नये तरीके अपनाए गये। लाल हौवे को खत्म करने के लिए साम्राज्यवादियों ने उसे हथियार और सैनिक सलाहकार दिये। हवाई जहाज और पाइलोट उसकी सेवामें भेंट किये। जर्मन सलाहकारों, जिनमें वानशाख्ट ने, जो बाद में हिटलर का चीफ ऑफ स्टाफ प्रसिद्ध हुआ और मुख्य था, उसने लाल इलाके को किलेबन्दी द्वारा घेरने की सलाह दी। वानशाख्ट द्वारा चलाई

गई सैनिक चालों से एक वर्ष तक लाल सेना लोहा लेती रही।

इस बार च्यांग के पास असीम साधन, विदेशी सलाहकार और कंक्रीट की किलेबन्दी थी तो उधर लाल सेना ने कुछ गल्तियाँ करदी। अपनी पुरानी विजय के जोश में उसने जमकर लड़ाइयाँ लड़ी जिनके लिए वह सैनिक दृष्टि से योग्य न थी। उधर उत्तर से जापान को न रोकने और चीन में गृह-युद्ध चलाने की नीति के परिणाम स्वरूप चीन की जमीन का ५-वां भाग, रेलों का ४० प्रतिशत, लोहे की खानों का ८० प्रतिशत और निर्यात का ४८ प्रतिशत भाग जापान के पजों में चला गया था। चीन के आधे से अधिक उद्योग में जापान ने अपना हाथ डाल दिया। जब च्यांग ने लाल इलाके पर पहला हमला किया था तब जापान ने मंचुरिया पर, दूसरे हमले के समय शंघाई पर और तीसरे के समय जेहोल पर अधिकार जमा लिया था। ५ वें हमले तक वह होपी और चहाट में छा गया। जापान की लालसा का कहीं कोई अन्त नहीं दिखाई देता था।

चीनी कम्युनिस्टो ने अपने देश मे आते हुए इस खतरे को देखा और अपनी राजधानी जुदूकेन में अपनी पहली कांग्रेस में जापान के विरुद्ध युद्ध घोषणा दो वर्ष पूर्व करदी थी। लेकिन सोवियत इलाके का कोमिन्तांग इलाके से घिरा हुआ होने के कारण ईस घोषणा को अमली रूप नहीं दिया जा सकता था। लाल सेना ऐसे स्थान पर जाना चाहती थी जहाँ से वह जापान का मुकाबला कर देश को प्रतिरोध का मार्ग बता कर राष्ट्रीय आजादी पर आक्रमण करने वाले को भगाती। साम्राज्यवाद विरोधी इस संघर्ष में ही चीन की मुक्ति और एकता का मार्ग था।

लाल सेना ने एलान किया कि वह किसी भी दूसरी चीनी सेना, यहाँ तक कि कोमिन्तांग सेना से भी जापान के विरुद्ध

सहयोग करने को तैयार है। कम्युनिस्टों ने कोमिन्तांग से जापान के विरुद्ध मिल कर लड़ने का प्रस्ताव रक्खा। इस दोस्ती के बदले में कम्युनिस्ट गृहयुद्ध का अन्त, नागरिक स्वतन्त्रता, प्रजातान्त्रिक सरकार, लोगों को वोट देने का हक मात्र नानकिंग सरकार से मांगते थे।

लेकिन च्यांग को राष्ट्रीय सुरक्षा से अधिक महत्वपूर्ण लगता था कम्युनिस्टों को कुचलना। वह किसी समझौते के लिये तैयार न था परिणाम स्वरूप चीन के एक बड़े बेंकर के अनुसार १ लाल सैनिक की मृत्यु के पीछे नानकिंग सरकार के ८० हजार डालर औसत् खर्च हो रहे थे और एक सैनिक के पीछे अनेक किसान मजदूर मारे जाते थे। कियांग्सी सोवियत पर हुए आखिरी हमले में ६० हजार लाल सैनिक मारे गये और कोमिंतांग की सूचना के अनुसार भी १० लाख से अधिक गैर सैनिक जनता मारी गई। संड़ासी की तरह कोमिन्तांग सेना धीरे २ लाल इलाके में टेंको, तोपों, बख्तर, बन्द गाड़ियों और हवाई-जहाजों की मदद से आगे बढ़ी और कंक्रीट किलेबन्दी का जाल बिछाने लगी। यह जाल दिन ब दिन तंग होता गया। च्यांग को विश्वास होगया कि उसका शिकार अब नहीं निकल सकता। लेकिन चीनी कम्युनिस्टों के शब्दकोष में असम्भव शब्द का अभाव था।

(५)

महान अभियान

Forward marching, and dawn is before us.
Comrades, we fight to-gether !
Our bayonets and guns open the way !
We march foward courageousty.
We hoist our banners High !
We are young Vanguards of workers & peasents
we are yong Vanguards of workers & peasents.

आगे कूच जारी है और प्रभात अपने सामने है
साथियो, हम साथ लड़ रहे हैं
हमारी किरचें और बन्दूकें मार्ग खोल रही हैं
हिम्मत के साथ हम आगे बढ़ रहे हैं
और अपना झण्डा ऊँचा लहरा रहे हैं
मजदूरों और किसानों के हम नौजवान अग्रदूत हैं !
हम मजदूरों और किसानों के नौजवान अग्रदूत हैं

हम यह पहले ही बता चुके कियांग्सी सोवियत के अलावा

भी चीन के विभिन्न भागों में कई सोवियतें स्थापित हो चुकी थी। जिस समय चीन के मुख्य कम्युनिस्ट नेता कियांगसी और हूनान में सोवियत शासन की नींव डाल रहे थे उसी समय एक किसान के बहादुर पुत्र ने उत्तरी चीन के शेंसी प्रान्त में कोमिन्तांग शासन के विरुद्ध बगावत का झण्डा खड़ा किया। १९२१ से ३२ तक वह अवर्णनीय कठिनाइयों का सामना करता रहा। पग पग पर उसे पराजय मिली पर यह वीर हारना जानता ही नहीं था। सरकारी अफसरों, लगान वसूल करने वालों, जमींदारों और बोहरों का खात्मा कर सन् ३२ के अन्त मे वह ११ परगनों पर अधिकार जमाने में कामयाब हुआ। इस साहसी नौजवान का नाम था लीत्सूतान। १९३५ तक इस सोवियत राज्य में शेंसी और कांसू प्रान्तों के २२ परगने थे और ५००० लाल सैनिक। सन् ३५ मे तंग आकर च्यांग ने अपने उपप्रधान सेनापति को इस सोवियत पर आक्रमण करने भेजा। इस समय हूनान से सूहुईतुंग नामक विख्यात कम्युनिस्ट सेनापति अपने ८००० जवानों को लेकर उस सोवियत में आ गया।

यही सोवियत जापान अधिकृत इलाके के पड़ोस में थी यहां से जापान विरोधी आन्दोलन और संघर्ष को बल पहुँचाया जा सकता था। कियांगसी सोवियत ने इसी सोवियत को अपना लक्ष्य बनाया। यह सोवियत सीधे कोई १००० मील से दूर थी लेकिन सीधा जाना असम्भव था। यहां केवल पश्चिमी चीन के दुर्गम स्थानों से हो कर जा सकते थे। ऐसे रास्तों से, जिसकी शत्रु कल्पना भी नहीं कर सकता था और जहाँ जान हथेली पर लेकर लड़ने वालों से मुकाबला करने के लिए जाना भी आसान नहीं था।

च्यांग के ५ वें हमले के एक वर्षबाद-लगातार युद्ध थकान और बर्बादी के एक वर्ष बाद- कम्युनिस्टों ने कियांगसी से

पलायन किया। भाग निकलने की तैयारी इतने गुप्त रूप से और तेजी से की गई कि जब शत्रु को इस योजना का पता लगा लाल सेना उसके जाल के बाहर थी। रातों रात चल कर १ लाख लाल सैनिक दक्षिण क्यांग्सी में डरे हुए और १६ अक्टूबर १९३४ को महान् अभियान शुरु हुआ। हूनान और क्वांग तांग की सीमा की किले बन्दियों पर अचानक आक्रमण कर उन्हें भंग करती हुई लाल सेना दक्षिण, पश्चिम के मार्ग पर बढ़ी। लाल सेना के साथ हजारों कम्युनिस्ट और गैर कम्युनिस्ट परिवार थे। कारखानो की मशीनें खच्चरों पर लदी हुई थी। जो भी चीजें साथ में ले जाई जा सकती थी वे सब साथ में थीं। ज्यों २ यात्रा लम्बी और कठिन होती गई सामान को ढोना कठिन होता गया। जिस सामान को आगे ले जाना कठिन होगया उसे गाड़ दिया गया। जगह २ हथियारों को किसानों मे बांट दिया गया ताकि वे पीछा करने वाली सेनाओं का काबला कर सकें।

लालसेना का मुख्य भाग यद्यपि कियांग्सी से चला गया लेकिन डेढ़ साल तक च्यांग पूरे कियांग्सी सोवियत इलाके पर अधिकार नहीं कर पाया। थोड़े से लाल सैनिक जो जान हथेली पर लिये वहां जमे हुए थे डट कर च्यांग का मुकाबला करते रहे ताकि शेष सेना को भाग निकलने का पूरा २ मौका मिले।

लाल सेना की ८००० मील की महान् दुर्गम यात्रा का वर्णन करना एक अध्याय में संभव नहीं है। पूरे एक साल भर लाल फौज चलती रही। इस यात्रा में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम ६ हजार मील चला। मार्ग के ३६८ दिनों में सैनिकों को २३५ दिन और १८ रात चलना पड़ा। बाकी दिनों में युद्ध हुए और ५४ दिन पश्चिमी जेचुआन में लग गये। केवल ४४ दिन आराम

करने के लिए मिले । औसत प्रत्येक व्यक्ति प्रति दिन २४ मील चला और औसत ११४ मील पर एक विश्राम।

यह यात्रा किसी जाने पहिचाने सीधे मार्ग से तय नहीं की गई। यह दुनियां का सबसे दुर्गम मार्ग था। रास्ते में बड़ी २ घाटियों, पर्वत श्रेणियों, दुर्गम घाटियों, बर्फ से लदे हुए पहाड़, कड़कड़ाती धूप, मूसलधार वर्षा और तेज नदियों को पार करना पड़ा। १८ ऐसी पर्वत श्रेणियों को पार किया गया जिनमें ५ सदा बर्फ से ढकी रहती थी। इनमें से एक चोटी १६००० फुट ऊंची थी। इन पर्वतों को पार करने वाले इन सूरमाओं के पास बर्फानी सर्दी से बचने के लिए पूरे कपड़े ही नहीं थे अतः कई सदा के लिए उस बर्फ में सोगये। इसी तरह सामान ढोने वाले जानवरों की भी बड़ी संख्या में मृत्यु होगई।

इस महान यात्रा में लाल सेना को चीन के १२ प्रान्तों में से निकलना पड़ा जिनकी कुल जनसंख्या २० करोड़ थी। उसने इस यात्रा के दौरान मे ६२ नगरों पर अधिकार किया। रास्ता रोकने वाली युद्ध सामन्तो की १० सेनाओं को पराजित किया और मार भगाया। नानकिंग की सेनाओं ने लाल सेना का पीछा किया लेकिन वह जगह २ पराजित हुई और लाल सेना की गति रोक न सकी। आसमान से च्यांग के हवाई जहाज बम बरसा रहे थे, सामने चीन की विशाल नदियां, बाजू मे विरोधी सामन्त और पीछे च्यांग की सेना।

सिकन्दर, नेपोलियन और हिटलर को भी अपने अभियानों में उन कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा जिनका माओत्से तुंग और उसके साथियों ने सफलता पूर्वक सामना किया। साधनों के अभाव में क्रांतिकारी दृढ़ विश्वास, अटूट साहस, असीम धैर्य, विलक्षण युद्धनीति, त्याग और कष्ट की पराकाष्ठा, अपूर्व शौर्य और फुर्ती के इतने उदाहरण इतने बड़े पैमाने पर

कहां मिलेंगे ?

अपनी यात्रा में लाल सेना को ६ आदि वासी इलाकों मे से निकलना पड़ा। यह लोग चीनियों के कट्टर शत्रु थे और उनके इलाको में से वर्षों में कोई चीनी सेना नहीं निकली थी। च्यांग ने सोचा कि अब कम्युनिस्टों का आदिवासी जरूर अन्त कर देंगे। लेकिन लोगों ने आश्चर्य के साथ देखा कि लाल सेना को समाप्त करने की जगह यह आदिवासी उसके मित्र होगये और उसकी सहायता करने लगे। केवल एक जगह आदिवासियों ने लाल सेना का विरोध किया।

लाल सेना एक चलती फिरती प्रोपेगेन्डा मशीन थी। जहां वह जाती मिटिंग करती और लोगो को अपने आदर्श बताती। सामन्त साम्राज्य-विरोधी संघर्षों के लिए अपने भाषणों नृत्यों, गीतों और नाटकों से जनता का आह्वान करती। यात्रा के दौरान में ही उसने हजारों नये जवानों को सेना में भरती किया। इसके साथ ही उसने हजारों सशस्त्र किसानों और कुछ अपने सैनिकों को पीछा करने वाली सेनाओं का गुरिल्ला तरीके से च्यांग की सेना को छकाने के लिए पीछे छोड़ दिया।

किसान क्रांति रुकी नहीं

लाल सेना ने मार्ग के जमींदारों की सम्पत्ति जब्त कर उसे वहां के किसानों में बाँट दिया, कर्ज को समाप्त कर दस्तावेजों को जला दिया और अपने खेतीहर प्रोग्राम को इस प्रकार फैलाया। लाल सेना किसानों से खाने पीने की या कोई और चीज लेती तो उसके पूरे पैसे देती। कियांग्सी से लाए गये नानकिंग के नोट, सोना चाँदी और जमीदारों की सम्पत्ति इस काम आती। चीन के किसानों ने ऐसी सेना पहली बार ही देखी थी जो अमीरों को लूट कर गरीबों का फायदा करती। अब तक

की सेनाओं से लाल सेना का हाल एक दम उल्टा था। यही वजह थी कि किसानो के बेटे कठिनाइयो की परवाह न कर लाल सेना में शामिल होते।

लाल सेना और सोवियत की ख्याति सेना से भी आगे पहुंच जाती थी। जगह जगह किसान उसका स्वागत करने आते और अपने गावो में आने के लिए उसे आमन्त्रित करते। सोवियत की ख्याति इस प्रकार फैल चुकी कि कई बार किसानों के जत्थे 'श्रीमान सोवियत' का स्वागत करने आते और एक युद्ध सामन्त ने तो 'सोवियत' को जिन्दा या मरा पकड़ लाने के लिए भारी इनाम की घोषणा की।

च्यांग ने पूंछी को उड़ता हुआ देख कर भी हिम्मत नहीं छोड़ी। सोचा यांगत्सी के दक्षिणी तट पर इनका भी वही हाल होगा जो ताईपिंग विद्रोहियो का इसी स्थान पर हुआ था। चीन के प्राचीन इतिहास में बहुत सी सेनाओं का अन्त तिब्बत के पड़ौस में यांगत्सी के दक्षिणी तट पर हुआ था। उसने सैनिक आज्ञा भेज कर नदी के दक्षिणी किनारों से सारी नावें हटादी और पुलो को नष्ट करा दिया या उन पर अपना पहरा बैठादिया।

उसे उम्मीद थी कि अब लाल सेना यांगत्सी को पार नहीं कर सकेगी और उनके पास फैलने, पीछे, आगे या बाजू में हटने के लिए गुंजायश नही रहेगी अतः मै उन्हें इस बार सदा के लिए खत्म कर दूंगा। और लाल सेना का भी वही हाल होता जो च्यांग ने सोचा था। इधर कम्युनिस्ट भी खतरे से बेखबर नहीं थे। यह जीवन मरण का सघर्ष था। एक भूल, एक गल्ती का निश्चित परिणाम था मृत्यु—अन्त। अत. कम्युनिस्टों ने पुराने सेनापतियों की भूल को दोहराना उचित नही समझा।

पीछा करने वाले नानकिंग के बमवर्षकों को अपनी अलग

अलग चालों से धोका देते हुए लाल सेना का मुख्य भाग उपरी यांगत्सी के एक ऐसे स्थान के लिए रवाना हुआ जहाँ से नदी पार की जा सकती थी। ऊपरी यांगत्सी की धारा बहुत तेज है और नदी कुछ ही स्थानो से पार की जासकती थी। च्यांग ने न केवल नावो को ऊपरी तट की ओर मंगा लिया बल्कि उन्हें जलाने का हुक्म भी दे दिया। लाल सेना एक ऐसे स्थान पर पहुँची जहा नावे जलाई जा चुकी थी। यहां उन्होने बास का पुल बनाने का स्वाग रचा। जब च्यांग के हवाई जहाजों ने देखा कि कम्युनिस्ट तो पुल बनाने में लगे है. उन्होने सोचा इसमें तो हफ्तों लग जावेगे।

यांगत्सी और तात् पार

लेकिन एक रात लाल सेना का एक दस्ता चुपचाप आगे के लिए रवाना होगया और दिन रात चल कर ८५ मील दूर चाउपिंग दुर्ग पर पहुँचा। नानकिंग सेना की वर्दी पहन कर लाल सैनिक दुर्ग में घुसे और बिना किसी हो-हल्ले के उन्होने दुर्ग पर और कस्बे पर अधिकार कर लिया। लेकिन नदी कैसे पार करें?

देखा उस पार ६ नावें पड़ी है जिन्हें अब तक नहीं जलाया गया है। शाम होने पर नानकिंग के अफसरों के जरिये इस पार से आवाज लगवाई कि कुछ सरकारी सेना आई है और नावों की जरूरत है। उस पार से बिना किसी सन्देह के नाव भेज दी गई। जवानों की एक टुकड़ी नानकिंग की वर्दी में उस पार गई। सरकारी सेना को क्या पता था कि 'लाल डाकू' आ गये हैं। उनका खयाल था कि अभी तो यहां तक आने में लाल सेना को कम से कम ३ दिन तो लगेंगे ही। सिपाही लोग खेलों में लगे हुए थे। चुपचाप लाल सैनिक फौजी स्थान पर गये और

हाथ ऊँचे करो का आदेश दिया। च्यांग के सैनिक अब आत्म समर्पण के अतिरिक्त क्या कर सकते थे। अगले दिन से लाल सेना चाउपिंग पहुंचने लगी और ६ में सारी सेना बिना किसी नुकसान के यांगत्सी के उस पार थी। यह समाचार सुन कर च्यांग खूब झुंझलाया और हवाई जहाज में भाग कर जेचुआन में आया तात् नदी के तीर पर लाल सेना को रोकने के लिए।

तात् को पार करना भारी साहस और सूझ का काम था। यहीं पर ताईपिंग विद्रोहियों की एक लाख सेना का मचूओं ने अन्त किया था। अनेक दूसरी सेनाओं का यहीं अन्त हुआ था। च्यांग ने जेचुआन के सामन्तों और सेनापतियों को इतिहास दोहराने के लिए तार दिये। पर लाल सेना भी इतिहास से बे-खबर नहीं थी। वह खूब जानती थी कि ताईपिंग सेना तात् के किनारे कुछ समय सुस्ताने के लिए ठहर गई और जब इस पर आक्रमण हुआ तो पीछे हटने या फैलने के लिए कोई स्थान नहीं था। उसने इतिहास से सबक लिया। यहां उन्होंने चीनी लोगों के जानी दुश्मन लोलो आदिवासियों से मित्रता कर उनका सहयोग प्राप्त कर तेजी से आगे बढ़ना प्रारम्भ किया। सैकड़ों लोलो जवान लाल सेना में भरती होकर उसे तात् के पार पहुँचाने के लिये चले। नानकिंग की सेना धीरे २ तात् के दूसरे किनारे बढ़ रही थी। उसकी उम्मीदों के पूर्व, नानकिंग के वायुयानों को चकमा देकर लालसेना एक ऐसे शहर में पहुंची जहांसे नदी पार की जासकती थी।

च्यांग की सेना उस पार थी और सारी नावें भी। लाल फौज ने चुपचाप शहर पर अधिकार कर लिया। उस पार च्यांग की सेना का अफसर दावत के लिए इधर अपने सुसराल में आया हुआ था। उसे उम्मीद थी कि अभी कम्युनिस्टों को आने में बहुत दिन लगेंगे। लाल फौज ने उसे और उसकी नाव को

पकड़ लिया। ८० जवान नाव में बैठ कर उस पार गये और बाकी नावों को ले आए। दक्षिणी तटों की मशीनगनों ने च्यांग की नाकेबन्दी पर शीशा बरसाना शुरू किया बाकी काम नावों के हथगोलों ने पूरा कर दिया। च्यांग की रेजीमेन्ट भाग गई दिन रात मेहनत कर एक डिविजन सेना उस पार पहुंचाई गई। बाढ़ आने और धारा के तेज होने से यह काम और भी धीमा होगया। अगर यही गति रहती तो तात् को पार करने मे ही हफ्तो लग जाते। च्यांग के हवाई जहाजों को स्थिति का पता लग गया और वे बुरी तरह बम बारी करने लगे। दोनो किनारों पर च्यांग की सेना तेजी से आगे बढ़ने लगी। अब क्या किया जाय। सैनिक मंत्रणा हुई। निश्चय के अनुसार पश्चिम की ओर १५० मील दूर स्थान के लिए दोनो किनारों की सेना चल पड़ी। यहाँ नदी के किनारे ऊंची २ चट्टाने थी जहाँ नदी कम चौड़ी, ज्यादा गहरी और धारा तेज थी। यहाँ एक बहुत पुराना लोहे की जंजीरों का पुल था जिस पर स्लीपर लगे हुए थे। इस पुल के निर्माण में किसी समय १८ प्रान्तों का अटूट धन लगा था। च्यांग ने आदेश दिया था इस पुल को नष्ट करने का, लेकिन जेचुआन के लोगों में अपनी प्राचीन कृति के प्रति प्रेम था उन्होने सोचा युद्ध तो आते जाते रहेंगे पर यह पुल पुनः कौन बनावेगा अतः उन्होंने च्यांग के आदेश का पालन नहीं किया।

उत्तरी किनारे पर दौड़ती हुई लाल सेना का मार्ग च्यांग की एक सेना ने रोक लिया। बची हुई सेना पुल की तरफ भागी कम्युनिस्टों के पहले पुल पर पहुंचने के लिए। इस पार दिन रात लाल सेना दौड़ती रही। केवल खाने और विश्राम के लिए वह १०-१० मिनट रुकती और इस समय भी थके हुए राजनैतिक कार्यकर्त्ता इस संघर्ष के महत्व पर भाषण देकर सेना

का उत्साह बढ़ाते। उस पार श्वेत सेना, इस पार लाल सेना दोनो में होड़ थी पुल पर पहले पहुंचने के लिए। पूंजीवादी किराये के टट्टू भला सैनिकों से कैसे जीतते।

लेकिन पुल पर जाकर देखा कि पुल के आधे स्लीपर उखड़े पड़े हैं और उस तरफ च्यांग के सैनिक रायफलें और मशीनगनें खोल बैठे थे। नष्ट करने के लिए समय न था क्यों कि च्यांग की सेना के लिए नई कुमुक और हवाई जहाज किसी भी क्षण पहुंच सकते थे। च्यांग के सिपाहियों को उम्मीद थी कि स्लीपरों के हटा दिये जाने के कारण अब कोई नदी पार नहीं आसकेगा।

लाल सेना ने प्राणों की बाजी लगाने वाले स्वयं सेवकों की मांग की। कई जवान आगे आए पर उनमें से २० से २३ वर्ष की आयु वाले ३० जवान छांटे गये। इनकी पीठ पर भरे हुए पिस्तौल और गोले बांध दिये गये। च्यांग की फौज देखती है कि एक के पीछे दूसरा जवान जजीरों को हाथों में पकड़े लटकता हुआ पुल के स्लीपरों की तरफ बढ़ रहा है। उनके सिर पर से लाल मशीनगने दुश्मन के नाके पर आग बरसाने लगी दूसरी तरफ से दुश्मन की मशीनगनें और रायफलें कड़क रही थी नीचे गरजती हुई तेजधारा बह रही थी। पर मौत के सामने भी यह वीर बढ़े जा रहे थे! पहले के गोली लगी धड़ाम से धारा में गिरा जहाँ उसका कभी पता लगने वाला न था, दूसरे का भी यही हाल हुआ इसी तरह तीसरा भी गीरा लेकिन शेष बढ़े जा रहे थे! यह क्या? पुल के बचे हुवे तख्ते उनकी रक्षा करने लगे दुश्मन की गोलियां पुल के तख्तों से टकरा कर बेकाम होने लगी। दुश्मन स्तब्ध रह गया, यह इंसान है या देवदूत? क्या आदमी इतना बहादुर हो सकता है? आखिर एक लाल सैनिक पुल के तख्तों तक पहुँच गया! उसने हथ गोला निकाल कर ठीक दुश्मन की मशीनगन पर फेंका और उसका

मुँह बन्द कर दिया। हत श अफसरों ने पेट्रोल डाल कर तख्तों को जलाने का आदेश दिया पर अब क्या था जलते हुवे तख्तो मेंसे बीस जवान उस पार पहुँच चुके थे और अपने हथ गोलों से दुश्मन की नाका बन्दी को तोड़ने लगे इतने में दक्षिण तः पर गूंज उठा।

लाल फौज- जिन्दाबाद
इन्कलाब- जिन्दाबाद
तात् के वीर- जिन्दाबाद

दुश्मन की निराश भागती हुई टुकड़ी यह वीर उसी की मशीनगन से आग बरसाने लगा दो घन्टों में सारी फौज पुल के उस पार थी। इसी समय उत्तर तट पर पहले आने वाली लाल डीविजन भी आ गई ! जिसने दुश्मन पर बाजु से हमला कर उसे भगा दिया। च्यांग के हवाई जहाज अब आकर आग के अन्डे बरसाने लगे, लेकिन अब क्या हो सकता था।

(६)

जापान की काली छाया

"विश्व विजय करने के लिए जापान को योरप और एशिया जीतना होगा, योरप और एशिया विजय करने के लिए जापान को पहले चीन पर विजय प्राप्त करनी होगी"

—तनाका आवेदन पत्र।

जिस समय चीन में सामन्तवाद सिसक रहा था और साम्राज्यवादी ताकतें उसकी छाती को रौंद रही थी उसी समय जापान में एक बड़ी औद्योगिक क्रांति हो रही थी। जापान से सामन्तवाद का तो अन्त नहीं हुआ पर सामन्त लोग पूंजीपति बन बैठे। जब जापान में पूंजीवादी उत्पादन का विकास होने लगा तब तक दुनिया का पूंजीवाद अपनी चरम साम्राज्यवादी अवस्था में पहुंच चुका था। शीघ्र ही जापानी पूंजीवाद ने भी साम्राज्यवादी रुख धारण किया। हम पहले ही बता चुके हैं कि किस प्रकार जापान ने कोरिया और फारमूसा छीना, मंचूरिया में विशेष अधिकार प्राप्त किये और शान्तुग में जर्मन

अधिकारों को हथियालिया। युद्ध काल में वह अपनी २१ मांगो को, अन्य राष्ट्रों के विरोध के कारण, मनवाने में पूर्णरूप से सफल नहीं हुआ। अब वह चीन पर उसी तरह अपना आधिपत्य जमाने के लिए उतावला हो रहा था जैसा कि भारत में अंग्रेज जमा चुके थे।

जापानी साम्राज्यवादियों की इस खूनी लालसा को उसके एक प्रधान मन्त्री बैस टनाका ने अपने आवेदन पत्र में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है।

"चीन को जीतने के लिए हमें पहले मंचूरिया और मंगोलिया को जीतना होगा, विश्व विजय करने के लिए हमें चीन पर विजय प्राप्त करनी होगी। यदि हम ऐसा कर सकें तो एशिया के और दक्षिणी समुद्र में सभी देश हमसे भय खाएंगे और हमारे आगे शस्त्र डाल देंगे।............जापान जब तक 'खून और लोहे' की नीति नहीं अपनावेगा वह पूर्वी एशिया की तकलीफों को दूर नहीं कर सकेगा।............अगर हम चीन पर कंट्रोल करना चाहते हैं तो हमें संयुक्त राष्ट्र अमरीका को नष्ट करना पड़ेगा यानि हम उसके साथ वही करें जो हमने रूस-जापान युद्ध में किया था। ....जब चीन के समस्त साधन हमारे हाथ में होंगे, हम भारत, दक्षिणपूर्वी एशिया, मध्य एशिया, तुर्की और योरप तक कोफतह करेंगे।......... जापान इस कार्यक्रम को दस वर्ष में पूरा करेगा।" (टनाका मेमोरियल १६२७)

१६२५-२७ के राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे की कामयाबी को देख कर जापानी सामाज्यवादियों को संयुक्त और प्रबल चीन का खतरा दिखाई देने लगा। वह इसे कैसे बर्दाश्त कर सकता था। उसके निमंत्रित युद्धसामन्त और १६२८ में स्वयं उसका शान्टुग में खुला हस्तक्षेप चीन की तत्कालीन प्रगति को रोक नहीं सका।

अब उसने उत्तरी चीन के सबसे बड़े युद्ध सामन्त और मंचूरिया के अधिपति चांग सो लिन को इंग्लेण्ड और अमरीका के समर्थन प्राप्त च्यांगकाईशेख के विरुद्ध खड़ा किया। लेकिन कुछ कारणवश जापानियों ने चांग सो लिन को एक षड्यन्त्र द्वारा रेल दुर्घटना का शिकार बना दिया। इस सामन्त के पुत्र ने च्यांग से समझौता कर मचूरिया पर कोमिन्तांग का झण्डा लहरा दिया। यह चपत खाकर जापान कुछ समय के लिए चुप रहा, पर वह मंचूरिया को लेने की तैयारी करता रहा। जिस तरह आज अमरीका साम्यवाद के प्रसार को रोकने के नाम पर दूसरे देशों में हस्तक्षेप कर रहा है उसी तरह जापान के तत्कालीन शासकों ने प्रचार किया कि ऐशिया को साम्यवाद का खतरा है और जापान ही एक ऐसी शक्ति है जो लाल साम्राज्य का प्रसार रोक सकती है।

यद्यपि वाशिंगटन कान्फ्रेंस मे जापान ने चीन की स्वतत्रता और सार्वभौमता को स्वीकर करते हुए ऐलान किया था कि 'हम एक इञ्च भी चीन का राज्य नहीं चाहते' परन्तु सन् १६३१ मे चीन की सेना और जापानी रेल गार्डों के बीच साधारण झगड़ा होजाने पर उसने दूसरे दिन मुकडेन और चांनचुन पर अधिकार जमा लिया। यह युद्ध बिना किसी घोषणा के हुआ। च्यांग के सामने ३ रास्ते थे; हथियार डाल देना, दृढ़ता पूर्वक मुकाबला करना या राष्ट्र संघ में अपील करना। च्यांग ने मुकाबला करने या स्थानीय सेनापतियों की मदद करने की अपेक्षा पीछे हट कर राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेसस) में अपील करना ही उचित समझा। लीग ऑफ नेसन्स में लम्बे समय तक बहस-बाजी के बाद एक कमीशन नियुक्त किया गया, जिसने दो बर्ष बाद जापान को आक्रान्ता ठहराया। तब तक जापान मंचूरिया विजय कर चुका था। लीग ऑफ नेसन्स में

ब्रिटिश सरकार ने आम तौर पर जापान का ही समर्थन किया। इस समय से लेकर पर्ल हार्बर तक अमेरिका और ब्रिटेन जापान को हथियार और दूसरी चीजें देते रहे।

इंग्लेण्ड और अमेरिका का व्यापारिक हित मुख्यतया यांगत्सी घाटी और दक्षिण चीन में थे। जापान के प्रसार को उन्होंने अपने लिए हानिकर नहीं समझा। उन्हें उम्मीद हुई कि अब एक दिन रूस और जापान को लड़ा देना आसान होगा। उधर सोवियत पत्रों ने जापानी साम्राज्यवाद की निन्दा की और मंचूरिया से पराजित होकर आई चीनी सेना को जापान के विरोध होते हुए भी आश्रय दिया। आत्म रक्षा के लिए सोवियत सरकार को मंचूरिया की सीमा पर किलेबन्दी करनी पड़ी। परिणाम स्वरूप दूसरे महायुद्ध में जापान को एक बड़ी सेना मंचूरिया में रखनी पड़ी, जिसका वह चीन और अन्य स्थानों पर उपयोग नहीं कर सका।

मंचूरिया पर आक्रमण के समय से चीन भर में एक नया जापान विरोधी आन्दोलन उठने लगा। चीन के प्रत्येक शहर में जापान विरोधी छात्र हड़तालें और प्रदर्शन होने लगे। जापानी माल का बायकाट किया गया। कियांग्सी सोवियत ने गृहयुद्ध का अन्त करने और किसी भी चीनी सेना के जापान के विरुद्ध लड़ने के लिए सहयोग करने का एलान किया। उसने नारा दिया– 'चीनी चीनी का खून बहाना बन्द करो।' सारे चीन में यह नारा गूँज उठा। 'जापान का मुकाबला करो' गृह युद्ध का अन्त करो' आन्दोलन दिन ब दिन बढ़ता गया। लेकिन कोमितांग तो कम्युनिस्टों का अन्त करने पर तुली हुई थी। चीनी प्रजातन्त्र के पिता डॉ० सनयातसेन की विधवा पत्नी ने जापान विरोधी आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ किया।

'बाकी बचे हुए डाकुओं' की सफाई करने के लिए अपने उप सेनापति यंग मार्शल चांगसोलिन और उसकी मंचूरियन सेना को भेजा। सुस्ताने के लिए कम्युनिस्टों के पास समय ही कहाँ था। जाते ही उन्होंने अपने उत्तरी आधार को फैलाया और शासन प्रबंध व सैन्य संगठन मे सुधार प्रारंभ किये। राष्ट्रीय सेनाओं में यहाँ हुई मुठभेड़ों में लाल सेना को शानदार विजय मिली। कम्युनिस्टों ने इन सेनाओं को बता दिया कि हमारा गृहयुद्ध को अन्त करने का नारा अपनी किसी कमजोरी को छिपाने के लिए नहीं है। अगर तुम आक्रमण कर हमें खत्म करने के सपने देख रहे हो तो तुम्हारे दाँत खट्टे करने की हममें आज भी शक्ति है। लेकिन राष्ट्र का हित इसमें है कि हम तुम एक होकर जापान का मुकाबला करें।

लाल सेना का राष्ट्रीय ऐकता का नारा एक कुशल राजनैतिक हथियार मे बदलता गया। जहाँ तक संभव होता वह राष्ट्रीय सेना पर आक्रमण नहिं करती, जहाँ छुट पुट लड़ाई होती वहाँ उसकी कोशिश विरोधियों को मारने की न होकर गिरफ्तार करने की रहती थी। गिरफ्तार सैनिको को जापान विरोधी राजनैतिक शिक्षा देकर छोड़ दिया जाता था ताकि वे जाकर अपनी सेना में प्रचार करें और उसे लाल सेना के निकट लावें। लालसेना की इन चालों के परिणाम स्वरुप मोर्चों पर विचार विनिमय, भेटों का आदान प्रदान और एक दूसरे के यहाँ आना जाना प्रारंभ हो गया। युद्ध तो नानकिंग के लिए अब कागजी रिपोर्टों में ही होने लगा। सेना का असर अफसरों पर भी पड़ा, शेसी का शासक सेनापति इस गृहयुद्ध को व्यर्थ समझता था और मंचूरियन सेना गृहयुद्ध के एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर लड़ते २ थक गई थी। इसके सैनिक और अफ-

सर अपने घरों को जापान के आक्रमण (१६३१) के समय छोड़ चुके थे। यह लोग जापान को खदेड़ने के लिए उतावले हो रहे थे, लाल सेना के सम्पर्क ने इन्हे एक नई चेतना प्रदान की। यंग मार्शल भी इस लहर से बच न सका। दोनों सरकारी सेनाओं के सैनिकों और सेनापतियों ने लाल सेना के साथ राष्ट्रीय ऐकता और जापान विरोधी गुप्त मित्रता हो गई।

यंग मार्सल ने च्यांगकाई शेक को पत्र लिख कर राष्ट्रीय ऐकता गृहयुद्ध की समाप्ति, जापान का मुकाबला और रूस से मित्रता करने की अपील की। च्यांग ने अपने उत्तर में कहा कि "मै इस संबंध में तब तक कोई बात नहीं करूँगा जब तक प्रत्येक लाल सैनिक का अन्त नहीं हो जाता और प्रत्येक कम्यु-निस्ट जेल में नहीं पटक दिया जाता।"

नतीजा यह हुआ कि 'डाकुओं के दमन केन्द्र' सियान में जहाँ कम्युनिस्ट विरोधी सेनाओं का केन्द्रीय कार्यालय था, नान-किंग के प्रति विद्रोह की भावना बढ़ने लगी उत्तर में घट रही घटनाएं च्यांग से छिपी नहीं रह सकती थी। बगावत का सन्देह होते ही उसने स्थिति का मुकाबला करने का निश्चय किया। बचे हुए डाकुओं को खतम करने के आखिरी हमले की तैयारी को देखने के नाम पर उसने सियान जाने की योजना बनाई। उसके आगे आगे १५०० फासिस्ट सैनिक अफसर भेजे गये ताकि वहाँ किसी प्रकार की गड़बड़ी न होने पावे। इन लोगों ने सियान पहुँच कर नगर और सेना पर 'नियंत्रण' कर लिया।

लेकिन अब चीन की प्रगति पर च्यांग का नियन्त्रण असंभव था। दोनों ही सेनाओं के अफसरों ने संयुक्त रूप से च्यांग से मिल कर उसे अपना दृष्टिकोण समझाना चाहा लेकिन उसने मिलने

से इन्कार कर दिया। वह एक एक को बारी २ से ठीक करना चाहता था। अपने हवाई जहाजों और फासिस्ट सैनिको की निगरानी में वह सियान से दस मील दूर एक स्वास्थ्यप्रद स्थान पर सो रहा था। उसकी योजना थी सेना के सभी कम्युनिस्ट समर्थक अफसरों को गिरफ्तार करना लेकिन हुआ कुछ और ही। ता० ११ दिसम्बर १६३६ की रात को दोनो कोमिन्तांग सेनाओं के चुने हुए सैनिको ने च्यांग के रक्षकों के पहरे को चोर कर होटल में च्यांग के कमरे पर धावा मारा। समय पाकर च्यांग भाग निकला। नगे पैर, सोने के कपड़े पहने हुए, पड़ोस के पहाड़ पर बर्फ मे ठिकुरता हुआ च्यांग पकड़ा गया। च्यांग के हवाई जहाज और फासिस्ट अफसर भी इसी प्रकार रातो-रात पकड़े गये।

दोनों कोमिन्तांग सेनाओं के सैनिक अफसर च्यांग को देश-द्रोह के अपराध मे मारडालना चाहते थे। इसी समय मौका पाकर कम्युनिस्ट प्रतिनिधि भी सियान पहुँच गये, इनमें वर्तमान प्रधान मन्त्री और वाम्पिया ऐकेडेमी के भूतपूर्व डीन चाऊऐन लाई भी थे जिन्हे मार डालने का च्यांग हुक्म दे चुका था। का० चाऊ को देखते ही च्याग समझ गया कि मृत्यु अब मूर्त रूप मे आ गई है। लेकिन यह क्या, कम्युनिस्ट नेता च्यांग को मारने नही बल्कि बचाने के लिए आए?

कम्युनिस्टो का गृहयुद्ध को समाप्त कर देने का नारा एक राजनैतिक चालबाजी नहीं थी। यदि वे चाहते तो अपने शत्रु न० १ और लाखो कम्युनिस्टो के हत्यारे, प्रतिक्रियावादी च्यांग का खात्मा कर अपने मित्र परिजनों के खून का बदला ले सकते थे। पर उनका तर्क दूसरा ही था। उन्होंने उत्तेजित राष्ट्रीय सेना और उसके अफसरों को समझाया कि च्यांग का

खून राष्ट्रीय हित में नहीं होगा। इससे गृहयुद्ध की आग और भी तेजी से भड़क उठेगी नानकिंग के प्रतिक्रियावादी जापान का सहयोग लेकर गृहयुद्ध को लम्बा कर देंगे। हम च्यांग का विरोध करते हैं क्योंकि वह गृहयुद्ध करता है और जापान का मुकाबला नहीं करता। अब हम स्वयं एक चीनी का खून और बहा कर गृहयुद्ध को लम्बा करें। लोगों के बदले की भावनाओं पर आखिर कम्युनिस्ट तर्क की विजय हुई।

च्यांग की गिरफ्तारी के समाचार सुन को कर नानकिंग में जापान समर्थक कोमिंतांग का गुह सियान के बागियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ने के लिए पागल हो उठा। उसे च्यांग के जीवन की भी चिता नहीं थी वह तो बमवर्षक भेज कर सियान को नष्ट कर देना चाहता था। लेनिक इग्लैंड और अमरीका समर्थक गुह इस कदम का विरोधी था। उसने गृहयुद्ध को आगे बढ़ने नहीं दिया। इस दल की ओर से चीन के तत्कालीन उपप्रधान टी०वी सुंग, मेडम च्यांग, और च्यांग का आष्ट्रेलवी सलाहकार डोनाल्ड सियान पहुँचे। अफवाहों के विरुद्ध उन्होंने च्यांग को जिन्दा पाया।

कई दिन तक च्यांग अपने विरोधियों के पहरे में रहा। उसे गृहयुद्ध की नीति त्याग कर जापानी साम्राज्यवाद का प्रतिरोध करने की नीति अपनानी पड़ी। जब च्यांग ने अपनी हठधर्मी त्याग दी वह लौट सका। अब दोनों पक्षों मे ऐका होकर जापान विरोधी युद्ध की तैय्यारियाँ होने लगी।

येनान का लोकराज्य

१९३५ में येनान का लोकराज्य सोवियत रूस के पश्चात दूसरा मजदूर किसानों का प्रजातन्त्री राज्य था। विश्व की आधी आबादी वाले एशिया महाद्वीप में उस समय यही एक प्रजातन्त्री राज्य था। इस महत्वपूर्ण जनतन्त्र का क्षेत्र फल इग्लैंड के बराबर था लेकिन जनसंख्या २० लाख से भी कम थी। किसी समय उपजाऊ और महत्वपूर्ण इस प्रदेश को शासकों के अत्याचारों, पीत नदी की बाढ़ों और अकालो ने इसे उजाड़ दिया था।

कम्युनिस्टों के आने के ५ वर्ष पूर्व इस प्रदेश में भयानक अकाल पड़ा था जिसमें लाखों लोग भूखों मर गये। भूखों मरते लोगों ने कोड़ियों के मोल अपनी जमीन अफसरों, जमींदारों और सूदखोरों को दे डाली। यहाँ के अधिक जमींदार कोई टेक्स नहीं देते थे। लेकिन किसानों को अपनी उपज का ४५ प्रतिशत लगान के रूप में और २० प्रतिशत अन्य टेक्सों के रूप में देना पड़ता था। टेक्स की दरें चीन के सबसे उपजाऊ प्रदेशो से भी

अधिक थी। यहाँ नाम मात्र के लिए भी उद्योग धन्धों का विकास नहीं हुआ था। शिक्षा और सामाजिक माने में यह चीन के सबसे पिछड़े हुए प्रदेशों में से था। इन प्रदेशों के अधभूखे, अधनंगे लोगों ने उदय होते हुए लाल सूर्य का स्वागत किया- 'उनके पास खाने के लिए कुछ था ही नहीं।'

चीन के कम्युनिस्टों ने समस्त एशिया के पददलित लोगों को खेतीहर क्रांति का मार्ग बताया। उन्होंने जमींदारों, महाजनों और धनवान किसानों से जो दूसरों को नौकर या सिफारेदार रख कर शोषण करते थे, उनसे जमीन छीन कर खेत मजदूरों और गरीब किसानों में बाँट दी। इसी तरह पड़त जमीन भी इन्हीं लोगों में बाँटी गई। जिस इलाके पर लाल सेना अधिकार जमाती वहाँ पहले वर्ष सभी कर माफ कर दिये जाते थे ताकि करों के बोझ से दबी जनता को सांस लेने का मौका मिलता। दूसरे वर्ष किसानों से केवल लगान जो २५ प्रतिशत से कभी अधिक नहीं हो सकता और व्यापार से ५ प्रतिशत से १० प्रतिशत तक कर।

इस प्रदेश में लोग सूदखोरी के नीचे कराह रहे थे। इसे समाप्त किया गया। सालाना १० प्रतिशत से अधिक अब कोई कर नहीं ले सकता था और सरकारी कोपरेटिव ५ प्रतिशत पर उधार देता था खेत मजदूरों के धनिक वर्गों के पशु और औजार बाँट दिये गये। इसके अतिरिक्त सरकार ने उन्हें बीज और लाल सेना के शस्त्रागार ने कृषि के औजार दिये ताकि वे अधिक अनाज पैदा कर सकें। न केवल खरीदने, बेचने और कर्ज देने वाली सहयोग समितियाँ बनी। खेती की उपज को बढ़ाने, श्रम को बचाने और अधिक जमीन जोतने के लिए 'किसानों की पारस्परिक श्रम सहायता समितियाँ बनी।' इसमें १०-१२

किसान मिल कर अपने खेतो और औजारो को मिला कर एक साथ श्रम करते। उनकी स्त्रियाँ बारी २ मे भोजन बनाती। जितना काम पहले तीन आदमी अलग २ कर पाते थे अब उतना ही काम दो आदमी इस तरीके से कर लेते। स्त्रियाँ अपने खाली समय में घर की जरूरतो के लिए सहयोग समितियों के जरिये चरखा कातती जिससे घर का कपड़ा बनता।

शनिवार को सभी बच्चे लाल सैनिक, सरकारी कर्मचारी, पार्टी के नेता, मावत्सतुंग और चूतेह भी खेतो पर काम करते। लाल सेना के टुकड़ी जहाँ भी होती लोगो को जोतने, बोने काटने के कामों मे मदद देती। हर गांव में कुछ जमीन लाल सेना के लिए होती जिसे गांव की पंचायत जोतती, बोती और काटती। गांव के गरीब लाल सेना के लिए क्यों न काम करते। लाल सेना को बनाए रखना ही इस नई आजादी को बनाए रखना था।

सोवियत प्रदेश का शासन विशुद्ध जनतांत्रिक था। ऊपर से नीचे तक सभी पदाधिकारी चुने हुए होते थे। सबसे नीचे गांव सोवियत, फिर इलाका, जिला और केन्द्रीय सोवियतें होती थी। १६ वर्ष के ऊपर प्रत्येक स्त्री, पुरुष को वोट देने का हक था। 'गांव के गरीबो के राज्य' को बनाने के लिए सोवियतो में गरीबो का अधिक प्रतिनिधित्व होता था। प्रत्येक जिला सोवियत के नीचे अनेक कमेटियाँ रहती थी। किसी भी जिले पर अधिकार करने के बाद खूब प्रचार कर एक आम सभा बुलाई जाती जिसमें क्रांतिकारी कमेटी का चुनाव होता। यह चुनाव पुनः हो सकते थे और किसी भी चुने हुए व्यक्ति को लोग पुनः बुला सकते थे। यह कमेटी रक्षा का काम हाथ में लेती थी। जिला सोवियतें शिक्षा, सहकारी, स्वास्थ्य, सैनिक शिक्षण, छापेमार शिक्षण, खेती सहायक कमेटी, लाल सेना की जमीन संभालने

वाली कमेटी आदि कमिटियाँ नियुक्त करती। ऐसी कमेटियाँ अपने २ विषय मे कार्यक्रम बनाती और उन्हें अमली रूप देती।

इन संगठनों के अलावा विशाल संख्या वाली साम्यवादी पार्टी थी जो इनकी प्रेरक शक्ति थी। यंग कम्युनिस्ट लीग, नौजवान छापेमार, बाल सेना, जापान विरोधी सोसाइटी, गरीब लोगो की सोसाइटी आदि अनेक जनतांत्रिक लोक संगठन थे।

इन संगठनों का काम था सोवियत प्रदेश के प्रत्येक स्त्री, पुरुष व बच्चे को समाज के संगठन का एक महत्वपूर्ण अंग बनाना। ताकि वे राज्य की नीति निर्माण, अधिक उत्पादन, समृद्धजीवन बनाने और लाल सेना को अजेय बनाने में भाग ले सकें। इन कारणों से चीन के किसान इस सरकार को इतिहास में प्रथमबार हमारी सरकार कहकर पुकारते थे

इस प्रदेश में गृह-युद्ध के समाप्त होने तक लाल सेना की संख्या ९००,०० थी। लाल सैनिक अपने को सिपाही न कह कर योद्धा कहते थे। सेना सीमा पर या शत्रु अधिकृत प्रदेश मे रहती थी। आन्तरिक रक्षा का काम किसान रक्षा दलों के हाथ में रहता था। लाल सेना खूब अनुभवी और कष्टों की आग से निकल चुकी थी। सेना के ३३% लोग पहले च्यांग काई शेक की सेना में था। औसत सिपाही की उम्र केवल १९ वर्ष और अफसरों की २४ वर्ष थी। अफसरों में अनेक कोमिन्तांग के भूतपूर्व अफसर, च्यांग के सैनिक विद्यालयों के छात्र और विदेशों में शिक्षा प्राप्त चीनी देश भक्त थे। सेना के ३८ प्रतिशत लोग खेत मजदूरों, गाँव में छोटा मोटा काम करने वालों व कारखानों के मजदूर थे। ५८ प्रतिशत किसान और केवल ४ प्रतिशत बुद्धिजीवी वर्गों में से थे। ५० प्रतिशत सैनिक कम्युनिस्ट

पार्टी के मेम्बर थे। सैनिकों में ६० से ७० प्रतिशत तक साक्षर थे चीन की कोई दूसरी सेना इतनी साक्षरता का दावा नहीं कर सकती थी। शिक्षा सैनिक जीवन में मिलती थी, नारा था 'लड़ते समय भी पढ़ो'। सैनिक और अफसर एकसा खाना खाते, एकसा कपड़ा पहनते और उनके रहने के स्थान मे साधारण अन्तर था। युद्धों में लाल अफसर सैनिकों के साथ रहते थे। सेना में किसी को खाने कपड़े के अतिरिक्त कोई नियमित तनखा नहीं मिलती थी। सैनिकों को जमीन मिलती थी जिसे उनके परिवार वाले या गांव सोवियतें जोतती। पर ३० लाख से कम आबादी वाला प्रदेश इतनी बड़ी सेना का भार कैसे उठाता ?

च्यांगकाई शेक ने लाल इलाकों के चारों ओर एक ऐसा लोह आवरण लगा दिया था कि शेष ससार को उनके बारे में कोई ज्ञान नहीं था। इस आवरण को चीर कर एडगर स्नो नामक अमरीकी पत्रकार येनान पहुँचा। येनान के तत्कालीन शासन व सैन्य सगठन के बारे में अधिकृत सूचना देने वाली एक मात्र उसकी पुस्तक पर ही हम निर्भर रह सकते हैं। लाल चीन के ५ चीनी डालर मासिक पाने वाले खजांची लिनपाई चू ने स्नो को बताया कि लाल चीन का मासिक व्यय केवल ३ लाख २० हजार डालर है। चूंकि सोवियत का प्रत्येक अफसर क्रांतिकारी देश भक्त है अतः भोजन कपड़े के अतिरिक्त हम नाम मात्र की मजदूरी पर काम करते हैं। सोवियत सेना और शासन प्रबंध के बारे में उसने कहा कि–

'जब हम यह कहते है कि हम जनता पर टेक्स नहीं लगाते तो हम सच्ची बात कहते हैं। लेकिन हम शोषण करने वाले वर्गों पर खूब कर लगाते हैं, उनका अतिरिक्त सामान और रुपया जब्त कर लेते हैं। इस प्रकार हमारा टेक्स प्रत्यक्ष होता

है। लेकिन कोमिंताग का हाल इनका उल्टा है, वहां अन्ततः सारे करों का बोझ मजदूरों और गरीब किसानों पर पड़ता है। यहाँ पर केवल १० प्रतिशत लोगों, जमींदारों व सूबेदारों पर ही कर लगते हैं। हम बड़े व्यापारियों पर थोड़ा सा कर लगाते हैं पर छोटों पर जरा भी नहीं। बाद में हम किसानों पर आमदनी के हिसाब से थोड़ा सा टेक्स लगायेंगे लेकिन अभी तो आम जनता पर से प्रत्येक टेक्स हटा लिया गया है।

का० लिन ने बताया कि आमदनी का दूसरा जरिया लोगों द्वारा दिया गया नकद, अनाज व कपड़े के रूप में लालसेना को चन्दा है। हमारे समर्थक कोमिन्तांग इलाके से भी अपना चन्दा भेजते हैं।

'लूट या जब्ती'

जब एडगर स्नो ने पूछा कि जब्ती से तुम्हारा अर्थ वही है जिसे लूट कहा जाता है तो कां० लिन ने थोड़ा हंसकर कहा 'कोमिन्तांग' इसे लूट कहती है। अगर जनता का शोषण करने वालों पर कर लगाना लूट है तो कोमिन्तांग का आम जनता पर कर लगाना भी लूट है। लेकिन लाल सेना उस अर्थ मे नहीं लूटती जैसे सफेद सेना (पूंजीवादी सेना) लूटती है। जब्ती केवल अर्थ कमीशन द्वारा अधिकृत व्यक्ति ही कर सकते हैं। जब्ती की प्रत्येक चीज की फेहरिस्त सरकार के पास भेजी जाती है और उनका उपयोग आम समाज के हित में होता है। व्यक्तिगत लूट खसोट के लिए अत्यन्त कड़ी सजा निश्चित है। जनता से पूछो कि क्या कभी लाल सैनिक बिना पैसे दिये कोई चीज भी लेते हैं?"

सोवियत इलाके की आमदनी का ४० से ५० प्रतिशत भाग जब्ती द्वारा, १५ से २० प्रतिशत चंदे और शेष लालसेना की खेती,

व्यापार कर, आर्थिक निर्माण व सरकारी ऋणों द्वारा आता था। सेना की जरूरत का ८० प्रतिशत बन्दूकें, रायफलें और मशीनगनें व ७० प्रतिशत गोला बारूद दुश्मन से छीना जाता था। शेष लाल सेना के शस्त्रागारों मे बनते थे।

राजनैतिक, आर्थिक व सैनिक संगठनों की तरफ ध्यान देते समय कम्युनिस्टो ने जनता के सांस्कृतिक धरातल को उठाने के प्रयत्नो को कम महत्व नहीं दिया इस अत्यंत पिछड़े हुए प्रदेश में इन्होंने शिक्षाको निःशुल्क और अनिवार्य करार दे दिया। शीघ्र ही २८० प्राइमरी स्कूलें, प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों की शिक्षाका स्कूल, खेत, टेक्सटाइल, ट्रेड यूनियन और पार्टी स्कूल खोले गये। किताबों और कापियों के अभाव में भी बालकों और प्रौढ़ों को पढ़ना लिखना सिखाया गया। लाल सांस्कृतिक जत्थे अपने गीतों, नृत्यों, नाटको और चित्रों द्वारा जनता को जापान का मुकाबला करने, सयुक्त मोर्चा बनाने और सामाजिक राजनैतिक बुराइयों को मिटाने के लिये जगाते।

येनान में अफीम की खेती और खाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। अफसरों के भ्रष्टाचार का कहीं नाम नहीं था। वेश्यावृत्ति, बहुपत्नी व बहुपति प्रथाओं को रोक दिया गया। अब बच्चों को कोई गुलाम नहीं बना सकता था। शादी के कानून सरल बना दिये गये। शादी के लिये लड़की की उम्र कम से कम १८ और लड़के की २० होना अनिवार्य करार दिया गया। विवाह के लिये दोनों का सहमत होना जरूरी था। दहेज पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और तलाक का कानून सरल बना दिया। एशिया की एक पिछड़े हुए भाग मे इनकी प्रगति क्या कम थी ?

चीन के शेंशी-कांसू चिगहाई, निंगसिया और सुइयान

प्रान्तों में जिनका कुल क्षेत्रफल रूस को छोड़ कर शेष योरोप के बराबर है, तमाम मशीनों को यदि इकट्ठा किया जाता तो वे एक बड़े मोटर कारखाने के पुर्जे जोड़ने वाले विभाग से भी कम होती। इस प्रदेश में येनान का लोक राज्य था। चारों तरफ के घेरे को तोड़ कर दूर से मशीने मंगाना भी सम्भव नहीं था। लालसेना अपने महान् अभियान मे अवश्य ही खच्चरों पर लाद कर कुछ सीने की मशीने, लेथ और टर्निंग मशीनें लाई थीं जिन्हें 'लालकारखानो' मे लगाया गया। मशीनें और कच्चा माल लाने के लिए लालसेना को कई युद्ध करने पड़े। इस प्रकार कपड़ा बुनने वस्त्र सिलने, जूते बनाने, कागज बनाने के छोटे २ कारखाने स्थापित किये गये जो लाल इलाके की जरूरतों को पूरा करते।

लेकिन सबसे बड़े उद्योग नमक, तेल और कोयले के थे। यंगचिंग म कोयले की खानें थी जिन्हें चालू किया गया। उन दिनों चीन में सबसे सस्ता कोयला लाल इलाको में मिलता था। चीन की बड़ी दीवार के नीचे झीलो में नमक निकाला जाता था। इस अच्छी किस्म के नमक को सस्ते भाव मगोलो को देकर कम्युनिस्टो ने उन्हें अपना मित्र बना लिया।

लाल इलाके में चीन के एक मात्र तेल कूप थे। कम्युनिस्टों के आने के पहले इन पर एक अमरीकी कम्पनी का कब्जा था अब इन पर जनता का अधिकार था। यहाँ का उत्पादन कम्युनिस्टो ने ४० प्रतिशत बढ़ा दिया और तेल, पेराफिन, वेसलीन, पेट्रोल, मोम आदि कोमिन्तांग इलाकों में बेचने लगे। इस उद्योग से सरकारी बजट को पूरा करने में बड़ी मदद मिली।

सोवियत इलाके का अपना एक मुख्य औद्योगिक केन्द्र भी था जहाँ कपड़ा बुनने, सीने, जूता बनाने, फार्मेसी के अतिरिक्त एक 'शस्त्र निर्माण शाला' भी थी। यह शाला मिट्टी के पहाड़ों में

गुफाएं काट कर बनाई गई थी, जिसमे हवा और रोशनी के लिए काफी छेद थे। इसमें ११४ व्यक्ति बारी २ से काम करते थे। इसके इंजिनियरों मे कुछ चीन के बहुत बड़े इंजिनियर थे जिनकी शंघाई और अन्य स्थानों पर हजारो रुपयों की आमदनी थी। लेकिन संसार के सुखो को लात मारकर, अपने प्राणों की बाजी लगाकर वे इस इलाके में आए और यहाँ के पुराने और अपूर्ण औजारों से उसी स्पिरिट से काम करने लगे जैसे औद्योगिक-क्रांति के पूर्व आज के उद्योग धन्धों के पूर्व करते थे।

सोवियत इलाकों की जरुरतों को पूरा करने के अलावा इन कारखानों का महत्व यह था कि– १ अरब की जन संख्या वाले एशिया मे यहीं मजदूर निश्चित और सुखी थे। औद्योगिक मानों में यह कारखाने अत्यन्त पिछड़े थे। आधुनिक जरुरतों को देखते हुए यहाँ बिजली, सिनेमा, रेल और मोटरो का नाम भी कहाँ था? खाने पीने के लिए तरह २ के स्वादिष्ट पदार्थ कहाँ थे? पर यहाँ लोग स्वस्थ्य और संतुष्ट थे। यही एक जगह थी जहाँ मजदूरों का शोषण नहीं होता था उन्हें मावत्सेतुंग और चूतेह से तिगुनी तनख्वाह मिलती थी १५ डालर चीनी माहवार! स्त्री और पुरुषों के लिए समान काम के लिए समान वेतन मिलता था जो आज भी इंगलेण्ड और अमेरिका जैसे देशों मे भी नहीं मिलता। रहने के कमरे और भोजन सरकार देती थी। डाक्टरी चिकित्सा निःशुल्क थी, चोट लगने पर मुआवजा और प्रसव के पहले वपश्चात् स्त्री को सवेतन चार माह का अवकाश मिलता था बेकारी और भूखमरी के लिए कोई स्थान नहीं था टेकनिकल माने मे पिछड़ा हुआ येनान न केवल छोटी मोटी चीजो को ही पैदा करता था बल्कि वह तो समूचे चीन के भविष्य को अपनी प्रयोग शाला मे ढाल रहा था।

१६४७ में जब अमरीका की मदद से येनान पर च्यांग की फौजें चढ़ने जा रही थी, प्रधान सेनापति कामरेड जू देह ने कहा– हजारों वर्षों से चीनी जनता निरंकुश शासकों के नीचे दबी रही है लेकिन अब उसने समूचे उत्तरी चीन में लोकशाही का स्वाद चख लिया है अब तानाशाह उसे पराजित नहीं कर सकते।

भाग ३

जापान विरोधी संघर्ष

Arise all ye who will not be Slaves,
Our flesh and blood will build a new Great wa..

"जो गुलाम होना नहीं चाहता हो, वह उठ खड़ा हो!
हमारा माँस और खून एक नई महान दीवार खड़ी
करेंगे!"

जापान का विरोध

नागरिको ! चीन के सपूतों···

या तो हम जापान का प्रतिरोध करें जिसका अर्थ है जीवन अथवा संघर्ष, पथ त्याग दें जिसका अर्थ है मृत्यु······

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का आह्वान

सियान में राष्ट्रीय सेना की बगावत और च्यांग की गिरफ्तारी ने पूर्वी ऐशिया के इतिहास की गति को बदल दिया। एशिया के इस बड़े भूभाग के स्वार्थी वर्गों को जनता के दबाव के कारण गृह युद्ध की नीति त्याग कर साम्राज्यवादियो का प्रतिरोध करना पड़ा। च्यांग को गिरफ्तार करने वाले सेनापतियों और कम्युनिस्टों ने जापान विरोधी संयुक्त मोर्चे का ऐलान किया और च्याग के सामने ८ बातें स्वीकार करने के लिए रखी।

१. नानकिंग सरकार का पुनः संगठन करो ताकि राष्ट्रीय मुक्ति की जिम्मेवारी सभी पार्टियों पर रहे।

२. गृहयुद्ध की नीति का अन्त करो और जापान के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध की नीति अपनाओ।

३, शघाई में जापान विरोधी आन्दोलन के ७ गिरफ्तार

नेताओं को रिहा करो।

४. सभी राजनैतिक बन्दियों को मुक्त करो।

५. लोगों को सभाएं करने की आजादी हो।

६. राजनैतिक आजादी और देशभक्त संगठन बनाने के अधिकार की रक्षा करो।

७. डा० सन यात सेन की वसीयत को अमली रूप दो।

८. फौरन एक राष्ट्रीय मुक्ति सम्मेलन बुलाओ।

सियान में बातचीत किस प्रकार हुई, यह अभी तक ऐतिहासिक रहस्य है। लेकिन परिणाम स्वरुप च्यांग ने गृह-युद्ध की नीति त्यागने और ८ बातों को अमली रूप देने का वादा किया। उसने जापान-पक्षी अफसरों को निकालने, इंग्लैंण्ड, अमरीका और सोवियत से दोस्ती बढाने, लोगों को राजनैतिक आजादी देने और नानकिंग सरकार के ढांचे में कुछ प्रजातांत्रिक परिवर्तन करने का भी तय किया। इसके बदले में अपने राष्ट्रीय नेता का सम्मान बढाने के लिये सियान घटना पर दूसरा ही रंग चढाया गया, च्यांग के बागी सेनापतियों ने अपनी गल्ती के लिये क्षमा मांगी। उन्हे बगावत के अपराध में भारी सजा देने का नाटक किया गया।

सियान में कम्युनिस्टों के खिलाफ सारी कार्यवाही को रोक दिया गया। प्रेस व सभाओं पर से प्रतिबंध हटा दिये गये। ३०० राजनैतिक कैदी रिहा किये गये। संयुक्त मोर्चे की नीति का गावों, शहरों और शिक्षालयों में प्रचार करने की छूट देदी गई। गृह युद्ध के अन्त के समाचारों से चीन में खुशी की लहर फैल गई। उत्तर चीन के किसान, जिनकी खेती और जिन्दगी नानकिंग सरकार की युद्ध नीति का शिकार होती थी उन्हें सबसे अधिक राहत पहुँची। जेलों से देशभक्त बाहर आकर

जनता को जगाने लगे। पुलिस देशभक्तों को छोड़ कर जापान समर्थक लोगों के पीछे पड़ी। जिन पर नानकिंग का शिकंचा कसा हुआ था अब फिर आजादी से अपने लोगो को जगाने लगे।

जापान इस परिवर्तन को देख कर चौकन्ना हो गया। वह तो गृहयुद्ध की आग अधिक भड़का कर ५ उत्तरी प्रान्तों को लेना चाहता। अतः उसने अपनी ताकत से इस ऐकता को खत्म करने का निश्चय किया। ७ जुलाई को पिपिंग के समीप जापानी सैनिक चाँदमारी की प्रेक्टिस कर रहे थे! इस सिल-सिले में आधी रात के बाद इन सैनिकों ने अपने एक सिपाही को ढूंढने के बहाने शहर मे घुसना चाहा। शहर में घुसने का जापानियों को कोई भी हक नहीं था अतः चीनी अधिका-रियों ने जापानियों को अन्दर जाने की इजाजत नहीं दी। जापा-नियों को बहुत बुरा लगा, उन्होंने चीनी सन्तरियों पर हमला कर दिया। चीनी पहरेदारों ने अपना बचाव किया। बस जापान को युद्ध छेड़ने के लिए बहाना मिल गया।

च्यांग काई शेक ने ऐलान किया, 'अब बर्दाश्त करने की सीमा हो चुकी है...अब केवल एक काम रह गया है... तमाम राष्ट्र का भयानक संघर्ष मे नेतृत्व करना। मुझे विश्वास है, कि अन्तिम विजय हमारी होगी।"

जापान ने चीन पर जल, थल, नभ, तीनों ओर से आक्र-मण किया। मंचूरिया से हवाई छाते के नीचे स्थल सेनाएं बढ़ी उधर जापानी युद्ध पोत टिन्टसीन, शघाई और केन्टन तक गये और बाद में यांगत्सी क जल मार्ग से मध्य चीन में घुसे। जापानी हवाई जहाज शहरों कस्बों और गांवों पर बम बर्साने लगे। उपर से आने वाली इस आफत ने लोगों के जापान

के विरुद्ध क्रोध जागृत करने मे बड़ी मदद थी। युद्ध क्षेत्र मे दूर गांवों मे भी लोग जापान और उसके खूनी कारनामो को जानने लगे।

पिपिंग काण्ड के बाद उत्तरी चीन के अधिकारियों और जापान में २८ जुलाई तक बातचीत होती रही। इतने समय मे जापान ने विशाल आक्रमण के लिए तय्यारियाँ करली। धावे के समय भी होपे और चहार का गवर्नर जापान से समझौते की बातचीत करने लगा। राष्ट्रवादी नायकों की कुटिलता व ढुल मुल पन के कारण यहाँ पराजय मिली। लोगो को सन्देह होने लगा कि चीन जापान का मुकाबला कर सकेगा। जापान के सैनिक अधिकारियो का दावा था कि वे तीन महिनो में चीन को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर देंगे। वे चीनी सैनिको को उनके सामन्ती अफसरों, शस्त्रो, अनुभव और ट्रेनिंग से आंकते थे। वे एक बात आंकना भूल गये 'जाग्रत जनता का मनोबल।' अब तक उन्होंने युद्ध सामन्तों के भाड़े के टट्टू सैनिकों को देखा था। लेकिन इस बार उन्हें सामना करना पड़ा एक देश भक्त सेना का, जिसे वे ३ महिने तो क्या ८ वर्ष में भी घुटने टेकने के लिए मजबूर नही कर सके।

जापान को शंघाई लेने मे ही ३ माह लग गये। जापानी सेना ने दुस्साहस कर अपने युद्ध-पोतों को चीन के इस महान नगर पर भेज दिया। उन्हे विश्वास था कि यदि इसे कुछ घन्टों में नहीं तो दिनों मे जरूर ले लेंगे। लेकिन यहाँ चीनी सेना और जनता ने ईंट का जबाब पत्थर से दिया। हफ्तों जापान की जल, थल, वायु सेना को चीनियों से लड़ना पड़ा। भयानक क्षति के पश्चात ही वे इस शहर पर अधिकार कर पाए। शंघाई के प्रतिरोध ने बता दिया कि चीन किस प्रकार जापान का मुकाबला

कर सकता है।

अधिकृत इलाके में जापान अवर्णनीय जुल्म ढाने लगा। अपने अत्याचारों द्वारा वह जनता के मनोबल को तोड़ देना चाहता था, बता देना चाहता था-जापान का मुकाबला करने का परिणाम। क्योंकि इन अत्याचारों का परिणाम आक्रान्ता के विरुद्ध ही हुआ। जिन लोगों ने इन जुल्मों को देखा और सुना उनके दिलों में जापान के खिलाफ नफरत बढ़ी। जापान अधिकृत इलाकों के शरणार्थियों की रोंगटे खड़े करने वाली दर्दनाक कहानियों को सुन कर स्वतन्त्र चीनी इलाके के लोगों का खून उबल पड़ता था।

युद्ध के प्रारम्भ में जापान का इरादा था कि उत्तरी प्रान्तों और शंघाई पर अधिकार कर नानकिंग सरकार को समझौता करने के लिए मजबूर कर देना। लेकिन जब इससे काम नहीं चला तो उसने नानकिंग पर धावा किया और शीघ्र ही उसे ले लिया। नानकिंग में जनता का मनोबल तोड़ने के लिए ५०००० लोगों का कत्लेआम किया। नानकिंग सरकार हांको चली गई। जापानी अधिकारियों ने अब चीन सरकार को झुकाने के स्थान पर च्यांग के साथियों में से कुछ को खरीद कर उनके जरिये चीन के महत्वपूर्ण भाग पर राज्य करने का निश्चय किया और थोड़े समय बाद कोमिन्तांग के एक बड़े नेता वांग चिंग वाई के नेतृत्व में एक कठपुतली सरकार कायम की।

चीन की सरकार के पास रूस से थल मार्ग द्वारा सहायता पाने के अतिरिक्त दक्षिण में केन्टन का बंदरगाह था जहाँ से वह विदेशों से हथियार व रसद खरीदती थी। इंग्लैण्ड और अमरिका राष्ट्रीय सरकार को शस्त्र बेचते थे साथ ही वे जापान

को भी सैनिक माल बेचते थे। इस प्रकार वे दोनों तरफ से मुनाफा कमाने लगे। जापानी जलसेना ने कोमिन्तांग के गद्दार सेना नायकों की मदद से भयानक समुद्री आक्रमण कर केन्टन ले लिया। अब बर्मा रोड़ को छोड़ कर मदद लेने का और कोई रास्ता बचा न था। केन्टन के पतन के बाद निराश च्यांग की सरकार हेंको छोड़कर दूर चुंगकिंग चली गई। अब राष्ट्रीय सरकार चीन के पिछवाड़े में थी।

दो दल दो नीतियां

"हमारी सेना उत्तर चीन से कभी पीछे नहीं हटेगी। हम जनता के संग रहेंगे, उनका संगठन करेंगे, उन्हें हथियार देंगे और जापानी साम्राज्यवादी फौजों के खिलाफ उस वक्त तक लड़ते रहेंगे, जब तक उनके एक २ सिपाही को चीन से भगा नहीं देते।"

जनरल चूतेह की पं० नेहरू से अपील का अंश

ऐशिया के निहित स्वार्थ वर्ग साम्राज्यवादियों के विरुद्ध हैं लेकिन उससे अधिक वे अपने देश की इन्कलाबी जनता से भयभीत हैं। साम्राज्यवादियों के प्रति उनका द्वेष छोटे डाकू के बड़े डाकू के प्रति द्वेष के समान है। चीनी शोषक वर्ग योरोपियनों और जापानियों का विरोध इसलिए करत थे कि वे चीन का लूट का बड़ा भाग स्वयं अपने लिए रख लेते थे। जापान का दिनों दिन चीन में बढ़ते जाना उन्हे बहुत अखरता था लेकिन जापान का डटकर मुकाबला करने की अपेक्षा वे बन्दर घुड़कियों, प्रचार और इधर उधर के प्रभाव द्वारा जापान के उत्तेजक रवैये में परिवर्तन करा कर संतुष्ट रहना चाहते थे।

उनका विश्वास था कि चीन में योरपीय स्वार्थों और जापानी स्वार्थों में टक्कर होना स्वाभाविक था अतः उनके विरोध के कारण जापान चीन मे अधिक पैर फैलाने की हिम्मत नहीं करेगा। और अगर लड़ना ही है। तो पहले जनता की इन्कलाबी शक्तियो को कुचल कर रख दिया जाय। लेकिन जनता के विशाल जापान विरोधी आन्दोलन, च्यांग की गिरफ्तारी आदि ऐसी घटनाएं थी जिन्होने कोमिन्तांग के स्वार्थी वर्गों की नीति को खत्म किया। यहाँ यह नही भूलना चाहिये कि स्वयं चीनी पूंजीपति वर्ग का एक बड़ा भाग अपने स्वार्थों के कारण जापान उग्र विरोधी होता जा रहा था।

जापान विरोधी संघर्ष मे कोमिन्तांग उतरी लेकिन वह इस बात के लिए बहुत सचेत थी कि कहीं युद्ध के दौरान में मुख्य शक्ति जनता के हाथो मे नही चली जाय। च्यांग का विश्वास था कि इस युद्ध मे कम्युनिस्ट जापान के हाथों खत्म हो जावेंगे और फिर इग्लेंण्ड अमरीका आदि मुल्क मिल कर जापान को पराजित कर देंगे। अतः युद्ध के बाद मै चीन का निरंकुश शासक बन बैठूँगा। इस धारणा के कारण च्यांग की नीति रही, युद्ध कम करना, अपनी शक्ति को बचा कर आगे के लिए सुरक्षित रखना। उधर कम्युनिस्टो की मान्यता इसके विपरीत थी। उनके नेता मावत्सेतुंग के शब्दों मे—

'चीन के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की विजय विश्व साम्यवाद की विजय का एक अंग होगी। चीन मे साम्राज्यवाद की पराजय का अर्थ है साम्राज्यवाद के सबसे बड़े आधार का अन्त। अगर चीन मुक्त हो गया तो विश्वक्रांति आगे बढ़ेगी। अगर हमारा मुल्क दुश्मन का गुलाम बन गया तो हम सब कुछ खो देंगे। गुलामों के सामने मुख्य कार्यक्रम समाजवाद

नही बल्कि राष्ट्रीय मुक्ति के लिए सघर्ष करना है। अगर हम से हमारा देश छीन लिया जाता है, जहाँ हमें कम्युनिज्म को असली रूप देना है तो हम कम्युनिज्म की चर्चा भी कर सकते" इस प्रकार हम देखते हैं कि चीनी सोवियत के लिए जापान विरोधी युद्ध एक दाव नहीं बल्कि जीवन मरण का प्रश्न था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि संयुक्त मोर्चे के भीतर भी दो दल थे चीनका समान शत्रु था पर दोनों के युद्ध उद्देश्य भीन्न थे। दोनों की अपनी २ सेनाएँ और इलाके थे। दोनों के अलग२ पृष्ठभूमि थी। जहाँ कोमिन्तांग पर पूंजीपतियों, जमींदारों और उनके मुसाहिबो का अधिकार था कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म ही चीन के मजदूर-किसानों के साम्राज्यवाद जमींदार विरोधी आन्दोलनों से हुआ था। इन लोगों का राष्ट्रीय क्रांति के बारे में अपना अलग रुख था। जनता के प्रति इनका व्यवहार जमींदार-पूंजीपति-अफसरों का सा नहीं था। यह लोग शोषण के खिलाफ लड़ रहे थे जबकि कोमिन्तांग समर्थक शोषण पर ही जिन्दा थे। अब तक कोमिन्ताग सेना की पीठ पर देश के सारे साधन थे। उसके अस्त्र शस्त्र दूसरी चीनी सेनाओं के मुकाबले मे आधुनिक थे। उसके पास प्रथमश्रेणी के विदेशी सैनिक सलाहकार थे। यह सेना युद्ध सामन्तों और इन्कलाबी जनता से भूमती आ रही थी अतः इसके सिपाही भाड़े के टट्टू थे जो जनता पर मनचाहा जुल्म करते थे। इस संघर्ष मेंकोमिन्ताग के पास कई प्रान्तीय सेनाएँ थीं जिनका संगठन ढीलाढाला, योग्य अफसरों और अनुभवों का अभाव और राष्ट्रीय वफादारी डावांडोल थी।

सियान वार्ता के परिणाम स्वरूप कम्युनिस्टों ने सरकार को उलटने, जमींदारों की जमीन जब्त करने आदि नीतियों को

त्याग कर सभी वर्गों के जापान विरोधी संयुक्त मोर्चे को सफल बनाने मे योग दिया। कम्युनिस्टों ने अपने इलाके को राष्ट्रीय सरकार के मातहत विशेष इलाके के रूप मे स्वीकार किया और लाल सेना का नाम बदल कर ८ वीं रूट सेना रखा। सेना और इलाके नानकिंग सरकार के मातहत स्वीकार किये गये। कम्युनिस्ट पार्टी को अब भी कानूनन करार नहीं दिया गया लेकिन सलाहकार राष्ट्र कौंसिल और सेना की राजनैतिक समिति आदि में कम्युनिस्टों को भी लिया गया। कोमिन्तांग शासन मे पहली बार लोगों को राजनैतिक स्वतन्त्रता मिली।

कम्युनिस्ट इलाके से पहले से ही जनवादी शासन था। लाल सेना क्रान्तिकारी स्वयं सेवकों की सेना थी जिसका फौजी अनुशासन कड़ा था और राजनैतिक चेतना बढी चढ़ी। जनता मे ही उसका आधार था जो उसे भाई बेटों की सेना कहती थी। साधन सम्पन्न कोमिन्तांग सेनाएँ अब तक अपने से कमजोरो से ही लड़ी थीं। दूसरी ओर लाल सेना साधन-हीन होकर भी अपने से प्रबल सेनाओ से लड़ी थी। अपने अस्त्र शस्त्र के लिए वह शत्रु पर निर्भर रहती थी। गति और छापामार युद्ध में वह अद्वितीय थी। अपने अनुभवों के कारण उसने अपनी स्वतत्र युद्ध नीति अपनाई। इन अलग नीतियों के कारण युद्ध से एक पक्ष अत्यन्त प्रबल होकर निकला दूसरा पहले के मुकाबले में बहुत कमजोर हो गया।

युद्ध के प्रारंभ से ही कोमिन्तांग ने जम कर युद्ध करने की नीति अपनाई। उसने बड़े २ शहरों को अधिकार में रखने की कोशिश की। लेकिन जापान जैसे सुसज्जित शत्रु से इस प्रकार लड़कर जीतना असंभव था क्यों कि राष्ट्रीय सेनाओं का संगठन, अनुशासन नेतृत्व और यांत्रिक शक्ति जापान के मुकाबले में

कुछ भी नहीं थी। परिणाम स्वरुप समूचे युद्ध में एक महत्वपूर्ण युद्धस्थल के अतिरिक्त कोमिन्तांग सेनाएं कहीं जीत न सकीं। अफसरों की लापरवाही से बड़ी संख्या में सैनिक मारे गये, गिरफ्तार हुए और शत्रु पक्ष में जाकर मिल गये। राष्ट्रीय और अन्तर राष्ट्रय परिस्थितियों के कारण वानचिंगवाई गुट को छोड कर शेष कोमिन्तांग ने जापान के आगे झुकना पसन्द नहीं किया लेकिन दो वर्ष बाद उनका प्रतिरोध नगण्य सा रह गया। कई मोर्चों पर तो कोमिन्तांग सेना नायकों और जापानी अधिकारियों के बीच गुप्त समझौते रहे और कई स्थानो पर उन्होंने जापानियों को कम्युनिस्ट छापेमारों के विरुद्ध मदद दी या उन्होंने स्वयं छापेमार इलाकों पर हमला किया या उनको घेरा। येनान के मुख्य इलाके के चारों ओर युद्ध के अगले वर्षों में च्यांग की सर्वश्रेष्ठ ५ लाख सेना जमी रही।

कम्युनिस्टों का विश्वास था कि रोम बर्लिन, टोकियो धुरी का अन्त निश्चित है दूसरा, युद्ध बहुत लम्बा होगा। एक लम्बे युद्ध में ही जापान को उलझा कर थका कर पराजित किया जा-सकता है। इस लम्बे थकावट के युद्ध को जीतने के लिए जरूरी है कि समूची जनता को रणक्षेत्र में उतारा जाय। इसके लिए जहाँ एक तरफ बड़ी स्थाई सेना का होना और उनके द्वारा जम कर लड़ना जरूरी है वहाँ दूसरी तरफ मामूली शस्त्रों से सुसज्जित छापामार सेनाएं 'चालों के युद्धों' द्वारा शत्रु की बड़ी स बड़ी सेनाओं को पराजित कर सकती है। इस सफलता के लिए जरूरी है कि दुश्मन द्वारा अधिकृत इलाकों में बड़े पैमाने पर गुरिल्ला कार्यवाही की जाय। इन छापामारों की सख्या सैनिक अनुभव, और अनुशासन वृद्धि के साथ इन्हे नियमत सेनाओं में परिणित किया जाय।

सियान काण्ड के समय से ही कम्युनिस्टों ने अपनी मुख्य सेनाओं को पीत नदी के उत्तर मे ऐसे स्थानो पर भेज दिया था जहाँ से वे आसानी से जापान के अगले हमलो का मुकाबला कर सकती थी। शान्सी प्रान्त के पिंगसीन दर्रे में पहली बार चालों के युद्ध और छापामार आक्रमणों के कारण जापान को पराजित होना पड़ा। लेकिन अभी तक जापान ने कम्युनिस्ट सेनाओ के खतरे को पहचाना नहीं था। पहले दो वर्षों तक वे शहरो को लेते रहे और मुख्य इलाको से राष्ट्रीय सेनाओं को भगाते रहे। कम्युनिस्टो ने जापान की लापरवाही का लाभ उठा कर तेजी से जापान अधिकृत इलाकों मे घुस गये। इन इलाकों मे उन्होने प्रतिरोध के लिए जनता को सगठित किया और जापानी शासन का अन्त कर आजाद प्रजातन्त्री हकूमत सगठित की। बड़े शहरो, रेल्वे स्टेशनो मुख्य सड़कों और किलेबन्दियों से ३ मील दूर बिना बड़ी तैयारियों के जाने की जापानियों की बाद मे हिम्मत नहीं होती थी। हर समय हर जगह उन्हें गुरिल्ला सैनिकों का डर सताता था। हेरिसन फोरमन नामक अंग्रेज पत्रकार के अनुसार जो स्वयं छापामार इलाको में घूमा और जिसने अपनी आँखों से छापामार युद्ध देखे, मंचूरिया के अलावा शेष चीन में १६ विशाल आजाद इलाके थे जहाँ आजाद हकूमतें और छापामार सेनाएं थी। हिन्दुस्तान मे डा० कोटनीस इन्हीं छापामार इलाकों मे काम करते हुए मरे थे। इन छापामार कार्यवाहियों और आजाद इलाकों के बारे में अनेक देशों के विभिन्न विचार वाले पत्रकारों ने लिखा है। इन आजाद इलाकों का जन्म जनता के विभिन्न भागो से हुआ और जिस प्रकार अनेक छोटे मोटे नदी नाले बड़ी नदी मे जाकर मिल जाते हैं उसी प्रकार छापेमार दल लाल सेना में मिलते रहे।

इप्सर्टन के अनुमार १९३८ के मध्यतक अकेले शान्सी-चाहा-होपे आजाद इलाके मे तरह २ तत्वों को मिला कर १ लाख से ऊपर नियमित सेना थी और संगठित स्वयं सेवक इससे कई गुना अधिक थे। इस आजाद इलाके में मजदूर, किसान, छात्र और महिला संगठनों के २२ लाख सदस्य थे। इन इलाके को पुनः जीतने के लिए ही जापान को ६-७ डिविजन सेना रखनी पड़ी। युद्ध के पहले जापान का दावा था कि वे इतनी सेना से सारे चीन को जीत लेंगे। इन आजाद इलाकों मे जनता प्रजातन्त्री तरीके से शासन चलाती थी, जनतन्त्री सरकार टेक्स लेती और जापान विरोधी प्रतिरोध को संगठित करती। युद्ध के अन्तिम वर्षो मे जापान की अधिकांश सेना इन आजाद इलाको मे ही उलझी हुई थी।

कम्युनिस्टो ने स्वयं तो जापान अधिकृत शहरों और देहातो मे प्रतिरोध आन्दोलन को पैदा कर उसमे आगे बढ कर भाग लिया। साथ ही उन्होंने दूसरे दलों के और निर्बल देशभक्तों को को अपने अनुभव बताए और उनकी खुलकर मदद की। इसके परिणामस्वरूप कम्युनिस्टो की देशभक्ति की छाप अन्य लोगों पर भी पड़ी और इससे उनका प्रभाव बहुत बढ़ गया। येनान में उनके पास ८ वीं रुट सेना थी ही, यांगसी की घाटी में च्यांग की इजाजत लेकर उन्होंने चौथी सेना का निर्माण किया।

जापान से लडते २ और च्यांग की तमाम कुचालों, षड़यंत्रों और वादा खिलाफी के बावजूद भी १९४४ के प्रारंभ में लाल सेनाओं की स्थाई सेना की संख्या ४७०००० हो गई और वर्ष के अन्त तक यह संख्या ८ लाख तक पहुंच गई। स्वयं सेवकों की विशाल संख्या तो ४० लाख थी। १९४४ के वसन्त से ही लाल सेनाएं जापान का मुकाबला करने वाली चीनी सेनाओं का

गृहयुद्ध पुनः भड़काने की कोशिश

युद्ध की पवित्रता पुकार उठी देश को,
और भाई २ की सहायता को चल पड़ा;
लेकर प्राण शत्रु को भगा देंगे रण से,
और विजयी हो हम गीत गाते लौटेंगे।

(एक चीनी गीत)

चीन जापान युद्ध के प्रथम वर्ष में जापान का दबाव मुख्य सेना पर था। शंघाई नानकिंग और हांकों का प्रदेश इस समय जापान के हाथों में जा रहा था। यागत्सी घाटी का यह प्रदेश वर्तमान चीन का हृदय है। यहाँ चीन के अधिकांश उद्योग धन्धे केन्द्रित है। यह एक अत्यन्त उपजाऊ प्रदेश है और देश का अधिकांश विदेशी व्यापार यहाँ से होता है। यहाँ के लोग अधिक पढ़े लिखे व जाग्रत हैं। युद्ध पूर्व यह इलाका कोमिन्ताग का गढ़ था। कम्युनिस्ट चूंकि अपने इलाके के राजनैतिक शासन को केन्द्र के मातहत स्वीकार कर चुके थे और संयुक्त मोर्चे की नीति को आगे बढ़ाने के लिए च्यांगकाईशेक का सैनिक नेतृत्व स्वीकार कर चुके थे अतः उन्होंने देश के प्रधान

सेनापति से यांगत्सी के दक्षिण में प्रतिरोध संगठित करने की इजाजत मांगी। बड़ी लिखापढ़ी के पश्चात च्यांग ने यांगत्सी के दक्षिण में केवल १२००० सैनिकों की नई चौथी सेना संगठित करने की इजाजत दी।

महान अभियान के समय कम्युनिस्ट काफी संख्या में अपने सैनिकों और छापामारों को मध्य होनान, हूपह, अन्वई व कियांग्सी प्रान्तों मे च्यांग की सेनाओं को उलझाने क लिए छोड़ गये थे। च्यांग की इजाजत से गृहयुद्ध के इन अनुभवी योद्धाओं से नई चौथी को प्रारम्भ किया गया। इसके उपलक्ष में च्यांग ने मध्यचीन के कम्युनिस्ट प्रभावित इलाकों में भूमि सुधार करने, कम्युनिस्टों को स्थानीय स्वराज्य में भाग लेने देने और नई चौथी की शस्त्रादि से मदद करने का वादा किया। लेकिन यह वादा कभी पूरा नहीं किया गया।

जब तक नई चौथी शंघाई नानकिंग प्रदेश की ओर चली च्यांग की सेनाएं भाग चुकी थीं। सर्वत्र जापानियों, पिटठुओं और डाकुओं का आतँक था। नई चौथी ने जाते ही जापानियो और पिट्ठुओं से लड़ना प्रारंभ कर दिया। जापानियों का ध्यान दूसरी तरफ केन्द्रित होने के कारण इसे प्रारंभ में ही खूब सफलता मिली। लोग बड़ी संख्या में इस सेना में भर्ती होने लगे और जापानियों से छीने गये शस्त्रों द्वारा इस सेना को सज्जित किया गया।

इस इलाके का कोमिन्ताग सेनापति ताई ली दुहरा खेल खेलने लगा। उसकी सेना का एक भाग कस्बों मे जापान से मल गया। जब लाल सेना इन कस्बों पर हमला करती तो वह विरोध करता कि तुम राष्ट्रीय सेना पर क्यो आक्रमण करते हो। कुछ समय बाद यह गद्दार अपनी १ लाख सेना लेकर

जापान से मिल गया। यह सेना इस इलाके को खूब जानती थी अतः लाल सेना का काम और भी कठिन हो गया।

च्यांग का इरादा हम पहले ही बता चुके हैं। वह जापान के हाथों कम्युनिस्टों को पिटवा कर मित्रराष्ट्रों के हाथों जापान को पराजित कर समूचे चीन पर एकछत्र छा जाना चाहता था। कम्युनिस्टों के अतिरिक्त च्यांग के कई दूसरे युद्ध सामन्तों और प्रान्तीय सेनापतियों से द्वेष था। इस युद्ध में वह उन्हें भी कमजोर कर देना चाहता था। अतः च्यांग अपनी सुसज्जित सेनाओं को युद्ध क्षेत्र से दूर रखने लगा और मुसीबतों में भी अपने सेनापतियों की मदद नहीं करता। उसने, वादा करके भी अधिनस्थ कम्युनिस्ट सेनाओं को तनखा, रसद या हथियार नहीं दिये। नीच स्वार्थों के वशीभूत कोमिन्तांग ने कम्युनिस्ट सेनाओं को दवा देना भी बन्द कर दिया। घायल लाल सैनिकों के वोट में कोमिन्तांग के सर्जन जनरल का कहना था कि 'हम अपने दुश्मनों का इलाज क्यों करें।' घायल जापानियों का इलाज हो सकता था लेकिन संयुक्त मोर्चे के साथी देशभक्त सिपाहियों का नहीं। एक बार चीन के विदेशी मित्रों के दबाव के कारण उनके द्वारा भेजी गई दवाइयों को येनान के लिए रवाना किया लेकिन वे सियान के काले बाजार के आगे पहुंच न सकीं।

राष्ट्रीय सरकार की मदद का अभाव, भारी संख्या में पिट्ठु और येनान की तरह अपना कोई अलग आधार न होने के कारण नई चौथी के लिए जरूरी हो गया कि यांग्त्सी घाटी में जापानी सेना के पीछे खूब फैल जाय। लेकिन च्यांग ने उसे अपने इलाके को विस्तृत नहीं करने का आदेश दिया। नई चौथी ने इसे न मान कर फैलना शुरु किया। परिणाम स्वरूप जापानी सेना उसे घेर कर समाप्त नहीं कर सकी।

च्यांग के फासिस्ट युद्ध मंत्री हो गिंग चिन ने (१९४० के-उपराद्ध) उसे हुकम दिया कि वह यांगत्सी को पार कर उत्तर में सैकड़ों मील दूर जाकर पीत नदी के पार ८ वीं रूट सेना से मिल कर वहाँ युद्ध करे। इस हुक्म का कोई सैनिक औचित्य नहीं था। नई चौथी सेना का कहना था कि प्रथम तो एक आजाद इलाके को छोड़ देना अच्छा नहीं है। दूसरे ८ वीं रूट जनता के सहयोग से लड़ रही है उसने कोई मदद नहीं मांगी है अतः वहाँ जाने की कोई जरुरत नहीं है। तीसरे जाने के रास्ते में ऐसा बहुत सा इलाका है जहाँ गुरिल्ला युद्ध द्वारा शत्रु को कमजोर नहीं किया गया है अतः जाना संभव नहीं है। लेकिन युद्ध मंत्री अपने आदेश पर डटा रहा। नई चौथी ने इस पर कहा कि यदि आप हमें इस महत्वपूर्ण इलाके से हटना ही चाहते है तो हम यांगत्सी के पार चले जावें गे लेकिन पीत नदी तक जाना तो असंभव है। नई चौथी के सेनापति येहतिंग ने प्रस्ताव किया कि जिस इलाके को हम खाली करे उसमें दूसरी सेना भेज दीजिये और हमें चढ़ी हुई तनखा व उत्तर की बर्फीली सर्दी से बचने के लिए गरम कपड़े और रास्ते के लिए जरुरी गोला बारुद दे दीजिये और यह आश्वासन दीजिये की हमारे सैनिकों के पीछे रह जाने वाले परिवारों को तग नहीं किया जायगा।

जनवरी १९४१ प्रारंभ तक मुख्य सेना नदी पार कर चुकी थी दक्षिणी किनारे पर तो केवल हेड्‌काटर, राजनैतिक विभाग अस्पताल और अफसरों का स्कूल रह गया था और इनके साथ कुछ रक्षक थे सब मिल कर ८००० व्यक्ति। जब यह लोग पूर्व निश्चित मार्ग से निकल रहे थे कि च्यांग की केन्द्रीय सेना ने इन पर आक्रमण कर येहतिंग को पकड़ लिया। सेना की अधि-

कांश लोग, डाक्टर, नर्सें, सांस्कृतिक कार्यकर्त्ता आदि मार डाले गये। इसके साथ ही च्यांगने एक कपट पूर्ण वक्तव्य दिया जिसमें कहा गया कि नई चौथी सेना ने आज्ञा पालन करने से इन्कार किया व राष्ट्रीय सेना पर आक्रमण किया है अतः वह भंग करदी गई है।

यह क्यों हुआ ? हम यह भली प्रकार देख चुके हैं कि किन परिस्थितियों में कोमिन्ताग को जापान विरोधी युद्ध का नेतृत्व करना पड़ा और इस संघर्ष में भी वह चीनी जनता की जागरूकता से इतना क्यों घबराती थी।

युद्ध के प्रारंभ के दो वर्षों तक लड़ने का कोमिन्ताग में काफी उत्साह बना हुआ था। जनता के जापान विरोधी जोश के दिनों में किसी तरह का समझोता करना असंभव था। लेकिन अब संयुक्त मोर्चे की गर्मी कम हो चुकी थी क्यों कि जापान विरोधी जन आन्दोलन के केन्द्र बड़े २ शहर, कारखाने और विश्वविद्यालय जापान के अधिकार में जा चुके थे राष्ट्रीय सरकार अब चीन के पिछवाड़े में थी जहाँ राजनैतिक पिछड़े पन के कारण जनता का सरकार पर कोई अंकुश नहीं था। जापान पक्षी फासिस्ट तत्व इस वातावरण में पुनः फूलने लगे। संयुक्त मोर्चे के समय की राजनैतिक आजादी का अब गला घोंट दिया गया प्रगतिशील लेखकों और विद्वानों के मुँह पर पुनः ताले जड़ दिये गये। जर्मनी के रूस पर आक्रमण होने की चर्चा थी अतः फासिस्ट विचारों का प्रचार होने लगा, सुधारों की सभी योजनाओं पर पानी फेर दिया गया गया था। इंग्लैंड और अमरीका चीन की मदद करने की जगह अपना अपमान होते हुए भी जापान कोयुद्ध के लिए आवश्यक सामान बेच रहे थे और चीन की कोई वास्तविक सहायता नहीं कर रहे

थे। मित्र राष्ट्रों का पक्ष निश्चित रूप से कमजोर दिखाई देता था। ऐसी स्थिति में यदि च्यांगकाई शेक और जापान में सन्धि नहीं हुई तो यह एक लाचारी थी।

धुरी राष्ट्रों की यदि विजय निश्चित है तो फिर नई चौथी सेना के काँटे को रास्ते से साफ कर देना जरूरी है। यदि मित्र राष्ट्र पूरी ताकत के साथ लड़ाई में कूद गये और धुरी राष्ट्र पराजित हो हो गये तो उस स्थिति में नानकिंग और शंघाई के पड़ोस में कम्युनिस्टों का प्रभाव होना खराब है। इससे उनकी राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय प्रतिष्ठा बढ़ जायगी और बाद में उन्हें कुचलना कठिन हो जायगा। दोनों स्थितियों में नई चौथी को मार्ग से हटाना ही ठीक होगा यह सोच कर च्यांग ने यह कायरता पूर्ण हमला किया।

मित्र राष्ट्र संकित होकर देखने लगे कि क्या चीन का गृहयुद्ध पुनः प्रारंभ हो जायगा और जापान सारे चीन को निगल जाने जायगा। चीन के देश भक्तों को डर लगा- क्या सियान कांड से अब तक के सारे प्रयत्नों पर पानी फिर जायगा। जापान अधिकृत नांनकिंग रेडियो से गद्दार वांगचिंग वाई ने अपने 'शत्रु' च्यांग को नई चौथी पर आक्रमण करने के साहस पर बधाई दी। कम्युनिस्टों के सामने कठिन मार्ग था। एक तरफ संयुक्त मोर्चे को निभाना कठिन था दूसरी तरफ इसे तोड़ने का अर्थ था च्यांग को जापान के हाथों में खेल जाना।

इस बार कम्युनिस्टों ने फिर राजनैतिक चतुराई का परिचय दिया। उन्होंने गृहयुद्ध के चेलेंज का बीड़ा उठाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने देखा कि गृहयुद्ध से एक संकुचित अर्थ ही में लाभ होगा। देश के व्यापक हितों में एकता रखना अब भी जरूरी है। दूसरी तरफ ऐकता के नाम पर ऐसे नीच हमलों को

चुपचाप बर्दास्त करने का परिणाम होगा च्यांग एक के बाद दूसरे नये झगड़े कर लाल टुकड़ियों को समाप्त कर, आजाद इलाकों को मिटा कर जापान से निर्विघ्न मिलने का रास्ता खोल लेगा।

च्यांग ने नई चौथी को विघटित करने की जिम्मेवारी अपने उपर ली थी और कहा कि इससे कम्युनिस्टों की स्थिति में कोई अन्तर नहीं आवेगा। कम्युनिस्टों ने इस धोखे मे आने से इन्कार कर दिया और अत्यंत दृढ़तापूर्वक नई चौथी को विघटित न होने का आदेश दिया। उन्होंने येहतिंग और अन्य गिरफ्तार लोगों की रिहाई और मारे गये लोगों के परिवारों को मुआवजा देने व इस कांड के लिए दोषी अफसरों को सजा देने की मांग की। उन्होने कहा कि हम 'जनता की राजनैतिक कौंसिल' की बैठक में तब तक भाग नहीं लेंगे जब तक कि नई चौथी के साथ न्याय नहीं होगा और सभी जापान विरोधी दलों को समान और कानूनी स्थिति नहीं मिलेगी।

कोमिन्तांग ने इस सिलसिले में कम्युनिस्ट दृष्टिकोण को छिपाने की चेष्टा की लेकिन कम्युनिस्ट युवकों और युवतियों ने ने जान खतरे में डाल कर विदेशी राजदूतों और पत्रकारों से मुलाकात लेकर उन्हें असलियत से परिचित किया। चुंगकिंग के कम्युनिस्ट दैनिक ने सेन्सर की आज्ञा के विरुद्ध सारी स्थिति को साफ २ छाप दिया। जब प्रेस का मेनेजर पकड़ा गया तो स्वयं चाऊऐन लाई ने सारी जिम्मेवारी अपने उपर लेली। मित्र राष्ट्रों के दबाव और पोल के खुल जाने के कारण अब च्यांग की चाऊऐन लाई पर हाथ उठाने की हिम्मत नहीं हुई।

नई चौथी यागत्सी के उपरी भाग में डटी रही। चेनयी के नेतृत्व में उसका नया संगठन किया गया। विदेशी पत्रकारों

के अनुसार तीन ही वर्ष बाद उसके नियमित, शिक्षित और वर्दीधारी सैनिकों की संख्या १ लाख ८० हजार हो गई। मध्य चीन के ६ करोड़ वासियों में से ३ करोड़ की वह रक्षा करती थी। उसके छापामार नानकिंग और शंघाई से ३-४ की दूरी तक पहुँच जाते थे और उन्होंने अनेक अमरीकी पाइलटों को जापान के हाथों पड़ने से बचाकर सुरक्षित वापिस पहुंचाया।

युद्ध के ६ वर्षों में यह सेना १७५०० युद्धों में लड़ी और उसने १२८० 'कंघी' और 'उस्तरे से साफ' करनेवाले घेरों का मुकाबला किया। २ लाख ४० हजार जापानियों व पिठ्ठुओं को मारा व घायल किया और ३० हजार को गिरफ्तार किया। १ लाख २४ हजार रायफलें और छोटे शस्त्र २६०० मशीन गनें और अन्य सामान शत्रु से छीना और अपने ४५००० सैनिकों व अफसरों की बलि दी।

इसी बीच कोमिन्तांग के अनेक अफसर अपनी सेनाएं लेकर जापान से मिल गये। मेजर जनरल से ऊपर ऐसे अफसरों की संख्या १६४३ में तो ४२ पहुँच गई। १६४४ के आरंभ में जापान की ४ लाख २५ हजार, पिठ्ठु का ६० प्रतिशत कोमिन्तांग की भूतपूर्व सेना में से था और इस सेना का $\frac{9}{10}$ भाग जापान की अधीनता में आजाद इलाकों के विरुद्ध लड़रहा था।

इस चाल से च्यांग नफे में था। क्योंकि इससे गृहयुद्ध भी चलता और उसकी जिम्मेवारी से चुंगकिंग सरकार मुक्त थी। दूसरे मित्र राष्ट्र इन सेनाओं की जापान के विरुद्ध युद्ध में झोंकने की मांग ही नहीं कर सकते थे। इस प्रकार ये सेनाएं युद्धोत्तर मन्सुबों को पूरा करने के लिए बचाई जारही थी। जापान की पराजय के बाद अफसोस जाहिर करने पर इन सेनाओं को कोमिन्तांग स्वीकार कर लेंगी और तब जापानी शस्त्रों से सज्जित

छापामारों से लड़ने में दक्ष यह सेनाएं खूब काम देंगी।

इस प्रकार कूटनीति का सुन्दर उदाहरण जनरल पेंग था। यह हजरत जब जापान से मिल गये तो इन्हे गद्दार घोषित करना तोदूर रहा च्यांग की सरकार ने इन्हे वीर व शहीद घोषित किया। कहा गया कि दुष्ट कम्युनिस्टों ने आपकी सहायता करने के स्थान पर आक्रमण किया और आप घायल अचेतावस्था में जापान के हाथों में पड़ गये। थोड़े ही दिन बाद यह वीर और शहीद पेकिंग में जापान की एक फोजी कान्फ्रेंस में शामिल हुआ। वहाँ से उसने एक वक्तव्य दिया जिसमें कहा कि-ऐशिया में शान्ति स्थापित करने के लिए कम्युनिस्टों और ऐंग्लो-अमरीकी साम्राज्यवादियों का चीन से सफाया करना जरुरी है।

इस वक्तव्य के वर्ष भर बाद अमरीकी पत्रकारों की एक टोली ने कम्युनिस्ट नियन्त्रित उत्तरी शेंसी में एक चुस्त सैनिक टुकड़ी को देखा जो च्यांग के नाम से बनाई गई स्कोडा फेक्ट्री की रायफलों व तोपों से सुसज्जित थी। इन सैनिकों से बात करने पर पता चला कि पहले वे जनरल पेंग की राष्ट्रीय सेना में थे। एक दिन उन्हे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उनका निरीक्षण करने के लिए जापानी अफसर आए है। इसके बाद उन्हें कम्युनिस्ट सेना पर हमला करने के लिए भेजा गया। कम्युनिस्टों ने नारे लगाए चीनी चीनी का खून बहाना बन्द करो। सैनिकों की देश भक्ति जाग उठी और वे हथियार लेकर लाल सैना से मिल गये। इन हथियारों की जाँच करने वाले एक पत्रकार से ८ वीं रुट के एक सैनिक ने हँसते हुए कहा कि यह पहली बन्दूकें हैं। जो हमें गत ५ वर्षों से केन्द्रीय सरकार से मिली हैं लेकिन यह घूम फिर कर आई है। इस तरह की घटनाएं उस समय सारे चीन में घट रही थी। जापान विरोधी

कोमिन्तांग के मोर्चे पर भयानक खामोशी थी।

एक बार फिर कोशिश

महायुद्ध के अन्तिम वर्षों में जापान का मोर्चा मलाया, बर्मा और जावा तक फैल गया था अतः चुंगकिंग को युद्ध से बाहर निकालने के लिए छोटी मोटी कार्यवाहियों के अतिरिक्त चीन में वह शान्त सा था। अब चीन में उसका दबाव आजाद छापामार इलाकों पर था जो जापान की मुख्य पंक्ति के पीछे थे। जब जापान मित्र राष्ट्रों या चुंगकिंग पर दबाव डालता तो छापामार तेजी से जापान को तंग करने के लिए अधिकृत इलाकों पर हमला करते। लेकिन जब जापान इन छापेमार इलाकों के विरुद्ध 'शान्ति को मजबूत करने' 'तीनों एक साथ' 'गावों की सफाई-कंघी और उस्तरे से' आदि तरीके अपनाता तो जापान के दबाव को कम करने के लिए चुंगकिंग सरकार प्रत्याक्रमण करने के स्थान पर चुपचाप तमाशा देखती और छापामार युद्धों को बुनियादी नजर से छिपाने की चेष्टा करती।

१९४३ की जुलाई में होचिंग चिन ने पीत नदी के मोर्चे से जापान विरोधी ३ सेनाओं को हटा कर कम्युनिस्ट इलाके (येनान) के घेरे की वृद्धि के लिए भेज दिया। कम्युनिस्टों ने खतरा देख कर ८ वीं रुट को रक्षा के लिए लगा दिया। गृहयुद्ध के बादल पुनः मण्डराने लगे। लेकिन मित्र राष्ट्रों का गृहयुद्ध के विरुद्ध दबाव पड़ा और ८ वीं रूट को समाप्त करने के लिए च्यांग द्वारा बुलाए गये गुप्त सैनिक सम्मेलन में ही फूट पड़ गई। च्यांग ने जनरल हू से कहा कि ८ वीं रूट को २ महिनों में समाप्त किया जा सकता है। लेकिन जब उससे साफ २ पूछा गया तो उसने कहा कि मैं समय की गारंटी नहीं दे सकता। कम्युनिस्टों के पड़ोसी जनरल तेंग ने पाओशान के गृहयुद्ध का

विरोध किया। इसी तरह दूसरे जनरलों ने सैनिक अथवा देश भक्ति के कारण गृहयुद्ध का विरोध किया। इन कारणों से च्यांग की खूनी योजना उस समय अमली रूप धारण नहीं कर सकी।

गृहयुद्ध की इन संभावनाओं को समाप्त करने, जापान की विजयों को रोकने, व 'मित्र राष्ट्रों की चीन में स्थिति सुधारने के लिए कम्युनिस्टों ने कोमिन्तांग से पुनः बातचीत प्रारंभ की। उन्होंने नई चौथी पर हमला करने वालों को सजा देने की मांग को भी छोड़ दिया। लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। कोमिंतांग का कहना था कि कम्युनिस्ट सेनाएँ ५ लाख ७० हजार से १ लाख करदी जायँ। जापान विरोधी आजाद इलाकों के २२ लाख सशस्त्र जन सैनिकों को इन इलाकों से भावी जरुरतों के लिए हटा दिया जाय। इस प्रस्ताव को स्वीकार करने का अर्थ था आजाद इलाकों की आत्म हत्या। कम्युनिष्टों ने ऐसी देशद्रोह पूर्ण शरतों को मानने से इन्कार कर दिया।

चाऊऐन लाई का वक्तव्य

चीनी क्रान्ति के जन्म दिवस १० अक्टूबर १९४४ को चाऊ-ऐन लाई ने एक अत्यन्त महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया जिसमें गृह-युद्ध के खतरों को बताया और जापान का जोरों से मुकाबला करने को कहा। उन्होंने बताया कि कोमिन्तांग की तानाशाही के कारण देश रसातल को जा रहा है। जापान विजय प्राप्त कर रहा है और कोमिन्तांग केवल युद्ध का स्वांग कर रही है। हर माह मित्रराष्ट्रों से २० हजार टन मदद मिलने पर भी च्यांग काई शेक कहीं नहीं जीत रहा है। दूसरी तरफ ८ वीं रूट सेना के बिना किसी मदद के जापान की नाक में दम कर रखा ८ वीं रूट और अन्य जापान विरोधी सेनाओं कदापि तोड़ा नहीं जा सकता। ७ वर्षों में इन सैना दलों ने शत्रु की शक्तियों के

पीछे ४६१ परगनों को आबाद कर दिया है। जबकि इस अर्से में कोमिन्तांग ने ७२१ परगने खो दिये हैं। इन इलाकों का क्षेत्रफल २ लाख ३० हजार वर्ग किलोमीटर है और जन संख्या ६ करोड़। इन इलाकों में कोमिन्तांग चीन के शासन के विपरीत सभी दलों और वर्गों की संयुक्त सरकारें है जिन्हें जनता ने चुना है।

इस वक्तव्य में कम्युनिस्ट नेता ने मांग की कि इन सरकारों को स्वीकार किया जाय। सनयात सेन के ३ उसूलों को अमली रूप दिया जाय, लोगों के टेक्सों में कमी की जाय। अफसरों की लूट व भ्रष्टाचार बन्द किया जाय। फासिस्ट तरीकों से जनता का दमन बन्द कर जापान विरोधी सभी सेनाओं, सरकारों व दलों के प्रतिनिधियों की जरुरी राष्ट्रीय कौंसिल बुलाई जाय और एक पार्टी तानाशाही का अन्त कर सर्वदली सरकार बना कर जापान पर हमला करने की तैयारी की जाय।

लेकिन कोमिन्तांग और क्यांग जापान विरोधी निर्णयात्मक युद्ध में भाग लेने की अपेक्षा अपनी तानाशाही को कायम रखने के लिए ज्यादा चिंतित थे, अतः यह अपील बहरे कानों पर पड़ी।

मोर्चों के पीछे

कमीसार ली ने कहा– "लोगों को जापान का मुकाबला करने का जोश दिलाना ही काफी नहीं है। खेत मजदूर और गरीब किसान भूखमरी के इतने नजदीक हैं कि वे किसी भी तरह जीना जानते हैं। हमें उनके लिए कुछ ऐसा करना था जिसके लिए वे लड़ते। हम उनके जीवन के स्वर को ऊँचा उठाने में लगे।"

संयुक्त मोर्चा स्थापित होने के बाद कोमिन्तांग ने देश के सामने एक जापान विरोधी युद्ध का कार्यक्रम रखा जिसमें कहा गया—

'जिनके पास धन हैं वे धन दें, जिनके पास शक्ति है वे शक्ति प्रदान करें।' लेकिन इस कार्यक्रम को अमली रूप देने के स्थान पर कोमिन्तांग इलाकों में धन वालों ने जनता का शोषण युद्धकालीन कठिनाइयों को देख कर और भी तेज कर दिया। आम जनता ने प्राण, शक्ति और धन तीनों की आहुती दी, धन वालों ने तीनों को सुरक्षित रखा। युद्ध के प्रारम्भिक वर्षों में जब कि अमरीका और इंग्लैंड से फौजी सामान और उद्योगों

के लिए आवश्यक मशीनरी मंगाना संभव था चीन के सरमाए-दारों ने अपनी पूंजी को चीन में खतरे में डालने से दूर अमरीका के बैंकों में भेजना अधिक लाभदायक समझा। जब कि मुल्क में भयानक मुद्रा स्फीति थी, बड़े २ धन कुबेरों के १ अरब अमरीकी डालर अमरीका के बैंकों में ही जमा थे। इसके अतिरिक्त काफी पूंजी शंघाई के सुरक्षित अन्तरराष्ट्रीय इलाके और हांगकांग में चली गई। पूंजी के इस तरह जाने पर प्रतिबन्ध के कानून बनाएं गये पर कानून को बनाने वाले और अमल में लाने वाले ही उन्हें 'अपने हितों' में तोड़ रहे थे। सन् ४१ में जब कि हजारों लारियों की जरूरत थी, धनवानों ने लारियों के बराबर शानदार अमरीकी मोटरें मंगाईं।

कोमिन्तांग शासकों ने राष्ट्रीय बचत कोष को उद्योगों में लगाने की जगह काला बाजार में लगाया। लोगों के जरूरत की कोई भी चीज-भोजन कपड़ा, कुनैन और अन्य दवाइयाँ-ऐसी न थी जो इन मानव भेड़ियों के दाढ़ों में नहीं फंसी हो। इन चीजों का पहले स्टाक खरीद कर यह लोग कृत्रिम अभाव पैदा कर उन्हें ऊँचे भावों में बेचते। युद्धकाल में चुंगकिंग अपने ऊँचे भावों के लिए सारी दुनिया मे मशहूर था। स्वयं सरकारी बैंक सिक्का रखने के स्थान पर जरूरत की चीजें खरीद कर रखने लगे और बाद में उन्हें ऊँचे दामों पर बेच कर मुनाफा उठाने लगे। सिक्के का मूल्य लगातार गिरता रहा। मुद्रा स्फीति इतनी बढ़ गई थी कि जब इप्सटीन ने उपअर्थ मन्त्री से पूछा कि आप अमरीका से सबसे अधिक क्या चाहते हो तो उसने उत्तर दिया कि 'बड़ी अच्छी और तेज नोट छापने वाली मशीनें' चूंकि युद्धकाल में बड़ी मशीनें लाना सम्भव नहीं था। अतः हवाई जहाजों के बहुमूल्य स्थानों में हथियारों की जगह छपे हुए नोट

अमरीका से लाए गये ।

परिणाम स्वरूप सरकार में पक्षपात, भ्रष्टाचार और अयोग्यता लगातार बढ़ती गई और यह भ्रष्टाचार तेजी से सेना में फैलने लगा । सेना से देशभक्ति की भावना दूर जाती रही। सिपाहियों की जबरदस्ती भर्ती की जाने लगी। खेतों में काम करने वाले किसानों के जवान लड़के रस्सों से बाँध कर जबरदस्ती मोर्चों पर भेजे जाते। अनेक रास्ते में ही मर जाते। न उन्हें पूरा खाना, कपड़ा, ट्रेनिंग और शस्त्र मिलते क्योंकि इन चीजों को तो अफसर लोग काले बाजारों में बेच देते थे। सिपाही शत्रु के सामने दुम दबाकर भाग जाते लेकिन अपनी निरीह जनता को लूटते खसोटते। पैसे वाले लोग रिश्वत देकर भर्ती होने से बचते रहें। अफसर लोग जापान से कागजी लड़ाइयाँ लड़ते और गुप्त रूप से शत्रु के साथ व्यापार कर खूब कमाते इसी तरह उनसे मिली भगत रखनेवाले व्यापारी भी नफा उठाते। युद्ध के प्रारंभ से लेकर सन् १९४४ तक कोमिन्तांग ने १ करोड़ २० लाख लोगों को सेना में भर्ती किया, जिनमें से ३० लाख मारे गये, लेकिन युद्ध के अन्त पर च्यांग के पास ३० लाख सैनिक ही थे। ६० लाख कहाँ गये इसका कोई हिसाब नहीं था।

युद्धकाल के प्रतिक्रियावादी शासन द्वारा कोमिन्तांग तानाशाही ने अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी। उसके अधिकृत इलाके के करोड़ों पीड़ित लोग च्यांग के शासन को गालियाँ देने लगे। दूसरी तरफ कम्युनिस्टों की सफल गृह नीति के कारण लोग आशा से उनकी तरफ देखने लगे।

जनता ने अपनी आजादी के लिए न केवल लाखों जाने ही दीं, उन्होंने नाममात्र की मजदूरी पर चीन को बर्मा, हिन्दचीन

श्याम और रूस से जोड़नेवाली सड़कों को प्राकृतिक बाधाओं का मुकाबला करते हुए निर्माण किया उन्होंने मोर्चा बन्दियाँ बनाईं, खाइयां खोदी और अपने हरे भरे खेतों को इन कामों व हवाई अड्डों के निर्माण के लिए दे दिया। और इसके बदले में उन्हे कभी २ ही नाममात्र के लिए मुआवजा मिला।

एक तरफ किसानों के बेटे जबरदस्ती फौजों में ले लिये गये दूसरी तरफ चीजों के दामों के आसमान में जाने से उनका शोषण बढ़ता गया। परिणाम स्वरूप छोटे २ किसानों के हाथों से निकल २ कर जमीन जमींदारों और महाजनों के पंजे में फँसती गई। देश में बड़े २ अकाल पड़े जिनमें होनान का काल बंगाल के समान ही व्यापक था। अमरीकी पत्रकारों के अनुसार इसमें ३० लाख लोगों ने भूख से प्राण दे दिये। कई जगहों पर भूख अकाल और जुल्म से पीड़ित लोगों ने सर उठाया लेकिन नेतृत्व के अभाव में वे कुचल दिये गये।

अकाल पीड़ित लोगों की मदद करना दूर रहा, लोगों के पास जो भी था वह भी उनसे छीना गया। अच्छी फसलों वाले इलाकों में जाते हुए अकाल पीड़ितों पर गोलियाँ बरसाई गईं। और जब चीन का यह हाल हो रहा था मेडम च्यांग काई शेक अमरीका में बड़ी दावतों और शानदार कपड़े खरीदने में चीन का रुपया फूंक रही थी

राष्ट्रीय संकटकाल में येनान के लोकतंत्र ने संयुक्त मोर्चे के नारे 'धनवाले धन और शक्तिवाले शक्ति दो' को असली रूप दिया। युद्ध जन्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कम्युनिस्टों ने सभी वर्गों का जापान विरोधी मोर्चा बना कर अपने क्रान्ति-कारी खेतीहर प्रोग्राम को स्थगित कर दिया। लेकिन उनकी सरकार पर स्पष्ट रूप से गरीबों का प्रभाव रहा। येनान प्रदेश के

सभी जिलों में चुने हुए जन प्रतिनिधि ६६६७ थे जिनमें से १'८ प्रतिशत जमींदार ७ प्रतिशत धनवान किसान, २४'४ प्रतिशत मध्यम किसान और ४५'६ प्रतिशत गरीब किसान, शेष मजदूर आदि थे। दलों के हिसाब में २४'४ प्रतिशत कम्युनिस्ट, ३'७ प्रतिशत कोमिन्ताग और शेष निर्दली लोग थे। कोमिन्ताग चीन में दूसरी तरफ सारी शक्ति एक ही पार्टी के पास थी। लेकिन यहाँ तो सेना, जन प्रतिनिधि, अफसर सभी में गरीबों का बहुमत था।

लेकिन सामाजिक क्रान्ति के कार्यक्रम को स्थगित करने, केवल जापान से मिल जाने वाले गद्दारों की सम्पत्ति को छीनने, लोगों के सर से करों का बोझ कम करने और सभी वर्गों को अवसर देने के कारण सभी वर्गों के लोगों ने जापान से मिलने की अपेक्षा कम्युनिस्टों का साथ देना उचित समझा।

युद्ध को लम्बा चलाने और अन्तिम विजय के लिए लोगों की देशभक्ति को जगाना ही काफी नहीं था। लम्बे युद्ध में तभी कामयाबी मिल सकती थी जब कि लोग इस नीति से अपने दैनिक जीवन में लाभ देखते। जापान द्वारा बम बारी और कोमिन्तांग का घेरा देखते हुए जिन्दा रहने के लिये भी लाल इलाके का स्वावलम्बी होना जरूरी था और इसके ऊपर एक लाख सरकारी अफसरों, नोकरों, शिक्षकों, सैन्य विशारदों और छात्रों के लिये जीविका के साधन जुटाना बहुत जरूरी था। यह सब उत्पादन बढ़ाने से ही सम्भव हो सकता था।

टैक्स कम कर दिये जाने से किसानों के कुछ बचत होने लगी। ज्यों ज्यों उत्पादन बढ़ता गया टैक्स कम होते होते ७ प्रतिशत पर आगये। जब किसानों ने देखा कि अधिक उत्पादन का अर्थ है समृद्धि, तो वे ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करने लगे। जो

किसान अधिक उत्पन्न करते सरकार और समाज उनकी 'श्रम-वीर' के पदों से सम्मान करने लगा और उनका अनुकरण करने के लिए दूसरों को प्रोत्साहन मिलता।

लाल सेना व सरकारी कर्मचारी कुछ समय के लिये रोज उत्पादन का काम करते। नेनीवान के १०००० लाल सैनिकों के विशाल काय को देखते हुए जब अमरीकी सेना के एक अफसर कर्नल बारेर ने उनकी सैनिक शिक्षण को देखा तो कहा 'यह दुनियां में कहीं भी श्रेष्ठ होने योग्य है'। १९४४ तक सेना ही इस प्रदेश की कुल उपज का ८ प्रतिशत भाग पैदा करने लगी। परिणाम स्वरूप पहले से ही कम लगान में सवा दो लाख मन की और कमी कर दी गई।

माव ने खतरों को देखते हुए नारा दिया तीन साल की फसल दो साल में पैदा करो। 'पारस्परिक श्रम सहायता समिति' आन्दोलन ने इस काम को और भी आगे बढ़ाया। कपास की खेती युद्ध काल में ही ३००० एकड़ में ३०,००० एकड़ से ऊपर पहुंच गई। २ लाख महिलाएँ सरकारी समितियों में सूत कातने, कपड़ा बुनने आदि धन्धों में काम करने लगी। जब कोमिन्तांग चीन में युद्ध भार से लोग भूखों मर रहे थे येनान में 'सबको भरपेट अन्न और पूरा कपड़ा' सिद्ध हो चुका था। हेरीसन फोरमन, इप्सटीन आदि अमरीकी पत्रकारों ने जो लाल इलाकों में १००० मील घूमे थे, एक भी अधभूखा या भिखमंगा नहीं देख पाए। युद्ध काल में इसी तरह लाल इलाके के उद्योगों का विकास और उनके 'औद्योगिक श्रमिकों' की संख्या ७०० से १२००० तक पहुंच गई। उधर कोमिन्तांग में विदेशी सहयोग होने पर भी सहकारी समितियाँ सिसक रही थी। येनान में ४०० सहकारी समितियाँ स्वस्थ प्रगति कर रही थी।

कम्युनिस्ट अपने प्रयत्नों को येनान तक सीमित कर बैठे नहीं रहे वे च्यांग की तरह युद्ध में विजय की कामना ही नहीं करने लगे। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, दुश्मन की पांति के पीछे उन्होंने आजाद इलाकों और छापामार सेनाओं का निर्माण किया। यह इलाके सैनिक अडडे ही नहीं बल्कि जाग्रत और संगठित जनता के सचेत प्रयत्नों के गढ़ थे जहाँ येनान की भाँति लोकतन्त्री राज्य था। इन प्रजातन्त्रों का जन्म और विकास आसान नहीं था। चारों तरफ हवाई जहाजों, टैंकों, बख्तर बन्द गाड़ियों और आधुनिक शस्त्रों से लैस जापानियों से घिरे इन इलाकों का जन्म प्रतिरोध के गर्भ से हुआ था। इन इलाकों को जापान के 'तमाम तीनों' अर्थात सबको मारो, सबको जलाओं, सबको लूटो का सदैव सामना करना पड़ा।

युद्ध के चौथे वर्ष में इन इलाकों में जाने वाले अमरीकी पत्रकारों व सैनिक अफसरों ने कहा कि शान्सी चहार होपे क्षेत्र में उन्हें एक भी गांव देखने को नहीं मिला जो जो जलाया नहीं गया हो। घर जलाए गये, धान लूटा गया, पशु कत्ल किये गये, सन्देह में लोगों को मौत के घाट उतारा गया। देशभक्त महिलाओं के साथ ४०-५० जापानी सिपाही सरे आम बलात्कार करते। प्रतिरोध का दुष्परिणाम बताने के लिए यह कुकर्म सारी जनता के सामने किये जाते, लोगों को बन्दूकों के जोर से इन्हें देखने के लिए मजबूर किया जाता। इन पाशविक कार्यों द्वारा जापान लोगों के मनोबल को तोड़ देना चाहता था। लेकिन चीनी जनता ने इस दमन के आगे भी घुटने नहीं टेके।

जापानी साम्राज्यवादियों की इस नीति का मुकाबला किया गया 'सब कुछ प्रतिरोध के लिए और विजय के लिए'

आजाद इलाके के एक नेता लिन फेंग के शब्दों में "देशभक्ति जोश दिला सकती है लेकिन आत्मविश्वास और स्थाई जोश के लिये उत्पादन में तरक्की आवश्यक है। अतः हमने लोगों को उत्पादन के लिए संगठित करना प्रारंभ किया। पैदावार के लिए हम लोगों को प्रारंभ से ही सशस्त्र करते। उत्पादन की कामयाबी के साथ २ सैन्यदल भी बढ़ता जाता। उत्पादन के बढ़ने के साथ २ सेना और जनता के संबंध भी दृढ़ होते जाते। नये उत्पादन संगठनों का जितना अधिक फैलाव होता है उतना ही लोगों का प्रतिरोध में सक्रिय सहयोग विस्तृत होता जाता है।" सचमुच आजाद इलाकों ने अपनी सारी नीतियों को विजय के लिए, प्रतिरोध के लिए, ढाल लिया।

जापान विरोधी युद्ध में अनाज के मोर्चे पर जापान को पराजित करना जरूरी था। बुनियादी तौर पर आजाद इलाकों ने वही नीति अपनाई जो येनान में अपनाई गई थी लेकिन यहां कई नई बातें लागू की गई। चूंकि सेना को ज्यादा समय लड़ने भिड़ने में लगाना पड़ता अतः यदि एक टुकड़ी एक स्थान पर खेत जोतती तो शायद दूसरी उसे काटती। सेना यदि जोतने बोने के समय न आ पाती तो यह काम इलाके की श्रम सहयोग समितियाँ करती और उस श्रम के बदले उन्हें उचित नाज मिल जाता।

श्रम सहयोग समितियों के संगठन पर विशेष ध्यान दिया गया। लाल फौज के सैनिकों और छापामारों के खेतों को युद्ध समितियाँ उनकी अनुपस्थिति में जोतकर उनके परिवारों को भूखों मरने से बचा लेती थी। जापानी सेना फसल के बोने और काटने के दिनों में विशेष कर आक्रमण करती ताकि लोग जरुरत के लिए पूरा बो काट न सकें और लोगों को भूखों मार

कर घुटने टेकने के लिये मजबूर किया जा सके। इस चाल को असफल बनाने के लिये इन दिनों में सेना और छापामार अपने क्षेत्रों से बाहर निकल सब तरफ फैल कर जापानियों से लड़ते ताकि शत्रु किसी एक स्थान को पूरी तरह बर्बाद न कर सके। लड़ने वाले सैनिकों को पीछे का डर नहीं था। शत्रु के हमलों से बचाने के लिए अन्न छिपा दिया जाता था। गांव के सभी लोग अनाज और फसल को बचाने के लिए एक हो जाते थे क्यों कि इसके अतिरिक्त दूसरा रास्ता क्या था ? लगान में कमी, कृषि सुधारों आदि के कारण आजाद इलाके में लोगों के जीवन स्तर ऊँचा होने लगा। परिणाम स्वरूप उनका प्रतिरोध बढ़ता रहा।

न केवल अन्न का उत्पादन बढा, पड़ती जमीन हलों के नीचे आई खेती का प्राण सिंचाई की व्यवस्था में भी नई प्रगति की गई। शत्रु खेती को बर्बाद करने के लिए सिंचाई के साधनों को नष्ट कर देता आजाद इलाकों के लोग इन नुक्सानों को पूरा करने और सिंचाई के लिए नई नहरें खोदने, बांध बनाने आदि कार्यों के लिए खाली दिनों में पारस्परिक सहायता करते। लाल सेना जब युद्ध में नहीं होती इन कार्यों में भाग लेती। इप्सटीन के अनुसार १६४०-४१ में ही सबसे अधिक संघर्षरत शान्सी, होनान, होपे क्षेत्र में आठ लाख एकड़ नई जमीन जोती गई २२७२ जल मार्ग खोदे गये। मध्य होपे जहाँ निरंतरबाढ़ और जापानी आक्रमणकारी आते रहते थे नदी को ५० मील गहरा किया गया, १५० मील तक किनारे बाँधे गये और बाधों की १६७ बड़ी दरारें बन्द की गई। इसके अतिरिक्त मैदानों में सुरंगें खोद कर एक गाँव को दूसरे गाँवों से अलग किया गया। हमलों के दिनों में लोग इन सुरंगों में आश्रय लेते, अन्न

और पशुओं को छिपाते।

खेती के अतिरिक्त उद्योग धन्धों को चालू रखना ही नहीं आगे बढाना भी जरुरी था। प्रत्येक आजाद इलाके के पास कम से कम एक कारखाना होता था जिसमें २०० से १००० श्रमिक काम करते थे। इनमें शस्त्रों और गोलाबारुद का निर्माण होता था। जापान अधिकृत रेलों और तारों को काटकर छापेमार इन इलाकों में ले आते और फिर इनसे शस्त्र व खेती के औजार ढाले जाते। इस प्रकार शत्रु के आवागमन में रुकावट पड़ती और लाल इलाकों के काम में मदद मिलती।

इन बड़े २ आजाद इलाकों की संख्या युद्ध के अन्त तक १८ पहुँच गई और १० से १३ करोड़ लोगों पर इनका जनतंत्री शासन था। भावी जनवादी चीन के निर्माण में यह आजाद इलाके बड़े काम के साबित हुए।

चीन में अमरीकी नीति

(अमरीकी लोगों से)

"उनसे यह स्पष्ट कहा जाय कि चीनी धरती पर अमरीकी सेनाएं चीनी जनता में शान्ति और व्यवस्था को मजबूत नहीं बना रही हैं। उन्हें चेता दिया जाय कि केवल एक सही माने में प्रतिनिधि और स्वीकृत सरकार को ही कर्ज दिया जाय...अगर अमरीका यह स्पष्ट करदे कि वह गोलाबारुद और सैनिक सामग्री सप्लाई नहीं करेगा जो चीन में गृहयुद्ध नहीं फैलेगा।" मादम सनयात सैन का जुलाई १९४६ में न्यूयार्क टाइम्स को सन्देश।

पिछले अध्यायों में हम देख चुके हैं कि चीन के साथ अमरिका सदा साम्राज्यवादी नीति अपनाएँ रहा और वह चीन प्रतिक्रियावादी शक्तियों की मदद करता रहा। वह 'चीन का द्वार खुला' रखना चाहता था, अपनी लूट खसोट के लिए वह दूसरी साम्राज्यवादी ताकतों के हस्तक्षेप का तभी विरोध करत जब वे अमरीकी हितों के लिए खतरा बनती। फर्ल हार्बर तक अमरिका जापान को चीन विरोधी युद्ध में आवश्यक सामग्री बेचता रहा। लेकिन द्वितिय महायुद्ध के अन्तिम दिनों में अमरीकी

नीति ने एक नई अंगडाई ली। इस बार वह चीन में प्रगतिशील-तत्वों के खुले विरोध में नहीं थी।

जापान विरोधी युद्ध ज्यों २ लम्बा गया और मित्र राष्ट्रों की पराजय पर पराजय होने लगी, कोमिन्तांग के नेता युद्ध से निकलने की कोशिशों में लगे। जापान इसके लिए लगातार दबाव डाल रहा था। ऐसोसियेटेड प्रेस के लंदन संवाददाता के अनुसार ' च्यांग की सरकार भ्रष्टाचार, लालच, अयोग्यता, मुनाफे के लिए जापान से गुप्त व्यापार करने, अमरीकी सामग्री से मुनाफा उठाने और उसे कम्युनिस्टों के खिलाफ काम में लाने वाली एक जमात बन चुकी थी।' मित्र राष्ट्रों के हितों के लिए जरूरी था। कि यदि कोमिन्तांग चीन युद्ध में लड़े नहीं तो कम से कम नाम के लिए तो बना रहे और यदि वांगचिंग वाई की भाँति च्यांग काई शेक भी जापान से मिल गया तो ? ऐसी स्थिति को बचाने लिए इंग्लैण्ड और अमरीका ने चीन में अपने प्रदेशोत्तर अधिकारों को त्याग दिया। च्यांग काई शेक को अन्तरराष्ट्रीय महत्व दिया और कोमिन्तांग चीन को बड़े पैमाने पर कर्ज दिया जिसका कि युद्ध काल मे कोई उपयोग नहीं था। दूसरी तरफ उन्होंने येनान से भी मित्रता बढाई ताकि च्यांग-काई शेक के जापान से मिल जाने की हालत में चीन में लड़ने के लिए कम्युनिस्ट इलाकों और सेनाओं का लाभ उठाया जा-सके। उस समय न एटम बम था न रूस ही जापान विरोधी युद्ध में कूदा था अतः यह लगता था कि जापान से लगातार युद्ध कर उसे परास्त करना पड़ेगा। इस भूमिका में कम्युनिस्ट चीन का महत्व अमरीकी नजरों में बढ गया।

अमरीका और चीन के इतिहास में यह पहला मौका था जब अमरीका ने चीन के प्रगतिशील तत्वों के साथ एकता

स्थापित की। कम्युनिस्टों के प्रति इस प्रेम का कारण उनकी जनवादी सरकार नीति और लोकप्रिय कार्यक्रम न होकर एक युद्ध कालीन आवश्यकता थी। अब च्यांग काई शेक ने नई चौथी सेना पर धोके से आक्रमण कर गृहयुद्ध पुनः भड़काना चाहा उच्च अमरीकी क्षेत्रों ने उस पर ऐसा न करने के लिए कूटनीतिक दबाव डाला। एक वक्तव्य देते हुए अमरीका के तत्कालीन सेक्रेट्री ऑफ स्टेट श्री सुमनर वेल्स ने कहा कि अमरीकी सरकार की इच्छा है कि चीनी सरकार को चीन के सभी दलों और गुटों में पारस्परिक विचार विमर्ष द्वारा शान्ति स्थापित रखने की चेष्टा करना चाहिये और अमरीका चीन के सभी दलों और संगठनों में 'पूर्ण एकता' पसन्द करता है।

इसी एकता को बनाए रखने और चीन को जापान विरोधी युद्ध में पुनः सक्रिय बनाने के लिए प्रेसीडेन्ट रुजवेल्ट ने अमरीका के एक सर्वश्रेष्ठ जनरल स्टीलवेल को चीन बर्मा मोर्चे पर अमरीकी सेना का सेनापति और मित्रराष्ट्रों की तरफ से च्यांग-काई शेक का चीफ ऑफ स्टाप बना कर भेजा। जनरल स्टील-वेल अमरीका के उन ईमानदार लोगों में से था जो चीन के नौकरशाह, पूंजीपतियों और जमीदारों की अपेक्षा चीन के लोगों को प्यार करते हैं जो इस देश की सभ्यता संस्कृति के अतिरिक्त उसके जनसाधारण के विकास में भी विश्वास रखते हैं। इसी लिए स्टीलवेल को 'जनसाधारण का मेकआर्थर' कहा गया है। इस ईमानदार अमेरिकन ने जिम्मेवारी के साथ अपने कर्तव्य को पूरा करने की चेष्टा की। उसने देखा उसका काम जापानी हमलों से बचाव करना ही नहीं बल्कि जवाबी हमले करना है। लेकिन जवाबी हमलों के लिए कोमिन्तांग सेना निकम्मी हो चुकी थी। स्टीलवेल ने इस सेना से भ्रष्टाचार

और सैनिक अयोग्यता को निकालने के लिए अथक प्रयत्न शुरु किया। इस 'गाडे जनरल' को अपने सामने अपने समान दूसरे सीधे और मेहनती लोग दिखाई दिये जो युद्ध भूझ रहे थे। उसने कोमिन्तग की झिल्ली को चीर कर उनसे सम्पर्क स्थापित किया। इधर हूनान और होनान में च्यांग की शर्मनाक पराजयों से चुंगकिंग का पतन सन्निकट देख कर उसके लिये और जरूरी हो गया कि वह येनान से सम्पर्क बढ़ावे।

अमरीका के उपराष्ट्रपति वैलस के चुंगकिंग आने पर उसकी प्रार्थना पर च्यांग काई शेक ने एक छोटे से अमरीकी मिशन को येनान जाने की इजाजत दी। इस मिशन के लोगों ने येनान जनतन्त्र और आजाद इलाको का अच्छी तरह निरीक्षण किया। कम्युनिस्ट नियन्त्रित इलाकों का शासन, सैनिक शिक्षा और छापेमार युद्ध को देखकर यह मिशन प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। मिशन के मुखिया कर्नल बारेट ने कहा था हम इन लोगों से शिक्षा लेना चाहते है जो ७ वर्ष तक शत्रु पाँति के पीछे सफलतापूर्वक लड़ते आ रहे हैं। अमरीकी डाक्टरी दल के मेजर केस बर्ग ने 'यहाँ साधनों के अभाव में घायलों के लिए जो चिकित्सा का प्रबन्ध है वह हम लोगों के लिए चुनौती है जिनके पास इतने अधिक साधन हैं।' उसी प्रकार अन्य अमरीकी पत्रकार व सैनिक लाल चीन को देख कर उत्साहित हो उठे, उन्हें जापान विरोधी युद्ध में एक सच्चा मित्र दिखाई दिया।

इन्ही दिनों में जापान अधिकृत चीनी शहरों पर बमबारी करने वाले अमरीकी हवाबाजों को जब लाचार हो कर पेराशूट से उतरना पड़ा, छापामारों ने उनके प्राणों की रक्षा कर उन्हें सुरक्षित चुंगकिंग तक पहुंचाया। इन गोरों ने स्वयं अपनी आखों से मुक्ति सेना और आजाद इलाकों को देखा। उन्होंने

इस नये चीन के कारनामों को चीन और बर्मा स्थित अमरीकी छावनियों में गुंजा दिया। साधारण अमरीकी सोचने लगा क्या चीन में हम गलत पक्ष का समर्थन कर रहे हैं ?

इसी पृष्ठ भूमि में कम्युनिस्टों और कोमिन्तांग के बीच १६४४ के आखिरी दिनों में आपस में बातचीत हुई। कम्युनिस्टों ने सर्वदली सरकार, आजाद इलाकों की सरकारों को स्वीकार करने, सभी चीनी सेनाओं के साथ समान व्यवहार और सैनिक हाईकमान्ड में अपने लिए भी प्रतिनिधित्व का प्रस्ताव रखा। लेकिन कोमिन्तांग समझौते के लिए तैयार नहीं थी वह आजाद इलाकों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी, आठवीं रूट और नई चौथी को तभी स्वीकार करने को तैयार थी जब कि वे अपनी संख्या $\frac{2}{3}$ कम कर देती और गुरिल्ला दलों व कृषक दलों को शस्त्र हीन करती। परिणाम स्वरूप बातचीत टूट गई।

इस पर स्टीलवेल ने अमरीका की तरफ से प्रस्ताव रखा कि जिस तरह आरजन हावर योरप में सभी मित्र राष्ट्रों का सेनापति है उसी तरह स्टीलवेल को चीनी युद्ध क्षेत्र का सर्वोच्च सेनापति मान लिया जाय। इसी प्रकार कोमिन्तांग, कम्युनिस्टों और अमरीकी शक्ति का समान रूप से जापान के खिलाफ संगठित प्रयोग किया जाना संभव था। चीन को अभी ऐसे ही नेतृत्व की आवश्यकता थी जो किसी तरफ मिला हुआ न हो और जिसमें सबको विश्वास हो। चीन के सभी जनतन्त्री पक्षों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। कम्युनिस्ट सेनापति च्यूतेह ने स्टीलवेल की कमान में रहना स्वीकार कर लिया। दूसरे प्रान्तीय जनरलों ने भी इसे स्वीकार किया।

अगर च्यांग यह स्वीकार कर लेता तो इसका परिणाम यह होता कि एक दिन उसे येनान इलाके को घेरने वाली अपनी

सर्वश्रेष्ठ सेना को युद्ध मोर्चे पर भेजना पड़ता, वह अमरीकी हथियारों का युद्धोत्तर उपयोग के लिए पूरी तरह संग्रह नहीं कर पाता और उसे अमरीकी की मदद को दूसरी सेनाओं में बाँटना पड़ता, वह इसके लिए तैयार नहीं था। कोमिन्ताग के दूसरे सेनापति जो युद्ध सामग्री और दवाइयाँ काले बाजार बेचकर मुनाफा उठाते थे जो सैनिकों की संख्या को अधिक बताकर उनकी तनखा जेब में रख लेते थे वे घबराए। च्यांग और इन प्रतिक्रियावादी अमरीकी दोस्तों द्वारा स्टीलवेल के खिलाफ रुजवेल्ड पर दबाव डाला। च्यांग ने रुजवेल्ट से मांग की कि चीन से स्टीलवेल को हटा लिया जाय चूंकि उसका व्यवहार उज्जड़ है। उसने कहा कि इसके बाद ही मैं अमरीकी प्रोग्राम पर बात करूँगा। प्रेसीडेन्ट रुजवेल्ट के चीन स्थित विशेष प्रतिनिधि और तेल व्यापारी हर्ले ने च्यांग का समर्थन किया। इन प्रतिक्रियावादियों के दबाव पर अमरीकी राष्ट्रपति रुजवेल्ट ने स्टिलवेल को चीन से हटा दिया। सभी प्रगतिशील तत्वों ने इसका विरोध किया और चीन स्थित तत्कालीन अमरीकी राजदूत गास ने तो त्याग पत्र भी दे दिया।

रुजवेल्ट की मृत्यु—

थोड़े ही दिनों में प्रे० रुजवेल्ट की अकस्मात मृत्यु होगई इस मृत्यु से अमरीका के प्रतिक्रियावादी बे नकेल हो गये और वे देश विदेश में बेशर्मी के साथ प्रतिक्रियावादी, रूस विरोधी और जन विरोधी नीति अपनाने लगे। हर्ले जो कि अब चीन में राजदूत थे और जनरल वेडमेयर जो स्टिलवेल की जगह नियुक्त हुए चीन के प्रतिक्रियावादियों की छिप २ कर मदद करने लगे। लेकिन उन्होंने तटस्था और उदारता का स्वांग अभी समाप्त नहीं किया अमरीका ने स्टिलवेल के समय में जो प्रस्ताव रखा था अब

उस पर से दबाव हटा लिया क्योंकि जर्मनी हार चुका था और चीन की एकता और शक्ति के बिना अब जापान का पतन साफ दिखाई दे रहा था। च्यांग ने स्टिलवेल प्रस्ताव के एक भाग को तोड़ मरोड़ कर कहा कि कम्युनिस्ट सेनाएँ च्यांग अमरीका और कम्युनिस्टों के संयुक्त कमान में रख दी जाय। कम्युनिस्टों ने इस शरारत भरी चाल में फसने से साफ इन्कार कर दिया।

हर्ले येनान और चुंगकिंग के बीच बहुत दिनों तक उड़ता रहा और दुरंगी बातें करता रहा। उसने कम्युनिस्टों के सामने उनके प्रस्तावों से भी अच्छा एक सुलहनामे का प्रस्ताव रखा। कम्युनिस्ट संयुक्त कमांड और मिलीजुली सरकार ही मांगते थे। हर्ले ने इनका समर्थन करते हुए कहा कि सद वातावरण के लिए नागरिक स्वतन्त्रता, सभी राजनैतिक दलों की समानता और अमरीकी युद्ध सहायता का समान बंटवारा आवश्यक है। कम्युनिस्ट इतने भले आदमी को देख कर आश्चर्य में पड़ गये। इस पर हर्ले ने उत्तर दिया ' यह तो केवल अच्छी जेफरसन की डेमोक्रेसी है। कोई वजह नहीं कि तुम्हें यह सब नहीं मिले।" हर्ले ने इस प्रकार का दस्तावेज भी बनाया जिसमें उपर हर्ले ने हस्ताक्षर किये और नीचे मावसेतुंग ने, बीच की जगह च्यांग काई शेक के हस्ताक्षरों के लिए खाली रखी गई जिसे भराने की जिम्मेवारी हर्ले ने ली। च्यांग इसके लिए तैयार नहीं हुआ क्योंकि उस पर दबाव डालने या समझानेकी जगह हर्ले ने कहा कि तुम इसे अस्वीकार करो तो भी अमरीका तुम्हारी जो मदद कर रहा है उस पर इसका कोई असर नहीं पड़ सकता। च्यांग यही चाहता था, जब उसे अमरीकी सहायता का विश्वास हो गया तो उसने समझौता करने से इन्कार कर

दिया। हर्ले और वेडमेयर के सामने ही च्यांग ने अमरीकी शस्त्रों से सुसज्जित सेना द्वारा चेनान इलाके पर १६४५ के बसन्त में चीन जापान युद्ध के दौरान में एक आक्रमण किया। लेकिन वह इसमें कामयाब नहीं हुआ उसे पीछे हटना पड़ा। च्यांग की पराजित सेना के अमरीकी हथियार पहली बार कम्यु-निस्टों को मिले। इस हमले के पहले जनरल वेडमेयर ने उत्तरी चीन का दौरा कर च्यांग की सैनिक तैय्यारी को अच्छी तरह देख चुका था। इस हमले में कम्युनिस्टों के हाथ जो अमरीकी शस्त्र पड़े उनकी उन्होंने सूचि प्रकाशित करदी। जब पत्रकार सम्मेलन में हर्ले से पूछा गया कि यह शस्त्र उनके हाथ कैसे लगे तो यह अमरीकी जनरल उत्तर देता है कि शायद 'चुरा' लिये गये होंगे।

इसी अवसर पर चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की ७ वीं कांग्रेस हुई जिसने राष्ट्रीय ऐकता के लिए जोरदार प्रयत्न किया। इस अवसर पर बोलते हुए अध्यक्ष मावसेतुंग ने चीन की प्रगति के लिए शान्तिपूर्ण मार्ग बतलाया और साम्राज्यवादियों को आग से न खेलने की सलाह दी—

"**एक पार्टी की तानाशाही**—और कोमिन्तांग में भी एक बदनाम गुट्ट की तानाशाही न केवल प्रतिरोध के युद्ध में जनता की एकता और संगठन में बुनियादी बाधा है बल्कि वह "गृह-युद्ध की भयावह बच्चेदानी भी है।"

"कोमिन्तांग में मुख्य शासक गुट्ट अभी भी गृहयुद्ध और और तानाशाही की नीति को मानता है। वे गृहयुद्ध प्रारंभ करने की तैयारी कर रहे थे और विशेष कर अब कर रहे हैं। वे केवल मित्र सेनाओं द्वारा चीन के कुछ भागों से जापानियों को भगाने की बाट देख रहे हैं। उन्हें यह भी उम्मीद है कि चीन में

मित्र सेनापति वही पार्ट अदा करेंगे जो ग्रीस में जनरल स्कोबी ने किया था। वे ग्रीस में प्रतिक्रियावादी सरकार और जनरल स्कोबी द्वारा किये गये खून खच्चर का समर्थन और स्वागत करते हैं।"

माव ने आगे चल कर कहा कि—

"प्रथम, जापनी आक्रान्ता पूरी तरह से पराजित किया जाना चाहिये। इसमे कोई बीच का समझौता न हो।

द्वितीय, चीन में फासिस्टवाद के अन्तिम स्वरुप को भी नष्ट किया जाय उसके अवशेषों को भी कहीं रहने नहीं दिया जाय।

तीसरे, चीन में जनतांत्रिक शान्ति हो और गृहयुद्ध नहीं होने दिया जाय।

चौथे कोमिन्तांग का तानाशाही शासन समाप्त हो। इसकी समाप्ति के साथ सर्व प्रथम इसका स्थान एक अस्थाई जनतांत्रिक संयुक्त सरकार ले जिसे समूचे राष्ट्र का समर्थन प्राप्त हो। खोए हुए प्रदेशों की प्राप्ति के पश्चात् एक स्वतंत्र और अनियंत्रित चुनावों द्वारा जनता की इच्छा को अभिव्यक्त करने वाली बाकायदः संयुक्त सरकार बनाई जाय।" जापान विरोधी युद्ध में पार्ट अदा करने के लिए अमरीका और इंग्लैंड को धन्यवाद देकर माव ने घोषणा की—

"हम मित्रराष्ट्रों से और विशेषकर अमरीका और इंग्लैंड की सरकारों से प्रार्थना करते हैं कि वे चीनी जनता के विस्तृत भाग की आवाज को गंभीरता पूर्वक सुनें और अपनी नीतियों को चीनी जनता की इच्छा के विरुद्ध नहीं बनावें वर्ना वे चीनी लोगों की मित्रता को धक्का पहुंचावेंगे और खो देंगे। अगर

कोई विदेशी सरकार चीन के प्रतिक्रियावादी दलों की चीनी जनता के प्रगतिशील लक्ष्य के विरुद्ध मदद करती है तो वह एक गंभीर गलती करेगी।"

लेकिन कहावत है परमात्मा जिसका अन्त चाहता है उसकी बुद्धि पहले ही हर लेता है। यही बात च्यांग और ट्रूमेन के लिए सही साबित हुई।

जापान विरोधी युद्ध का अन्त

जब चीन के प्रतिक्रियावादी अमरीकी साम्राज्यवाद से सांठ गांठ की कड़िया मजबूत बना रहे थे, मन्चूरिया पर सोवियत के हमले एटमबम के जापान पर प्रहार से जापानी साम्राज्यवाद की कमर टूट गई और उसने अगस्त १९४५ में हथियार डाल दिये। च्यांग काई शेक ने फौरन ही चीन स्थित जापानी सेनापतियों के नाम एक आदेश जारी किया जिसमें कहा गया कि वे उन्ही सेनाओं के सामने शस्त्र डालें जो च्यांग द्वारा अधिकृत हैं। अगर उन्होंने अनअधिकृत सेनाओं के आगे हथियार डाले तो वे इसके लिए जिम्मेवर ठहराए जावेंगे। उसने कम्युनिस्ट सेनाओं को स्थिर रहने का आदेश दिया। प्रधान सेनापति जूदेह ने जनमुक्ति सेना को च्यांग के आदेश के विरुद्ध जापानियों से शस्त्र लेने और शहरों व यातायात के मार्गों पर अधिकार करने का आदेश दिया।

आजाद इलाके शत्रु की पांति के पीछे फैले हुए थे उनके बीच में शत्रु अधिकृत यातायात के मार्ग छावनियों और शहर थे अतः उनके लिए शत्रु से शस्त्र लेना और फैल जाना आसान था। शहरों और देहात की जनता अपनी उद्धारक जन मुक्ति सेना का स्वागत करती थी। च्यांग के आदेश के अनुसार अनेक स्थानों पर जापानी सेना मुक्ति सेना से लड़ने लगी। कम्यु-

निस्टों ने इस युद्ध को बन्द कराने और जिन स्थानों पर मुक्त सेना लड़ रही थी वहां उसका अधिकार स्वीकार करने की च्यांग से मांग की।

लेकिन अमरीका और च्यांग की नीति दूसरी ही थी। च्यांग की अधिकांश सेना देश के भीतरी भागों में थी। अत उसके लिए फैल कर जापान अधिकृत इलाकों पर अधिकार करना संभव नहीं था। इस स्थिति में उसने अपने पहले आदेश के समर्थन में २३ अगस्त को दो नये आदेश दिये जिनमें कहा गया कि जब तक सरकारी सेनाएँ अधिकार न लेलें तब तक जापानी सेना जहाँ अधिकार है वहाँ बनी रहें और अगर इन जगहों पर "गैर कानूनी सेनाओं" ने अधिकार कर लिया है तो जापानी उन्हें पुनः छीनकर च्यांग के हवाले करें। इस आदेश के अनुसार समूचे उत्तरी चीन में जापान विरोधी युद्ध पुनः भड़क उठा। जापानियों ने घोषणा की कि वे तो च्यांग काई शेक का हुक्म मात्र बजा रहे हैं। च्यांग के कृपा पात्रों ने उनका समर्थन किया और जापानियों की इसके लये प्रशंसा की।

जन मुक्ति सेना के विरोध में अब च्यांग जापानी और उनके पिट्ठू अमरीका चारों एक हो गये थे। मचूरिया और उत्तरी चीन में च्यांग की सेना को पहुंचाने के लिये अमरीकी जल सेना और वायु सेना को मचूरिया में पहुँचाया गया। केवल इस कार्य में अमरीकी जनता ३० करोड़ डालर खर्च हुए। उत्तरी चीन के बन्दरगाहों, रेल्वेकेन्द्रों और मुख्य स्थानों पर अमरीकी सेना जापानियों से हथियार लेने के नाम पर पहुँची और फिर इन स्थानों को कोमिन्तांग आक्रमणों का आधार बनाया गया। इस प्रकार कोमिन्तांग की १०७ डिविजनल सेना (१२ लाख सैनिक) थे, आजाद इलाकों पर टूट पड़ी। इसमें

अमरीका द्वारा सज्जित और ट्रेन्ड सेनाओं के अतिरिक्त ५ लाख जापानी और पिट्ठू सैनिक भी थे। और अनेक स्थानों पर तो अमरीकी बेड़े और वायु सेना ने कोमिन्तांग आक्रमण में भाग लिया। लेकिन यह देखा गया कि मुक्ति सेना को पराजित करना अभी संभव नहीं है। अमरीका ने समझा बुझाकर कम्युनिस्टों को कमजोर करने की सोची। अमरीकी राजदूत हर्ले स्वयं येनान गया और अमरीका की ओर से माव के जीवन रक्षा की गारन्टी देकर उसे अपने साथ च्यांग काई शेक से बातचीत करने के लिये चुंगकिंग ले गया। १८ वर्षों में पहली बार माव कम्युनिस्ट इलाकों से बाहर निकला था। ६ सप्ताह तक बातचीत के परिणाम स्वरूप एक समझौता हुआ जिसमें दोनों पक्षों ने गृहयुद्ध समाप्त करने, जनतांत्रिक शासन नागरिक अधिकारों की सुरक्षा, राष्ट्रीय सेनाओं का पुनः गठन और सभी राजनैतिक दलों को कानूनी स्थिति और समानता को स्वीकार किया। बदले में कम्युनिस्टों ने शंघाई और केन्टन के इर्दगिर्द १ करोड़ ७० लाख की आबादी वाले ४१ हजार वर्गमील में फैले हुए आजाद इलाकों को खाली करना स्वीकार किया। कम्युनिस्ट यदि चाहते तो कभी केन्टन और शंघाई को ले लेते लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय लूटेरे चौकन्ने न हो, इसलिये उन्होंने ऐसा कदम नहीं उठाया।

समझौते पर हस्ताक्षर होने के पूर्व ही च्यांग काई शेक ने ऊपर बताया हुआ हमला कर दिया था और हस्ताक्षर होने के दो दिन बाद ही 'कम्युनिस्ट लूटेरों' का मुकाबला करने वाले सेनापतियों को छपी हुई हिदायतें भेजी गई। यांग्त्सी के दक्षिण से लौटती हुई मुक्ति सेनाओं पर भी हमले किये गये। होनान में भेजी गई च्यांग की तीन सेनाओं में से २ पराजित हुई और

तीसरी गृहयुद्ध से हट गई। उसकी नई आठवीं सेना अपने शस्त्रों और अफसरों सहित मुक्ति सेना से मिल गई। इससे जाहिर हो गया कि उत्तरी चीन में कम्युनिस्टों को परास्त करने की शक्ति च्यांग के पास नहीं थी। ऐसी स्थिति में चाल को बदलना जरूरी हो गया। गृहयुद्ध की नीति वाले अमरीकी दूत हर्ले और जनरल वेडमेयर को चीन और अमरीका में गृहयुद्ध की नीति का जोरों से विरोध होने के कारण वापिस बुला लिया। इसकी जगह अमरीका के राष्ट्रपति के व्यक्तिगत दूतकी हैसियत से जनरल जार्ज सी० मार्शल को चीनमें शांति स्थापना के लिए भेजा गया। उसके सम्मान में शंघाई में विद्यार्थियों ने विराट जलूस निकाला जिसमें गृहयुद्ध बन्द करने के नारे लगाए गये। इन विद्यार्थियों की च्यांग की राजनैतिक पुलिस ने मरम्मत की।

उपरोक्त समझौता सफल न होने के उपरी तौर पर दो मुख्य कारण थे एक तो च्यांग किस अनुपात में नई सेना का संगठन होगा यह बताने को तैयार नहीं था, दूसरे वह कम्युनिस्ट अधिकृत इलाकों की चुनी हुई सरकारों को मानने के लिए तैयार नहीं था। इस प्रश्न को हल करने के लिए कम्युनिस्टों के सभी सुझाव उसने ठुकरा दिये यहाँ तक कि वह इन इलाकों में सभी दलों की देखरेख में भी चुनाव करने को तैयार न था। और उधर कम्युनिस्ट भी इन इलाकों को तानाशाही शासकों को सौंपने के लिए तैयार नहीं थे।

प्रश्न उठता है कि ट्रूमेन शाही चीन में लोकतन्त्र विरोधी शक्तियों की मदद पर क्यों उतर आई और गृहयुद्ध भड़काने का मार्ग उसने क्यों अपनाया? ऐसे कौन से स्वार्थ थे जिनके कारण डालरशाही ने ४८ करोड़ लोगों की दुश्मनी मोल ली?

अमरीका के धन कुबेरों का ख्याल था जर्मनी जापान और

इटली की पराजय से दुनिया के बाजारों में इन प्रतिद्वन्द्वियों के न रहने और दूसरे राष्ट्रों के युद्ध में कमजोर हो जाने पर हमारा व्यापार पूरे वेग से चमक उठेगा और यह ख्याल गलत नहीं था। चीन उनके सामने एक बहुत बड़ा बाजार था ४५ करोड़ खरीदारों का देश। जापान की पराजय पर अमरीका चीन के बाजार को अपनी जागीर समझ रहा था। युद्ध काल में अमरीका ने चीन को उधार पट्टा सहायता और अनेक आर्थिक सलाहकार भेज कर अपनी स्थिति मजबूत करली थी। युद्धोत्तर काल के लिए अमरीकी और चीन के प्रतिक्रियावादी इस बिलियन डालर पूंजी से चीन के सामाजिक ढांचे में सुधार किये बिना आर्थिक पुनः निर्माण की योजनाएं बना रहे थे। चीन के प्रतिक्रियावादियों को विश्वास था कि इस तरीके से हम खेतीहर क्रान्ति को रोक सकेंगे, अतः वे अधिकाधिक अमरीका के पंजे में फंसते रहे और अमरीका अपनी पुरानी पूंजी और प्राप्त विशेषाधिकारों की रक्षा के लिए गृहयुद्ध के दलदल में अधिकाधिक उलझता गया।

इसके अतिरिक्त अमरीकी साम्राज्यवादियों के राजनैतिक इरादों में चीन आजाता हो दूसरे महायुद्ध के बाद अमरीका सारे विश्व पर छा जाना और सारी राजनैतिक सत्ता अपने हाथों मे केन्द्रित करने की चेष्टा में रहा है। दुनिया के प्रत्येक भाग में अमरीका ने अपने सामरिक अड्डे स्थापित किये हैं अपनी सेनाएं भेजी है और हर मुल्क में वह अपनी समर्थक सरकारें बनाने में एडी चोटी का जोर लगाता रहा है। विश्व-विजय की इस योजना को पूरा करने के लिए चीन जैसे विशाल देश का हाथ में होना जरुरी है। चीन में जनतंत्र की जीत उसके इरादों में बाधक थी। इसलिए रूसी प्रसार को रोकने के बहाने

अमरीकी चीन में सब से बदनाम और प्रतिक्रियावादी गुट्टों का सहयोग प्राप्त करने में लगे रहे। जिस पथ पर चलने से जापान का पराभव हुआ उसी पथ को अपनी अदूरदर्शिता के कारण ट्रूमेन ने अपना लिया।

चीन के प्रतिक्रियावादियों के आगेवान थे- चार परिवार-च्यांग, सूंग, कुंग और चेन। इन्होंने पिछले बीस वर्षों के शासन में दस से बीस खरब (अमरीकी) डालर पूंजी लूटी, सारे देश की अर्थ व्यवस्था पर इनका एक छत्र राज्य हो गया। ' यह इजारेदार पूंजी राज्य सभा से मिल कर सरकारी पूंजी बन गई है। और विरोधी साम्राज्य और देशी जमींदार वर्ग तथा पुराने ढंग के धनी किसानों के साथ घुल मिल कर सरकारी इजारेदार, व्यापार-सामन्ती-सरकारी इजारेदार पूंजी बन जाती है। यही च्यांग काई शेक के प्रतिक्रियावादी शासन की आर्थिक नींव है। यह सरकारी इजारेदार पूंजी न केवल मजदूरों और किसानों को सताती है बल्कि वह निम्न-पूंजीवादी वर्ग को भी सताती है और मझोले पूंजीपतियों को नुक्सान पहुंचाती है। जापान विरोधी युद्ध के दिनों में और जापानियों के आत्म समर्पणके बाद यह विशेष रुप से फूली फली और बढ़ी है। " (माव से तुंग दिसम्बर १६४७) १६४४ के दिनों में कोमिन्ताग अधिकृत प्रदेश की औद्योगिक पूंजी का ७० प्रतिशत भाग इन चार परिवारों के पास था। युद्ध के बाद पूंजी और उद्योग इन चार लूटेरों के हाथों में तेजी से आने लगे। १६४७ में कम आंके गये आंकडो के अनुसार ही ४ परिवारों के पास चीन में बिजली उत्पादन का ६५ प्रतिशत भाग, कोयले की खानों का ३६ प्रतिशत टीन, की खानों का ३५ प्रतिशत और कताई उद्योग ३६ प्रतिशत और कपड़ा की मिलोंका ५७ प्रतिशत भाग था। इनके चार बैंक,देशके

४७१४ बैंको पर नियंत्रण रखते थे और देश की तमाम अर्थनीति मुद्रा और राष्ट्रीय बजट इनके पंजे में थे। इसी तरह चीन का आन्तरिक नाविक व्यापार और विदेशी व्यापार इनके हाथों में सरकार पर च्यांग काई शेक गुट का अधिकार होने के कारण था। चारों परिवारों की पूंजी अमेरिका की पूंजी से मजबूती से बंधी हुई थी। चीन के इन इजारेदार पूंजीपतियों की पूंजी अमरीका से बंधी होने और प्रतिक्रियावादी शासनतंत्र के कारण बनी थी और जिन्दा रह सकतीथी।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान और बाद के तीन वर्षों में ही अमरीका ने प्रतिक्रियावादी च्यांग काई शेक सरकार की सहायता में ६ अरब डालर खर्च किये। इसमे से युद्ध कालीन उधार ६२००००,००० डालर। और उधार पट्टा सहायता ७८२०००-०००, यू०एन०आर०ए० सहायता ४६६०००,००० डालर थे; इसके साथ युद्ध समाप्त होने पर २ अरब ४० करोड़ डालर की अतिरिक्त युद्ध सामग्री च्यांग को दी गई। इसके अतिरिक्त अमरीका के आयात निर्यात बैंक ने ८ करोड़ २० लाख डालर उधार दिये। अमरीकी सेनाओं और खुफिया सर्विस को रखने आदि पर चीन में कितना खर्च हुआ, यह अमरीका के शासक ही जानते हैं १९४० में ही चीन में अमरीकी सेना रखने पर ११ करोड़ डालर खर्च हुए। और अमरीका ने यह सब लड़खड़ाती हुई कोमिन्तांग शासन प्रणाली को किसी तरह जीवित रखने के लिए ही नहीं किया था। इस आर्थिक सहायता के जरिये अमेरिका कोमिन्तांग चीन की अर्थ व्यवस्था पर अच्छी तरह छा गया। इस सहायता के बदले चीन का आर्थिक भविष्य च्यांग काई शेक ने वाल स्ट्रीट के यहाँ गिरवी रख दिया। १९४६ की मित्रता, व्यापार और जहाज रानी सन्धि के जरिये

अमरीका को चीन में असीम और अनियन्त्रित अधिकार मिल गये। उसे चीन में सभी तरह की व्यापारिक कम्पनियाँ खोलने, व्यापार और उद्योग में पूर्ण स्वतन्त्रता, खनिज पदार्थों को निकालने का अधिकार, जमीन खरीदने और मकान बनाने का हक मिल गया। युद्ध के पूर्व भी चीन में विदेशियों को विशेषाधिकार रहे हैं लेकिन इस बार अमरीका को च्यांग काई शेक की सरकार द्वारा चीन मे जो अधिकार मिले, वे अभूतपूर्व थे।

१६४६ से १६४८ तक चीन के साथ हुई व्यापारिक सन्धि हवाई यातायात सन्धि, आर्थिक सहायता समझौता, और शिक्षा व पुनः निर्माण के समझौते के द्वारा अमरीका ने चीन के सारे भविष्य को खरीद लिया। राज्य की मशीन में सभी महत्वपूर्ण स्थानों पर अमरीकी 'सलाहकारों' को नियुक्त किया गया जो वास्तविक शासक थे। चीन में अमरीका द्वारा इस प्रकार प्राप्त अधिकारों की एक लम्बी सूची बन सकती है। फारमूसा में तो उन्होंने यातायात, जहाजरानी, एल्यूमिनियम उद्योग, तेल साफ करने और शक्कर बनाने के कारखानों और बन्दरगाहों पर अनियन्त्रित अधिकार प्राप्त कर लिया। इस लूट में अमरीका ने अपने दोस्त अंग्रेजों को भी पछाड़ दिया, जिनका अब तक चीन के उद्योंग और व्यापार में सबसे बड़ा हाथ था। जब २ जनमुक्ति सेना आगे बढ़ने लगती। अमरीकी साम्राज्यवादी बौखलाने लगते। इतनी पूंजी, इतने अधिकारों को हाथ से निकलते हुए चुपचाप देखना उनके लिए असंभव था। चीनी जनता के प्रति अमरीका के शासक वर्ग की घृणा और रोष की जड़ यह पूंजी है जिसे उन्होंने कोमिन्तांग के पाताल फोड़ कुए में आँखें बन्द कर उड़ेली थी।

अमरीका की साम्म्राज्यवादी नीति का परिणाम

सामने आए बिना रह नहीं सकता था! अमरीका ने चीन के बाजार को अपने अतिरिक्त माल से पाट दिया। अमरीकी प्रतियोगिता के आगे छोटे २ चीनी उद्योग नष्ट होने लगे। १६४७ में ही नानकिंग की ५०० व्यापारिक संस्थाओं को अपना काम बन्द करना पड़ा, टिन्टसीन में ७० प्रतिशत उद्योग बन्द हो गये और शेष ने अपना काम बहुत ही कम कर दिया। शंघाई में युद्ध पूर्व की ५४१८ औद्योगिक कम्पनियों में से १६४७ में केवल ५८२ बाकी बची और इनके भी बड़े भाग ने १६४८ में अपना कारोबार बन्द कर दिया। पश्चिमी चीन में युद्ध काल में बनी फेक्टरियों को भी अपना उत्पादन कम करना पड़ा। विदेशी साम्राज्यवाद के आर्थिक संकट में राष्ट्रीय पूंजीपतिवर्ग का भी इस प्रकार दम घोटने लगा। चीन के सभी राष्ट्रीय वर्ग साम्राज्यवाद विरोधी खेमे की ओर जाने लगे।

अमरीकी साम्राज्यवाद और उसके पिछलग्गुओं की उपरोक्त नीति के कारण सारे चीन में तबाही फैलने लगी। बड़े पैमाने पर मजदूरों और मध्यमवर्गी जनता में बेकारी फैली दस्तकार बेकार होकर बैठने लगे। चीजों के दाम जो पहले ही बहुत ऊँचे हो गये थे सब आसमान में पहुँच गये। चीनी डालर का मूल्य दिनोंदिन कम होने लगा और चावल के लिए शहरों में दंगे होने लगे। शहरों में मजदूर वर्ग के साथ २ मध्यमवर्ग के भी कोमिन्ताग की नीति के विरुद्ध दिनों दिन असंतुष्ट होता गया और जब लोग अपने असंतोष का प्रदर्शन करते, आर्थिक स्थिति को सुधारने में असमर्थ कोमिन्ताग के शासक जनता पर अधिकार आतंक फैलाने लगते और इस आतंक प्रदर्शन में साम्राराज्यवादी अमरीका उनका साथ देता रहा। अभी २ पेकिंग की एक प्रदर्शनी में अमरीका द्वारा चीन में आतंक फैलाने में किस प्रकार

मदद दी गई उससे जिन्दा सबूत बताए गये थे। 'मेड इन अमरीका' के हथियारों से अमरीकी 'विशेषज्ञों' द्वारा शिक्षित चीनी जासूसों ने कम्युनिस्टों के अतिरिक्त अन्य जनवादी राजनैतिक पार्टियों के आगे वालों की हत्याएं की, देशभक्तों को 'मेड इन अमरीका' की हथकड़ियों में जकड़ा गया।

मानव इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब किसी देश की जनता जाग उठती है, वह अपनी मुक्ति के लिए अथक श्रम करती है, और जब वह शस्त्र लेकर आततायियों के विरुद्ध कदम बढ़ाती है तो राक्षसी दमन भी उसे शान्त नहीं कर पाते। चीन के आधुनिक इतिहास में इस सत्य की पुनरावृत्ति हुई। अमरीका और च्यांग के संयुक्त प्रयत्न भी चीनी जनता की गति को रोक नहीं पाए। डालर की दीवारों को ढहा कर जनक्रान्ति की नदी अपनी धारा में प्रतिक्रियावादियों को बहाने लगी।

चीन में 'मार्सल योजना' असफल

मास्को में तीन बड़े राष्ट्रों के विदेश मंत्री सम्मेलन में चीन की एकता और आन्तरिक मामलों में किसी राष्ट्र के हस्तक्षेप न करने की नीति निर्धारित करने, और इसी आशय के ट्रूमेन के वक्तव्य के बाद समूचे चीन ने बड़ी उम्मीदों से जनरल मार्सल की ओर देखा जो अमरीका के राष्ट्रपति की ओर से चीन में शांति स्थापना के लिए विशेष दूत बन कर आए थे। मार्सल के प्रभाव में च्यांग काई शेक ने युद्ध बन्दी के आदेश पर हस्ताक्षर किये और सभी दलों की राजनैतिक परामर्श दात्री समिति की बैठक प्रारंभ हुई। बैठक में च्यांग काई शेक ने सदस्यों के उत्साह के बीच 'युद्ध रोको' आज्ञा सुनाई और चीन की जनता को चारों स्वतंत्रताएं देने का ऐलान किया–जीवन, भाषण

प्रकाशन और सभाओं की-सभी राजनैतिक दलों को राजनैतिक समानता देने. और राजबन्दियों को रिहा करने का भी उसने ऐलान किया। तीन सप्ताह तक मेहनत कर प्रतिनिधियों ने ५ प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार किये। उन्होने अन्तरिम काल की सरकार, राज्य के शान्ति पूर्ण निर्माण, राष्ट्रीय ऐसेम्बली बुलाने और सभी सेनाओं को एक राष्ट्रीय सेना में बदलने पर एक मत से निश्चय किये। और यह सब हुआ च्यांग काई शेक की अध्यक्षता में। समूचे चीन में उत्साह की एक लहर दौड़ गई।

लेकिन अमरीका और चीन के प्रतिक्रियावादी, जनवादी शान्ति नहीं चाहते थे वे तो सारे चीन पर अपना एक छत्र राज्य चाहते थे। उन्होने इस समझौते पर हर्ष प्रगट करने वालों की पिटाई प्रारंभ की और दंगे उकसाए। मार्च मे कोमिन्तांग की कार्यकारिणी ने परामर्श दात्री समिति अपने ही सदस्यों की भर्त्सना की और उसके निर्णयों को मान ने से इन्कार कर दिया और पहली अप्रेल को च्यांग ने ऐलान किया कि प्रस्तावित विधान स्वीकार नहीं किया जा सकता और सरकार मंचूरिया को लेकर रहेगी। धीरे २ सारे चीन में गृहयुद्ध की ज्वाला भड़कने लगी।

जिस समय मार्शल सन्धि चर्चा में लगा हुआ था उसी समय अमरीकी सेना च्यांग की अधिकाधिक मदद कर रही थी वे उन्हें शस्त्र सज्जित कर महत्वपूर्ण नाकों पर पहुंचा रही थी। अकाल ग्रस्त इलाकों में अनाज ले जाने की जगह अमरीकी जहाज च्यांग के सेनाओं और रसद को इधर उधर ले जाने लगे। २७१ जहाज अमरीका ने च्यांग को भेट दिये। सन् ४६के अन्त कर अमरीका ने ८०७२०० आदमियो को शिक्षित और

सज्जित किया, खुफिया हत्यारों और हवाई चालकों को चीन और अमरीका में शिक्षा दी। हर्ले की 'युद्ध नीति' के दिनों में च्यांग आजाद इलाकों पर हमला करने के लिए १० लाख सैनिकों को एकत्रित कर सका, मार्सल की 'सन्धि चर्चा' के कारण वह २० लाख सैनिकों से आक्रमण कर सका। जापान युद्ध समाप्त होने पर उसके पास अमेरिकन सज्जित और शिक्षित ७० डिविजनें ही थी अब उसके पास ५३ डिविजनें एक नौसेना और वायुसेना भी थीं। शंघाई के एक पत्र ने अमरीकी नीति की व्याख्या करते हुए लिखा था "जब कोमिन्तांग जीतती है अमेरिका युद्ध चलने देता है लेकिन जब कोमिन्तांग की हालत बिगड़ने लगती है अमरीका फौरन मध्यस्थता करने लगता है।" सारा चीन मार्सल और अमरीका की नेक नियती में शीघ्र सन्देह करने लगा, अमरीका के 'शान्ति दूत' 'विशेष प्रतिनिधि' आदि की असलियत आधे एशिया के सामने आने लगी। अमरीकनों के ही शंघाई के पत्र 'चाइना विकली रिव्यू ने' अपने सम्पादकीय में पूछा- "हम स्वयं अभी तक यही समझने में लगे हुए हैं कि जनरल मार्सल यहाँ अमरीका की ओर से मध्यस्थ बनकर आए हैं या येनान के विरुद्ध युद्ध में अमरीकी राष्ट्रवादी सेनाओं के संयुक्त सेना-पति बनकर।"

अमरीकी नीति का विरोध करते हुए अध्यक्ष माव ने चीन से अमरीकी सेनाएं हटाने और अमरीकी सहायता बन्द करने की मांग करते हुए चीन के गृहयुद्ध के लिए बुनियादी तौर पर अमरीका को जिम्मेवार ठहराया। अमरीका ने इसका उत्तर अगस्त में च्यांग को २ अरब डालर मूल्य के शस्त्र और गोला बारुद देकर दिया।

दिसम्बर सन् १९४७ में अध्यक्ष माव ने रिपोर्ट देते हुए कहा था- "जुलाई सन् ४६ में जब च्यांग काई शेक गुट्ट ने देश भर में अपनी क्रान्ति विरोधी लड़ाई शुरु की, तब उसका ख्याल था कि तीन से छः महिने के अन्दर वह जनता की आजाद फौज को खत्म कर देगा। च्यांग के गुट्ट को इस बात का जोम था। कि उसके पास पास २० लाख स्थाई फौज है। दम लाख अस्थाई और १० लाख मोर्चे के पीछे रहने वाली सेना है। इस प्रकार उसके पास कुल ४० लाख सेना थी। हमला शुरु करने के पहले उसने पूरी तैय्यारी कर ली थी। चीन में पड़ी हुई दस लाख जापानी फौज का पूरा सामान उसे मिल गया था और अमरीका की सरकार उसे बेशुमार फौजी और आर्थिक मदद दे रही थी। साथ ही च्यांग काई शेक गुट ने सोचा कि जनता की आजाद फौज आठ बरस तक जापानियों से लड़ते २ थक कर चूर हो गयी है, वह संख्या में भी उसकी फौज से बहुत कम है। लड़ाई का सामान भी उसके पास कम है। उसके स्वतंत्र इलाकों की आबादी भी १० करोड़ से बहुत ज्यादा नहीं है और उसमें भी सामन्तवाद की प्रतिक्रियावादी ताकतें अभी मौजूद है, भूमि सुधार सब जगह नहीं हुआ है, और जहाँ हुआ है वहाँ पूरा नहीं हुआ है. इसलिए जनता की आजाद फौज के पीछे का इलाका अभी मजबूत नहीं है। इन सब बातों के आधार पर च्यांग गुट्ट ने चीनी जनता की शान्ति की इच्छा को ठुकराने का फैसला कर लिया। जनवरी १९४६ में कम्युनिस्ट पार्टी तथा कोमिन्तांग के बीच जो सुलह हुई थी और विभिन्न पार्टियों और दलों के "राज" राजनैतिक परामर्श-सम्मेलन ने जो प्रस्ताव पास किये थे उन्हे च्यांग काई शेक गुट्ट ने फाड़ फैंका और परिणाम की चिन्ता किये बिना लड़ाई शुरु करदी।"

क्यों ? च्यांग काई शेक गुट्ट की पराजय होने लगी चीन में अपनी पूंजी को डूबता देख कर अमरीकी साम्राज्यवादी बौखलाने लगे। इन्होने नये जनवादी चीन के विरोध में जापान, दक्षिण कोरिया, फारमूसा और फिलीपीन में सैनिक अड्डे स्थापित किये और वियतनाम मुक्ति संग्राम के विरुद्ध फ्रांस की खुल कर मदद प्रारंभ की। तिब्बत और चीन के अन्दरुनी भागों में अमरीका के भेदिये चीन को नुक्सान पहुँचाने में लगे। अन्तरराष्ट्रीय रंगमंच पर चीन को अकेला करने की नीति में अमरीकी इजारेदारों ने नये चीन का संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रवेश रोक दिया है। लेकिन यह अमरीका की मजबूती नहीं है। माव ने १९४७ में ही कहा था।

"अमरीकी साम्राज्यवाद इतिहास में सबसे मजबूत साम्राज्यवाद है साथ ही सब से कमजोर भी। गगनचुम्बी भवन ऊँचे हैं लेकिन नींवे हिल रही है। अमरीकी पूंजीवाद अपनी आंतरिक दृढता के कारण नहीं बल्कि दूसरे देशों के पूंजीवाद की कमजोरी कारण मजबूत दिखाई दे रहा है। यह एक विकास का नहीं पतन का चिन्ह है।

साम्राज्यवादी च्यांग की इतने उत्साह से मदद क्यों कर रहे हैं? क्यों कि वह प्रबल न होकर कमजोर है यही हाल जापान, ग्रीस और इटली में है। सर्वत्र प्रतिक्रियावादी खतरे में इसीलिए साम्राज्यवादी उनकी मदद के लिए दौड़ रहे हैं। यह पहला अवसर है कि दुनिया के इतने सारे प्रतिक्रियावादी मरणासन्न हैं।...अमरीकी प्रतिक्रियावादके सिर पर भारी बोझ है माव ने मुस्कराते हुए अन्ना लुई स्ट्रांग से कहा, उसे सारी दुनिया के प्रतिक्रियावादियों को टिकाए रखना है। और अगर वह उन्हें टिकाए नहीं रख सकता तो यह इमारत गिर पड़ेगी। यह एक खंभे पर टिकी हुई प्रतिक्रिया की इमारत है। एटमबम के

जन्म के साथ अमरीकी साम्राज्यवादियों की मृत्यु प्रारंभ हुई, उन्होंने मनुष्यों को छोड़ कर बम में विश्वास करना सीखा है। ऐटम बम इन्सानियत को नष्ट नहीं कर सकेगा। मनुष्य एटम बम का विनाश कर देगा।"

चीन में लोक शाही की विजय

चीनी जनता ने अपने मुक्ति संग्राम में बुनियादी विजय प्राप्त करली है। यह चीज एक लम्बे लगातार हथियार बन्द संघर्ष के दौरान में चीनी जनता को क्रमशः प्राप्त हुई।

जनरल जूदेह (दिसम्बर १९४९)

१९४६ की जुलाई में अमरीकी सहायता के दम पर च्यांग काई शेक ने चीन के गृहयुद्ध का अन्तिम परिच्छेद खोल दिया था। उसका विश्वास था कि उसकी सैनिक शक्ति कम्युनिस्टों से संख्या और शस्त्र बल में चौगुनी है, लेकिन यह बात थोड़े ही दिनों के लिए सच्ची रही और अमरीकी सहायता भी थोड़े ही दिनों तक काम आ सकी। एक वर्ष तक च्यांग की सेना आजाद इलाकों पर आक्रमण करती रही और मुक्ति सेना बचाव युद्ध करती रही। शत्रु की एक बड़ी कमजोरी थी और उसका इलाज उसके पास नहीं था। च्यांग गुट एक जन विरोधी, क्रांति विरोधी युद्ध चला रहा था, उसका पक्ष अन्याय और आतंक का था। स्वयं उसकी सेना और जनता ऐसा युद्ध पसन्द नहीं करती थी। कोमिन्तांग के अन्दर परस्पर झगड़ने वाले

अनेक गिरोह थे, सेना भी इन झगड़ों के असर से बची हुई नहीं थी और सेना के अफसरों व सैनिकों के सम्बन्ध भी अच्छे नहीं थे। दूसरी तरफ मुक्ति सेना के पीछे आजाद इलाकों की जनता, सुशासन और सेना का क्रांतिकारी अनुशासन, बहादुरी और विश्वास था जिसे च्यांग कभी आंक नहीं पाया।

अपनी बकायदा सेना के ८० प्रतिशत भाग को च्यांग ने आजाद इलाकों मे घुस जाने का आदेश दिया, इस प्रकार वह एक ही झटकेमें मुक्ति सेना का काम तमाम कर देना चाहता था। शत्रु की १६ लाख सेना खरबूजे में चाकू की भांति आजाद इलाकों में घुसने लगे। शत्रु के आक्रमण के विरुद्ध मुक्ति सेना ने बचाव युद्ध की नीति बनाई जिसे यदि एक चीनी दोहे में रखा जाता है तो उसका अर्थ होता है "यदि तुम सैनिकों को बचा कर भूमि खो देते हो तो भूमि पुनः प्राप्त की जा सकती है और यदि तुम भूमि को बचाने मे सैनिकों को खो देते हो तो तुम भूमि और सैनिक, दोनों को गवां दोगे।" कम्युनिस्टों ने अपने आधीन छोटे बड़े शहरों को मुहिम बना कर उनकी रक्षा करने के स्थान पर उन्हें अक्सर बिना लड़े खाली कर शत्रु सेना को उनकी चौकीदारी करने और आजाद इलाकों मे फैल जाने का मौका दिया। पुरानी सैनिक पद्धति के अनुसार उन्हें इन शहरों की रक्षा के लिए डट कर लड़ना चाहिये था लेकिन उनकी रणनीति तो बिल्कुल इसके विपरीत थी। वे शत्रु सैना को फैला कर, उलझा कर, उसका धीमे २ सफाया करने में लगे रहे, वे शत्रु के कमजोर नाकों पर उसकी अलग २ सेनाओं पर हमला कर उन्हें पराजित किया जाता और इस नीति को कुशलतापूर्वक चलाने के कारण शक्ति के संतुलन में आगे अन्तर आ गया।

अध्यक्ष माव ने कहा था "पहले दुश्मन के बिखरे हुए और छिटपुट दस्तों पर हमला करो, बाद में उन दुश्मनों की खबर लो

के बीच में लड़ना पड़ रहा था जहाँ छापेमार दिन रात परेशान करते थे। अब उसने हमला करने की नीति छोड़ कर अधिकृत अधिकृत स्थानों को बचाने की चेष्टा की। हाँ मार्च में उसने कम्युनिस्टों की राजधानी येनान पर भी अधिकार कर लिया। नानकिंग और वाशिंगटन के प्रतिक्रियावादी क्षेत्रों में इस विजय पर शराब के प्यालों पर प्याले चढ़ाए गये, लेकिन यह विजय क्षणिक थी। फरवरी में उप सेनापति पेंग ते व्हाई ने कहा था कि यदि ' च्यांग येनान ले लेता है तो उसका पतन प्रारंभ होता है। अगर हम इसी गति से उसकी सेनाओं को घेरते और नष्ट करते रहेंगे तो पतझड़ तक हम सारे मोर्चों पर प्रत्याक्रमण प्रारंभ कर देंगे।

अब लड़ाई छापामार लड़ाई ही नहीं थी। वह चालों के युद्ध में परिणित हो चुकी थी। भारी संख्या में शत्रु के शिक्षित सैनिक और शस्त्र मुक्ति सेना को मिले जिन्हें लेकर वह जम कर युद्ध करने, शहरों को घेरने और जबाबी हमले करने की स्थिति मे हो गई। शान्टुंग विजय पर प्रसिद्ध जनरल चेन यी ने बिट्टी ग्राहम नामक पत्रकार से कहा, ' हमारे पास रायफलें ही है इसलिये हम उनका उपयोग करने की सभी विधियों को अपनाते हैं। अब हमारे पास अमरीकी बजूका, टेंके और तोपें हाथ पड़ गई हैं हम उनका उपयोग सीख रहे हैं। अगर हमारे पास केवल चाकू ही होते तो हम उनके श्रेष्ठ और सभी उपयोग सीखते। सही कि हम उन्हें आधुनिक शस्त्रों से सज्जित सेना के विरुद्ध युद्ध भूमि में उपयोग नहीं करते लेकिन अन्ततः शत्रु को हमारे गाँवों में छोटे २ दलों में आना पड़ता। और वहां हम चाकुओं का उपयोग करते।"

गृहयुद्ध के प्रथम वर्ष के अन्त तक नई भर्ती के बावजूद

च्यांग की सैन्य संख्या ४३ लाख से सैंतीस लाख और उसमें नियमत सेना तो २० लाख से १५ लाख ही रह गई और उसकी २४८ बिगेड़ों में से सचमुच मोर्चे पर युद्ध करने वाली ४८ ही रह गई। इसके मुकाबले में मुक्ति सेना की संख्या बढकर १६ लाख हो गई जिनमें १० लाख नियमित सैनिक थे। कोमिन्ताग सेना की संख्या यद्यपि अब भी अधिक थी लेकिन उसका मनोबल टूट चुका था। सारे कोमिन्ताग क्षेत्रों मे एक पस्ती छा गई थी। कोमिन्ताग के पिछवाड़े के इलाकों में अब कोई नियमित सेना नहीं रही और जगह २ जनता का असंतोष जोरों से भड़कने लगा और छापामार कारवाइयाँ बढ़ने लगी। सभी वर्गों की राजनैतिक पार्टियाँ और दल च्यांगकाईशेक की युद्ध नीति का विरोध करने लगे। इधर जनमुक्ति सेना का मनोबल बहुत ऊँचा हो गया, उसके पिछवाड़े की रक्षा की आवश्यकता न होने के कारण उसकी चोट करने की शक्ति बढ़ गई। उसके शस्त्र अब पहले से अच्छे थे और अनुभव बढ़ गया था। इसके अतिरिक्त खेतीहर क्रान्ति को आगे बढ़ाने की नीति के कारण अब उसे जनता का सहयोग पहले से ज्यादा मिलने लगा और और ज्यों २ वह अधिक लड़ती लोग उसका अधिकाधिक समर्थन करते।

जुलाई १६४७ से मुक्ति सेना ने बचाव युद्ध की नीति को छोड़ कर प्रत्याक्रमण की नीति अपनाई जिसने डेढ़ वर्ष में ही शत्रु की कमर तोड़ दी। इसी समय अमरीका ने अपना 'चीन मिशन' जनरल वेडमेयर के नेतृत्व में भेजा जिसने च्यांग की मदद करने का बीड़ा उठाया और उसे संकट से निकलने की 'गुप्त योजना' बनाई। इसके अनुसार अब च्यांग की सेना की मदद के लिए अमरीकी सलाहकार भेजे गये जिनके नियंत्रण में

जो ज्यादा ताकतवर हैं और बड़ी तादादमें एक जगह इकट्ठा है। हर लड़ाई में इतने सिपाही लगाओ कि दुश्मन की ताकत एक दम कम पड़ जाय (यानि शत्रु के सिपाहियों से दुगुने, तिगुने, चौगुने, और कभी २ पांच या छः गुने सिपाही लगाओ) तथा दुश्मन चारों ओर से घिर जाय और फिर कोशिस करो कि हमारे जाल में से दुश्मन का एक भी आदमी बच कर न निकलने पाए, बल्कि सबके सब वहीं खत्म हो जावे। ऐसी लड़ाई में मत पड़ो जिसमें अपना नुक्सान ज्यादा हो और दुश्मन का कम या अपना नुक्सान और फायदा बराबर हो। हम मुठभेड़ के पहले बहुत मेहनत के साथ तैय्यारी करने और ऐसी हालत पैदा करने की जरूरत है जिसमें दुश्मन के मुकाबले हमारी ताकत इतनी रहे कि हमारी विजय पक्की हो जाय। ”

गृहयुद्ध के पहले ४ महिनों की ८८ लड़ाइयों में कम्युनिस्टों ने शत्रु के ३ लाख सैनिकों को बेकार कर दिया लेकिन च्यांग ने अपनी प्रारम्भिक विजयों की खुशी में आक्रांन्ता सैनिकों की सख्या बढाई। उसका १०५ शहरों पर अधिकार हो गया था। मारे खुशी के उसने बोगस राष्ट्रीय सभा नेशनल काउंसिल की बैठक देश का नया विधान बनाने के लिए बुलाई। जब च्यांग अपनी विजय की घोषणाओं में संलग्न था कम्युनिस्टों ने अगले चार महिनों में उस पर और तेजी से हमले किये। जुलाई-४६ से फरवरी ४७ तक के ८ महिनों में शत्रु के ७ लाख १० हजार सैनिकों का सफाया हो गया। उसने १०५ नगरों पर अधिकार किया जिसके परिणाम स्वरूप उसे प्रत्येक शहर पर औसत ७००० सैनिकों की बलि देनी पड़ी। अब उसके पास ११७ ब्रिगेडों में केवल ८५ ही आक्रमण के लिए बचीं। उसकी हालत इसलिए भी खराब हो गई कि उसे मुक्ति सेना के इलाकों

कोमिन्तांग सेना लड़ने लगी। लेकिन ट्रूमेन की योजनाएं कोमिन्तांग के पतन को बचा नहीं सकीं।

शत्रु सेना के विनाश के साथ २ अब मुक्ति सेना ने पुनः कस्बों और शहरों पर अधिकार जमाना प्रारंभ किया, बड़े २ शहरों को जहाँ शत्रु की सेना और बचाव की अच्छी तय्यारी थी उन्हें चारों और मुक्ति सेना ने घेर लिया। शत्रु द्वारा छीने गये प्रदेश को पुनः मुक्त किया गया। जुलाई से दिसम्बर के पहले सात महिनों में ही साढ़े सात लाख से अधिक शत्रु सैनिकों का सफाया हो गया। अब अमरीकी सैनिक मिशन की सलाह के अनुसार च्यांग ने अपने युद्ध प्रदेशों को २० भागों में बाँट कर प्रादेशिक रक्षा के लिए इन प्रदेशों को सेनापतियों के आधीन कर दिया जो कोमिन्तांगपार्टी, राज्य और सेना के संयुक्त डिक्टेटर हो गये।

च्यांग की सेना ने अनेक घिरे हुए नगरों को छोड़ कर महत्व-पूर्ण नाकों और यातायात केन्द्रों को आधार बनाया। ७ महिनों तक यह युद्ध नीति चलती रही लेकिन लाल सेना के बढते हुए हमलों के आगे यह नीति भी ठहर नहीं सकी। इन्ही दिनों में च्यांग ने अपनी बोगस ऐसेम्बली में घोषणा की कि 'वह ६ महिनों के भीतर पीत नदी के दक्षिण में कम्युनिस्टों का सफाया कर देगा।' इन पराजयों के कारण क्रोध में आकर अब वह यंस्व मोर्चो पर कमान लेने गया। पहले युद्ध में ही उसकी ५४००० सेना में से ३०००० गिरफ्तार हो गई। थोड़े ही दिनों में च्यांग की सेना येनान खाली कर भाग गई।

सुप्रसिद्ध जनरल लिन पियाव के नेतृत्व में दिसम्बर १६४७ में मंचूरिया में अपूर्व प्रत्याक्रमण प्रारंभ हुआ। इस हमले ने मंचूरिया में कोमिन्तांग की कमर तोड़ दी। प्रथम ६० दिनों के

युद्ध में डेढ़ लाख सेना समाप्त करदी गई, १७ शहरों पर मुक्ति सेनाका अधिकार हो गया १६००० किलोमीटर धरती और ६१ लाख मनुष्य मुक्त हो गये। च्यांग का अधिकार अब मंचूरिया के १ प्रतिशत भाग पर ही रह गया। चांगयुन और मुकडन नगर घिर गये। सितम्बर में मुक्ति सेना ने इन शहरों को जाने वाले मार्गों पर अधिकार कर ज़ोरों से हमला किया और २ नवम्बर को इन्हे ले लिया। सारा मंचूरिया अब मुक्ति सेना के हाथों में आगया। अकेले मंचूरिया में च्यांग की पौने पाँच लाख सेना नष्ट हो गई। मंचूरिया विजय चीन के गृह युद्ध में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अब शत्रु का सैनिक बल २६ लाख ही रह गया उधर मुक्ति सेना का बल ३० लाख से अधिक हो गया। इस परिवर्तन ने भावी जीतों को निकट ला दिया और अगले दो महिनों में ५ लाख सैनिक गवाँ कर च्यांग की सेना यांगत्सी के पार भागने लगी। दिसम्बर ५ से लेकर २१ जनवरी तक उत्तरी चीन के सब से महत्वपूर्ण त्रिभुज पेकिंग टिन्टसीन कालगान क्षेत्र के लिए निर्णयात्मक युद्ध हुए। च्यांग के उत्तरी चीन का सेनापति फू-सो-यी- स्वयं जन मुक्ति सेना से मिल गया। चीन की पुरानी और अब नई राजधानी पेकिंग बिना खून खराबी के मुक्ति सेना के हाथ में आ गयी। टिन्टसीन और कालगन सर किये गये। इस निर्णयात्मक त्रिभुज में च्यांग की ५ लाख से उपर सेना नष्ट हुई। अब च्यांग की स्थिति सैनिक आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से दयनीय हो गई। एक हारती हुई टीम के खिलाडियों की भाँति कोमिन्तांग के नेता पराजयों के लिए एक दूसरे को जिम्मेवार ठहराने लगे। उनकी पार्टी में आपसी मतभेद, गहरे होते गये। मुक्ति सेना समूचे उत्तरी चीन और मध्य चीन को मुक्त कर यांग्त्सी के उत्तरी तट

पर दहाड़ने लगी। तालू के वीर यांग्सी को पार कर 'चलो नानकिंग' के गगनभेदी नारे लगा रहे थे उनकी इन विजयों ने नानकिंग और वाशिंगटन के सोने के देवताओं के आसनों को हिला दिया। अब उन्होंने नई युक्ति सोची।

सैनिक दृष्टि से मुक्ति सेना से लोहा लेने में अब कोई लाभ नजर नहीं आता था। यदि उत्तर चीन से आई इस जनवाद की बाढ़ से प्रतिक्रिया को बचाना है तो किसी तरह इस बाढ़ की गति रोकी जाय। कोमिन्तांग चीन को सांस लेने की आवश्यकता थी। उसे समय की जरुरत थी जिसमें वह पुनः सैनिक और राजनैतिक तैयारियाँ करता। इसलिए इस बार हारते हुए प्रतिक्रियावादियों ने पुनः शान्ति का पासा फेंका। नानकिंग और वाशिंगटन के प्रतिक्रियावादी एक साथ शान्ति के लिए आँसू बहाने लगे। च्यांग काई शेक ने अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया। पहले डॉ॰ सुन फो और फिर ली सुंगजेन की अध्यक्षता में नई सरकार बनी। पहली जनवरी को डॉ॰ सुन फो ने 'गृहयुद्ध की समाप्ति और शान्ति की स्थापना के लिए" जनता से संगठित आन्दोलन करने की अपील की। साथ ही उन्होंने चीनी जनता के कसाई च्यांग काई शेक अमरीका के 'शांति दूत' जार्ज मार्शल और वेडमेयर की भी भूरी २ प्रशंसा की। इस डाक्टर ने "चीन की स्वाधीनता और जनता के हितों की रक्षा के लिए" कम्युनिस्टों को सुलह करने और फौजी कार्यवाही बन्द करने की अपील की।

कम्युनिस्ट शान्ति और एकता के लिए सदा की भांति तैयार थे। ४ महिने तक दोनों पक्षों में सुलह की बातचीत चलती रही। कम्युनिस्ट ऐसी शान्ति नहीं चाहते थे जिससे कि प्रतिक्रियावादी तत्व मजबूत हों और च्यांग व वाशिंगटन को भविष्य में षडयन्त्र

करने व गृहयुद्ध भड़काने की छूट हो। उन्होंने जनवादी शांति के लिए सुप्रसिद्ध ८ शर्तें रखीं- जिनमें पहली थी च्यांग और दूसरे युद्ध अपराधियों को हमारे सुपुर्द करो। कोमिन्ताग के प्रक्रियावादी, जनवादी शान्ति से, अमरीका या फारमूसा भागना अधिक पसन्द करते थे अतः शान्ति चर्चा पुनः असफल रही।

२१ अप्रेल १९४९ को जब चीनी जनता के शत्रुओं ने कम्युनिस्टों के शांति प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया १० लाख बहादुरों ने यांगत्सी की चौड़ी धारा को तीर की तरह पार कर लिया और उनके पदचापों से नानकिंग और शंघाई के महलों की दीवारें कांपने लगी। समूचे चीन की जनता लाल सेना के गोलों के साथ २ गरजने लगी। दक्षिणी चीन में छापामार युद्ध तेजी से फैलने लगा। नानकिंग और शंघाई की जनता मुक्ति सेना के स्वागत की गुप्त तैयारियाँ करने लगी। कोमिन्ताग के देशद्रोही नेता नानकिंग छोड़ कर केन्टन भाग गये। कुछ ही दिनों में नानकिंग शंघाई, व वूहान के सभी १२० शहर मुक्त हो गये। च्यांग के कार्यालय पर मजदूरों और किसानों का विजयी लाल झण्डा लहराने लगा। अब द्रुत गति से मुक्ति सेना दक्षिण की ओर बढ़ने लगी और १४ अक्टूबर को केन्टन भी आजाद हो गया। गद्दार च्यांग और उसके जनरल अमरीका के संरक्षण में फारमोसा भाग गये। आज १९५० के अन्त तक मुक्ति सेना ने फारमूसा और तिब्बत के कुछ भागों को छोड़कर समूचे चीन को मुक्त करा लिया है। हजारों बरस पुराना सामन्तवाद और नये पश्चिमी साम्राज्यवाद का गढ़ चीन मुक्ति सेना की तोपों के आगे ढह गया है। आज एक नया जनता का समृद्ध चीन उठ खड़ा हो रहा है।

गृहयुद्ध के तीन वर्षों में (जुलाई ४६ से जून १९४९) कोमिन्ताग ने ५६ लाख ९१ हजार सैनिक खोए। जिनमें से ३४ लाख ६४ हजार बन्दी बनाए गये, १५ लाख हताहत हुए और शेष स्वयं मुक्ति सेना में आकर मिल गये और इस अर्से में मुक्ति सेना ने १४ लाख ३२ हजार सैनिक गँवाए जिनमें से १२ लाख ३३ हजार हताहत हुए। जन मुक्ति सेना को इस गृहयुद्ध में च्यांग की सेनाओं में से ६० हजार तोपें, ढाईलाख मशीनगनें और २० लाख रायफलें और छोटे हथियार हाथ लगे। इसके अलावा मुक्ति सेना को ११४ हवाई जहाज, १२३ जलपोत, ५८२ टेंके, ३६१ आर्मड्कारें, करीब १५ हजार मोटरें, एक हजार रेल इंजन, ३७ करोड़ गोलियाँ और ३० लाख गोले हाथ लगे। तीन वर्षों में मुक्ति सेना चीन के एक तिहाई भूभाग और ६० प्रतिशत जनता को मुक्त करा चुकी और चीन के अधिकांश महत्वपूर्ण शहर, यातायात केन्द्र और बन्दरगाह कोमिन्ताग के पंजे से निकल गये। मुक्ति सेना की संख्या बढ़ कर ४० लाख हो गई जो १९४९ के अन्त तक ५० लाख पर पहुंच गई।

चीन में कम्युनिस्टों की विजय का कारण केवल उनकी आश्चर्यजनक सैन्य नीति और युद्ध संचालन ही नहीं थे। उनकी विजय का आधार थी उनकी नई भूमि नीति और संयुक्त मोर्चा। इन्ही दिनों में अध्यक्ष माव ने कहा था कि "यह बात पूरी पार्टी को समझ लेनी चाहिये कि खेती की व्यवस्था में सुधार करना चीनी क्रान्ति में वर्तमान युग का बुनियादी काम है। सभी दुश्मनों पर विजय प्राप्त करने की सबसे बुनियादी शर्त यही है कि हम पूरे देश में और पूरे तौर पर खेती के सवाल को हल कर डालें।

जापान विरोधी युद्ध के दिनों में कोमिन्ताग और अन्य

लोगों के साथ जापान का मुकाबला करने के लिए संयुक्तमोर्चा बनाने पर कम्युनिस्टों ने अपनी भूमि संबंधी नीति बदल दी थी। लड़ाई के पूर्व १६२७ से ३६ तक कम्युनिस्ट जमींदारों की जमीन छीन कर किसानों में बाँट देते थे। इस नीति के कारण किसान सोवियतों का साथ देते रहे। युद्ध के जमाने में इसे छोड़ कर लगान और सूद कम करने की नीति अपनाई थी। अब च्यांग के विरुद्ध आजाद इलाकों की जनता को संघर्ष में उतारने के लिए जरुरी हो गया था कि बहुत अर्से से रुके हुए भूमि सुधारों को पूरा किया जाय। मई १६४७ में कम्युनिस्ट पार्टी ने पुनः जमींदारों की जमीन छीन कर किसानों को बाँटने की आज्ञा देदी। इससे आजाद इलाके के देहातों में हजारों वर्षों से चले आ रहे जमींदारवर्ग और धनी किसानों के सामन्ती और अर्ध सामन्ती शोषण का अन्त होने लगा। गरीब और मझोले किसान अब आजाद इलाकों की रक्षा करने के पहले से अधिक कुर्बानी करने और वीरता दिखाने के लिए आगे आने लगे। लाल सेना से आगे उसके भूमि सुधारों की गूंज सुनाई देती थी और हर जगह शोषित मानवता अपने शोषणों के विरुद्ध उसको सहयोग देने लगे। च्यांग की सेना की सफाई के साथ २ चीन की जनता के एक बड़े शत्रु का अन्त होने लगा। अध्यक्ष माव ने कहा कि नई जनवादी क्रान्ति के मुख्य तीन नारे हैं- सामन्ती वर्गों की जमीन जब्त करलो और उसे किसानों को देदो। इजारेदार पूंजी को जिसमें मुख्य चार परिवारों की पूंजी है, जब्त करलो और उसे नये जनवादी राज्य के अधिकार में दे दो।

राष्ट्रीय उद्योग धन्धों और व्यापार की रक्षा करो।" प्रश्न उठता है कि अध्यक्ष माव ने एक दम सारे पूंजीवादी मिल्कियत को समाप्त करने का नारा क्यों नहीं दिया। इस प्रश्न

का उत्तर कामरेड माव के ही शब्दों में इस प्रकार है:—

" नयी जनवादी क्रान्ति का उद्देश्य केवल सामन्तवाद और इजारेदार पूंजीवाद को नष्ट करना है। वह केवल जमींदार वर्ग तथा नौकरशाही पूंजीपतिवर्ग को खत्म करेगी न कि पूरे पूंजीवाद को। निम्न पूंजीपतिवर्ग और मझौले पूंजीपतिवर्ग को वह नष्ट नहीं करेगी। चीन की आर्थिक व्यवस्था बहुत पिछड़ी हुई है। इसलिए जनवादी क्रान्ति की पूरे देश में विजय होने के बाद भी बहुत दिनों तक चीन में हमे पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था को, जिसके प्रतिनिधि निम्न पूंजीवादी वर्ग और मझौले पूंजीपतियों का वर्ग होंगे, जीवित रहने देना पड़ेगा।"

नये संयुक्त मोर्चे को मजदूरों, किसानों, सिपाहियों, विद्यार्थियों, व्यापारियों और छोटे उद्योगपतियों का विशाल मोर्चा बनाने का औचित्य अध्यक्ष माव ने इस प्रकार बताया है।

" अमरीकी साम्राज्यवाद के आक्रमण के कारण दृढ़ता के साथ जनता के हितों की रक्षा करने की हमारीपार्टी की नीति के कारण च्यांग काई शेक के इलाकों में भी आम मजदूर, अलग २ वर्गों के किसान और निम्न पूंजीपति वर्ग तथा मझौले पूंजीपतिवर्ग के लोग पार्टी से सहानुभूति रखने लगे हैं। ये लोग भूख की मार से परेशान हैं। इन पर तरह २ का राजनैतिक अत्याचार हो रहा है। च्यांग के जन विरोधी गृहयुद्ध ने उनके लिए जीवन के सभी रास्ते बन्द कर दिये है। इसलिए दिनोंदिन वे अधिक दृढ़ता से अमरीकी साम्राज्यवाद तथा च्यांग की प्रतिक्रियावादी सरकार से लड़ रहे हैं। जापान विरोधी लड़ाई के पहले, उसके दौरान में और जापानियों के आत्म समर्पण के बाद भी कुछ दिन तक जनता में इतना गहरा असंतोष और

क्रोध कभी नहीं देखा गया। इसीलिए हम कहते हैं कि हमारा नया जनवादी क्रान्तिकारी संयुक्त मोर्चा पहले के तमाम मोर्चों से अधिक विशाल और मजबूत है—

अधिक से अधिक विशाल संयुक्त मोर्चे के बिना नई जनवादी क्रान्ति की विजय असंभव है।"

नये चीन के जन्म की घोषणा

"आज ऐशिया के जागरण का, यह विजयी अभियान हो रहा
आज नानकिंग की धरती पर, मनुज मुक्ति का दान हो रहा
आज न्याय के सिंहासन पर, श्रमिकों का अभिषेक हो रहा
एक रूस ही नहीं अकेला, आज रूस हर देश ही रहा"

कोमिन्तांग के दस्युओं को चीन की मुख्य भूमि के बड़े भाग से खदेड़ कर, देश की अधिकांश जनता को हजारों बरसों की कमर तोड़ गुलामी से मुक्त कर चीन को एक करती हुई, उसे सच्चे जनवाद की ओर ले जाने के लिए जन राजनैतिक सलाहकार सम्मेलन बुलाया गया। इसका उद्घाटन २१ नवम्बर १९४९ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के अध्यक्ष माओत्से तुंग ने किया। इस सम्मेलन में चीन की ४५ संस्थाओं, (जिनमें सभी राजनैतिक दल, मुक्ति सेना और जन संगठन शामिल थे) के ६०० से ऊपर प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन ने चीनी जनतन्त्र की स्थापना की घोषणा की और एक मत से राजनैतिक सलाहकार कौंसिल और केन्द्रीय सरकार का चुनाव किया और एक सामान्य कार्यक्रम स्वीकार किया जो वर्तमान चीन

की आन्तरिक और बाह्य नीतियों की आधार शिला है।

अध्यक्ष माव नई सरकार के अध्यक्ष मादम सुनयात सेन उपाध्यक्षा, चाऊऐन लाई प्रधान और विदेश मंत्री व जनरल जू देह सर्व सम्मिति से सर्वोच्च सेनापति चुने गये।

इस सम्मेलन ने निम्न घोषणा की—

देश के समस्त नागरिकों!

चीन की जनता के राजनैतिक सलाहकार सम्मेलन ने अपना काम सफलता पूर्ण समाप्त कर लिया है। इस सम्मेलन में देश की सभी नैतिक पार्टियों और दलों, जनसंगठनों, जनमुक्ति सेना, राष्ट्रीय अल्प संख्यकों, प्रवासी चीन वासियों और समस्त देश-भक्त तत्वों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया है। यह समस्त देश की जनता की भावना का प्रतिनिधित्व करता है और उसकी अभूत-पूर्व एकता व्यक्त करता है। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में चीनी जनता और जनमुक्ति सेना के द्वारा अमरीकी साम्राज्य वादियों की मदद पर टिकी हुई प्रतिक्रियावादी कोमिन्ताग की च्यांग काई शेक सरकार की सेनाओं को पराजित करने के लम्बे संघर्ष के दौरान में यह एकता स्थापित हुई है।

चीनी जनता ने अपने प्रमुख नेताओं के नेतृत्व में, जिनमें १९११ की क्रान्ति का नेतृत्व करने वाले महान लोक नेता डॉ० सनयात सेन हैं, एक शताब्दी से ऊपर चीन को साम्राज्यवादी जुए और प्रतिक्रियावादी चीनी सरकारों को उलटने के लिए निरंतर संघर्ष किया।

उनका उद्देश्य पूरा हो गया है। अपने शत्रुओं को परास्त कर चीनी जनता ने यह सम्मेलन बुलाया है और पुराने चीन के स्वरूप को बदल कर जनता के जनतंत्र की स्थापना की है। हम ४७५० लाख लोग जाग चुके हैं और हमारे राष्ट्र का भविष्य

निश्चित रूप से उज्वल है। लोक नायक माबजेदूंग के नेतृत्व में हमारे सम्मेलन ने एक मत से प्रजातंत्र के सिद्धान्तों के अनुसार जनता की राजनैतिक सलाहकार कौंसिल, केन्द्रीय चीनी सरकार इनकी नियमावलियों और जनता की राजनैतिक सलाहकार कौंसिल के प्रोग्राम को स्वीकार किया है। यह निश्चित किया गया है कि केन्द्रीय सरकार की राजधानी पेकिंग होगी। पाँच सितारों वाला लाल झंडा जनतंत्र का राष्ट्र ध्वज होगा और निश्चय किया गया है कि संसार के अधिकांश देशों में जो केलेन्डर है वह हमारे यहाँ भी प्रयोग में आवेगा, राष्ट्रीय सलाहकार कौंसिल की एक राष्ट्रीय समिति और केन्द्रीय जनसार का चुनाव किया गया है।

चीन के इतिहास में एक नये युग का उद्घाटन हुआ है। देश के समस्त नागरिकों! चीनी जनता के जनतंत्र की घोषणा हो गई है और अब जनता की अपनी केन्द्रीय सरकार है।

यह सरकार जनता के जनवादी अधिनायकत्व को चीन देश की सीमाओं में परामर्श दात्री सम्मेलन के सामान्य कार्यक्रम के आधार पर लागू करेगी।

❀ यह सरकार जनमुक्ति सेना का इस क्रान्तिकारी युद्ध को जीतने में, शत्रु के अवशेषों को नष्ट करने और अपने देश की समस्त भूमि को मुक्त करने में नेतृत्व प्रदान करेगी और चीन एकता के महान कार्य को पूर्ण करेगी।

❀ यह सरकार कठिनाइयों का सामना करने में सारे देश की जनता का नेतृत्व करेगी। यह बड़े पैमाने पर आर्थिक और सांस्कृतिक पुनः निर्माण का कार्य करेगी। पुराने चीन से विरासत में मिली हुई गरीबी और अज्ञान को यह दूर करेगी। यह लगातार जनता के आर्थिक और सांस्कृतिक धरातल को

ऊँचा उठावेगी।

❀ यह सरकार जनता के हितों की रक्षा करेगी और प्रति क्रांतिवादियों के षड़यन्त्र पूर्ण कार्यों को कुचलेगी। यह जनता की सेना को मजबूत बनावेगी- वायु और जल सेना का निर्माण करेगी। यह चीन राष्ट्र की सार्वभौमता एवं प्रादेशिक अखंडता की रक्षा करेगी और किसी भी साम्राज्यवादी आक्रमण का मुकाबला करेगी।

❀ यह सरकार सभी शान्ति प्रिय और स्वतन्त्रता प्रिय राष्ट्रों, देशों और जातियों, सर्व प्रथम सोवियत संघ और जनता की नई लोक शाहियों का साथ देगी, इन मित्र राष्ट्रों के साथ, युद्ध भड़काने वाले साम्राज्यवादी षड़यन्त्रों के विरुद्ध, संयुक्त संघर्ष में मित्रतापूर्ण सहयोग करेगी और एक स्थायी विश्व शांति के लिए संघर्ष करेगी।

समस्त देशवासियों! हमें और भी अच्छी तरह संगठित होना है। हमें चीनी जनता के बहुसंख्यक भाग को राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और दूसरे संगठनों में संगठित करना है। हमें पुराने चीन की विशृंखलता को दूर करना है और एक स्वतन्त्र जनतान्त्रिक, संगठित, समृद्ध, शक्तिशाली, जनता के नये चीन के लिए, लोक सरकार और जनमुक्ति सेना का जनता की महान संयुक्त शक्ति द्वारा सहयोग करना है।"

जनमुक्ति संघों और जनक्रांति के प्राणों को न्यौछावर करने वाले शहीद अमर हो।

चीनी जनता की महान एकता चिरायु हो।

चीनी जनता का लोकतन्त्र जिन्दाबाद।

केन्द्रीय जन सरकार जिन्दाबाद।

नये चीन की एक रूप रेखा

"हमसे कहा जाता है तुम दयालु नहीं हो!" ठीक यही बात है। प्रतिक्रियावादियों और प्रतिक्रियावादी वर्गों की कार्यवाहियों की तरफ दयालु नीति हम निश्चयात्मक रूप से नहीं बरतते। हम सिर्फ जनता के बीच दयालु नीति बरतते हैं- उन प्रतिक्रियावादियों और प्रतिगामी वर्गों की कार्यवाहियों की तरफ नहीं जो जनता के बाहर हैं। —मावजे दुंग

चीनी जनता का लोकराज्य न तो एक समाजवादी राज्य है जिसमें कि उत्पादन के सभी साधनों पर समाज का स्वामित्व न हो न वह एक पूंजीवादी जनतन्त्र ही है। वह रूस अमरीकी और भारत के राज्यों से दूसरी किस्म का प्रजातन्त्र है। जिसे जनता का लोक राज्य कहते हैं। यह समाजवाद और पूंजीवाद के बीच की एक मंजिल है। प्रश्न स्वभाविक है कि चीन में विजय प्राप्त करने पर कम्युनिस्टों ने वहाँ सर्वहारा का अधिनायकत्व क्यों स्थापित नहीं किया ? उन्होंने स्वयं इस बीच की मजिल को क्यों स्वीकार किया ? इसकी वजह यह है कि चीन की क्रांति अपने विकास के क्रम में पूंजीवादी जनतान्त्रिक क्रांति है

लेकिन वह सर्वहारा क्रांति के युग में हो रही है और उसका नेतृत्व मजदूर वर्ग कर रहा है। "यह बात साफ है कि अगर चीन के मौजूदा समाज का रूप औपनिवेशिक अर्ध औपनिवेशिक और अर्ध सामन्ती है तो चीनी क्रांति को दो कदमों में बाँटना चाहिये। पहला कदम है समाज के औपनिवेशिक अर्ध औपनिवेशिक और अर्ध सामन्ती रूप को बदल कर एक स्वाधीन जनवादी समाज बनाना और दूसरा कदम है क्रांति को आगे बढ़ाकर समाजवादी समाज कायम करना। इस समय हम जो कर रहे हैं वह चीनी क्रांति का पहला कदम है।"(नई लोकशाही)

लेकिन यह क्रांति एक स्थाई हल नहीं है– नई लोकशाही एक विशेष ऐतिहासिक दौर के लिए राष्ट्रीय राजतन्त्र है और इसलिए उसका रूप संक्रमणकालीन है। यह पूंजीपति वर्ग द्वारा शासित राज्य न होकर अनेक क्रांतिकारी वर्गों के मोर्चे का शासन है। इस मंजिल को पार करने पर इस क्रांति को समाजवादी समाज की स्थापना के लिए विकसित किया जायगा। रूस में बोल्शेविक क्रांति होने के कारण चीन की यह पूंजीवादी जनतान्त्रिक क्रांति पूंजीवादी विकास का भाग न रह कर समाजवादी विश्व-क्रांति का अंग बन चुकी है।

चीन की नई लोकशाही 'जनता का जनवादी अधिनायकत्व है।' यह जनता कौन है! आज के युग में यह जनता है चीन का मजदूर वर्ग, किसान वर्ग, निम्न पूंजीपति और राष्ट्रीय पूंजपतिवर्ग और मजदूर वर्ग के नेतृत्व मे इनका अधिनायकत्व है साम्राज्यशाही के टुक्कडखोरों, सामन्तीवर्ग, नोकरशाही, पूंजिपतिवर्ग और इन वर्गों के प्रतिनिधियों पर—"उन्हे दबाने के लिए, उन्हे सिर्फ सही ढंग से पेश आने देने के लिए, जंगली तरीके की बातें और कार्यवाहियाँ करनेकी इजाजत देने के लिए नहीं। अगर वे जंगली

तरीके की बातें और कार्यवाहियाँ करेंगे तो उन पर रोक लगाई जायगी और उन्हे फौरन सजा दी जायगी। वोट देने का अधिकार सिर्फ जनता को दिया जायगा, प्रतिक्रियावादियों को नहीं। ये दो पहलू हैं, यानी जनता के बीच जनवाद और प्रतिक्रियावादियों के उपर अधिनायकत्व। इन दोनों का संयुक्त रूप जनता का जनवादी अधिनायकत्व है।" प्रश्न उठता है कि जब कम्युनिस्टों ने चीन में प्रतिक्रियावादियों के सशस्त्र प्रतिरोध को कुचल दिया है तब अधिनायकत्व की आवश्यकता क्या है ?

प्रतिक्रियावादियों के सशस्त्र प्रतिरोध को कुचलना एक बात है और उनका मूलोच्छेदन दूसरी। पहला काम पूरा हो चुका है लेकिन यदि जनता के अधिनायकत्व में उन्हे जड़मूल से नष्ट नहीं किया तो वे पुनः सर उठाने की चेष्टा करेंगे और विदेशी साम्राज्यवादियों की मदद से अपने देश की जनता का अहित करेंगे। "साफ है कि अगर यह नहीं किया जाय तो क्रान्ति असफल जायगी, जनता मुसीबतों का शिकार बनेगी और राज्य धूल में मिल जायगा।"

'चीन में जनता के जनवादी अधिनायकत्व' नामक लेख में अध्यक्ष माव ने स्पष्ट में बताया है। कि हमारी वर्तमान नीति चीन में पूंजीवाद को संकुचित करने की है मगर उसे मिटाने की नहीं। मौजूदा दौर में राष्ट्रीय पूंजीपतिवर्ग का अत्यन्त महत्व है। साम्राज्यवाद अभी भी हमारे दरवाजे पर खड़ा है और वह एक बर्बर शत्रु है। चीन को सच्ची आर्थिक आजादी हासिल करने में अभी भी काफी समय की जरूरत होगी। सच्ची और पूरी आजादी सिर्फ तभी हासिल होगी जब देश का उद्योग विकसित होगा और चीन विदेशी ताकतों पर आर्थिक रूप से निर्भर नहीं रहेगा। साम्राज्यवादियों के दबाव को खत्म करने के लिए

और पिछड़ी हुई आर्थिक व्यवस्था को एक कदम आगे बढ़ाने के लिए चीन को ऐसे शहरी और देहाती पूंजीवादी धन्धे का इस्तेमाल करना चाहिये। जो राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था के लिए फायदेमन्द हो सके और जो जनता के रहन सहन के स्टेन्डर्ड के लिए हानिकारक न हो। चीन को सयुक्त राष्ट्रीय संघर्ष में पूंजीपतिवर्ग को अपने साथ लेना चाहिये।"

चीन में जनता के अधिनायक को अमली रूप देने के लिए सभी दलों की राजनैतिक परामर्शदात्री समिति ने सर्व सम्मिति से एक सामान्य कार्यक्रम स्वीकार किया है जो अब अमल में लाया जा रहा है। यह कार्यक्रम ७ भागों में बाँटा गया है। और इसमें ६० धाराएं हैं। पहले भाग में इन आम सिद्धान्तों की व्याख्या की गई है जो नये जनता के अधिनायकत्व के आधार हैं और जिनका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। इसमें साफ किया गया है कि हमारा मुख्य काम है—चीन में साम्राज्यवाद के विशेषधिकारों का अन्त करना, नौकरशाही पूंजी को जब्त करना और उसे राज्य की सम्पति में बदलना, खेतीहर सुधारों को पूरा कर देश को एक खेतीहर राष्ट्र से औद्योगिक राष्ट्र में बदलना। साथ ही विश्वशान्ति और साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध सभी आज़ादी पसन्द राष्ट्रों के साथ सहयोग और विशेष कर सोवियत रूस के साथ मित्रता का ऐलान किया गया है।

सोवियत रूस की सरकार ने ही नये जनवादी चीन को सब से पहले मान्यता दी है और उसके प्रश्न को अन्तरराष्ट्रीय परिषदों में उठाया है। सोवियत सरकार ने नये चीन के साथ मित्रता की जो सन्धि की है वह विश्व इतिहास में राष्ट्रों की आपसी मित्रता का एक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। साथ ही रूस

ने चीन के पुनः निर्माण और उद्योगीकरण के लिए सहायता देने की सन्धि कर नये चीन के निर्माण में अभूतपूर्व और आदर्श उदाहरण पेश किया है।

दूसरे अध्याय में राज्य के संगठन की व्याख्या है जिसमें बताया गया है कि समूचे चीन की जनता द्वारा चुनी गई कांग्रेस बुलाई जायगी और वह राज्य के सभी पदों का चुनाव करेगी। सभी कोमिन्तांग द्वारा बनाए गये कानूनों को समाप्त करने का भी साथ ही ऐलान किया गया है और जनवादी न्याय-संगठन बनाने की घोषणा भी।

तीसरे अध्याय में सैनिक संगठन के रूप की व्याख्या और नई वायु और जल सेना बनाने का निर्णय है। इसमें सेना द्वारा शान्ति काल में उद्योग और खेती के कामों को करने का भी उल्लेख है। चौथे आर्थिक नीति और राज्य द्वारा संचालित उद्योगों को चलाने की नीति निर्धारित की गई है। पाँचवे में नई सांस्कृतिक और शिक्षा नीति है। ६ ठी मे राष्ट्रीय इकाइयों के प्रति जनवादी नीति है। सातवें अध्याय में विदेश नीति की घोषणा करते हुए न केवल अपनी स्वतन्त्रता और सार्वभौमता की रक्षा करने का निश्चय किया गया है बल्कि युद्ध और साम्राज्यवाद के विरोध करने का खुला ऐलान है।

नये जनवादी चीन ने मजदूरों के हितों की रक्षा के कानून, स्त्रियों की समानता और सुरक्षा, बच्चों की हिफाजत और खेतीहर सुधारों के नये नियमों को बना कर उन पर अमल करना प्रारंभ कर दिया है।

हमारे पड़ोस में सुखी और समृद्ध चीन का निर्माण हो रहा है। ५० करोड़ इन्सान नये जीवन-नई संस्कृति और सभ्यता के निर्माण में लग रहे हैं और साथ ही कोरिया और वियतनाम में

आक्रान्ता पश्चिमी साम्राज्यवाद और उसके बगल बच्चों का मुकाबले करने के लिए चीनी जनता ऐशिया के दूसरे सपूतों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर अपने खून से नये भाई चारे का निर्माण कर रही है। कोमिन्ताग शासन में चीन सदा २० लाख टन अनाज आयात करता रहा। आज नई भूमि व्यवस्था में चीन ने न केवल सदा बने रहने वाले अपने दुष्कालों को ही समाप्त कर दिया है बल्कि आज वह हमारे देश के भूखे लोगों को चावल देने जा रहा है।

—इति—